
₹ 20
हिन्दी साहित्य की मासिक पत्रिका
क्रान्ति
अक्तूबर 2013

بسم الله الرحمن الرحيم

''नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।''

(क़ुरआन)

A WELL WISHER
GOA

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 4 अक्तूबर 2013

और लोगों को हज के लिए सामान्य रूप से घोषणा कर दो कि वे तुम्हारे पास हर दूरवर्ती स्थान से पैदल और ऊंटों पर सवार आएं, ताकि वे लाभ देखें जो यहां उनके लिए रखे गये हैं । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

नअत

मेरे मौला यह तेरा ही करम है, मेहरबानी है
कि आलम में तेरे महबूब की जलवा फ़शानी है

अहादीसे नबी में क्या अजब मुअजिज़ बयानी है
फ़साहत है, बलाग़त है, सलासत है रवानी है

देहन से फूल झड़ते हैं तकल्लुम जब भी फ़रमाएं
मेरे आक़ा से बेहतर और किसकी ख़ुशबयानी है

तदब्बुर की ज़रूरत है कलामे शाह ख़ूबां में
कि एक-एक लफ़्ज़ में आबाद दुनिया-ए-मआनी है

जहां में हर तरफ़ है बस उन्हीं की जलवा आराई
जिधर देखो जमाले मुस्तफ़ा की जौ फ़शानी है

ज़माने भर के सब प्यासे यहीं सैराब होते हैं
यह बहरे रहमतुल्लिल आलमीं की बेकरानी है

हयाते पाक हर पहलू से है तफ़्सीर क़ुरआं की
कलामे मुस्तफ़ा क्या है ख़ुदा की तर्जुमानी है

तुम्हारे सामने हो आईना बस उनकी सीरत का
इसी में कामयाबी है, इसी में कामरानी है

शहे अबरार का अदना सनाख़ां मैं भी हूं 'साइर'
यही पहचान है मेरी यही मेरी निशानी है ।

हसनैन 'साइर'

डी-318, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,

जामिया नगर, नयी दिल्ली-25



कहां क्या है ?

नअत	–हसनैन 'साइर'	3
कुरआन ज्योति		5
अल्लाह का ज़िक्र (हदीस मंजरी)		6
अल्लाह के प्रति सच्ची निष्ठा... (संपादकीय)		7
एक-दूसरे का सम्मान करें (आपके पत्र)		9
दुनिया के महानतम व्यक्तित्व हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) (जीवन आदर्श)	–प्रो॰ मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद	13
सेदोकाएं	–डॉ॰ रामनिवास 'मानव'	25
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और इदुल अज़हा (विशेष आयोजन)	–मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	26
कुरबानी पर आपत्ति क्यों ?	–अबू अहमद नूर इलाही	31
जीव-हत्या ?	–मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	33
इस्लाम ही मौलिक धर्म (आस्था)	–मालिक राम	35
राशियों का मकड़जाल (शोध)	–डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात	39
इस्लामी बैंकिंग पर आर॰बी॰आई॰ का सराहनीय क़दम (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	42
पर्यावरण सुरक्षा और इस्लामी शिक्षाएं (ज्वलंत सामयिक)	–इंजीनियर मुहम्मद सलीम	45
इस्लाम में नारी (अभिमत)		47
शिकारी पेड़-पौधे (बालवीथी)		49
सितारों की बातें		50

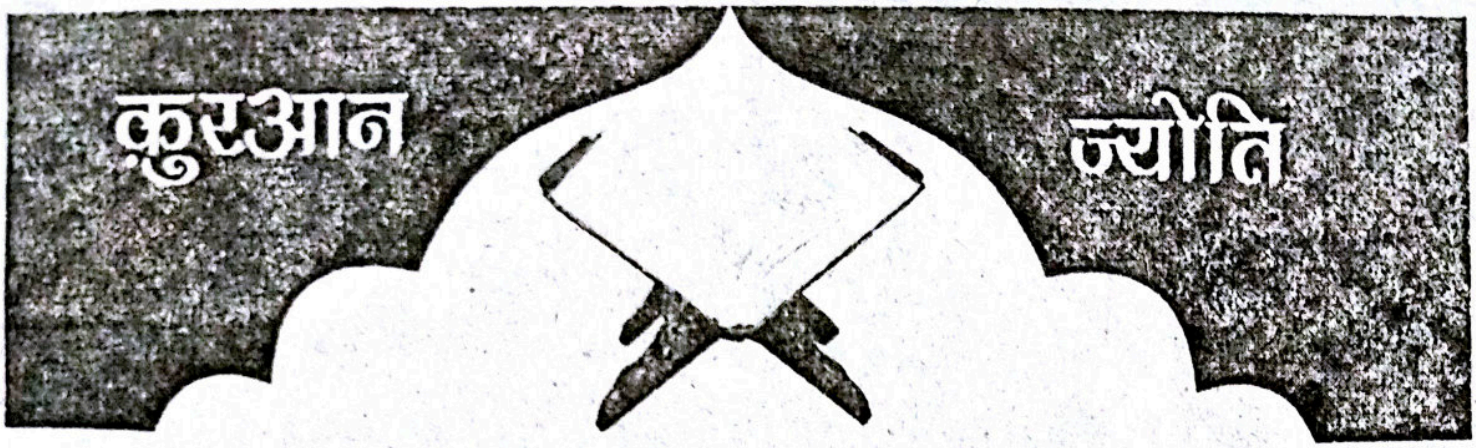

(37) नसी तो कुफ़्र (अधर्म) में एक और कुफ़्र भरी हरकत है जिससे ये काफ़िर लोग गुमराही में डाले जाते हैं । किसी साल एक महीने को हलाल कर लेते हैं और किसी साल उसको हराम कर देते हैं, ताकि अल्लाह के हराम किये हुए महीनों की संख्या पूरी भी कर दें और अल्लाह का हराम किया हुआ हलाल भी कर लें ।[37] उनके बुरे कर्म उनके लिए शोभामान बना दिये गये हैं, और अल्लाह सत्य के इंकारियों को रास्ता नहीं दिखाया करता ।

(38) ऐ लोगो[38] जो ईमान लाए हो ! तुम्हें क्या हो गया कि जब तुमसे अल्लाह की राह में निकलने के लिए कहा गया तो तुम धरती से चिमटकर रह गये ? क्या तुमने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया ?

–क़ुरआन, 9 : 37,38

---

37. अरब में नसी (महीने को हटाने की प्रथा) दो प्रकार की थी । एक प्रकार की नसी तो यह थी कि लड़ाई-झगड़े, लूट-पाट करने और ख़ून का बदला लेने के लिए किसी हराम महीने को हलाल क़रार दे लेते थे और इसके बदले में किसी हलाल महीने को हराम करके हराम महीनों की संख्या पूरी कर देते थे । दूसरे प्रकार की नसी यह थी कि चांद के साल को सूरज के साल के अनुसार ढालने के लिए उसमें कबीसा (लौंद) का एक महीना बढ़ा देते थे, ताकि हज हमेशा एक ही मौसम में आता रहे और वे उन परेशानियों से बच जाएं जो चांद के हिसाब के अनुसार अलग-अलग मौसमों में हज के घूमते रहने से झेलनी पड़ती है । इस तरह 33 वर्ष तक हज अपने अस्ल समय के विपरीत दूसरी तिथियों में होता रहता था और केवल चौंतीसवें वर्ष एक बार अस्ल ज़िलहिज्जा की 9-10 तारीख़ को अदा होता था । यही वह बात है जो (अंतिम हज) हिज्जतुल विदाअ के अवसर पर नबी (सल्ल०) ने अपने वक्तव्य में फ़रमायी थी कि 'इस साल हज का समय गर्दिश करता हुआ ठीक अपनी उस तारीख़ पर आ गया है जो प्राकृतिक रूप से उसकी अस्ल तारीख़ है ।' इस आयत में नसी को हराम और वर्जित करके अरब के अज्ञानियों के उन दोनों उद्देश्यों को ग़लत बता दिया गया है । पहला उद्देश्य तो स्पष्ट है कि खुले तौर पर एक गुनाह था । इसका तो मतलब ही यह था कि अल्लाह के हराम किये हुए को हलाल भी कर लिया जाए और फिर बहानेबाज़ी करके और क़ानून की प्रत्यक्ष रूप में पाबन्दी करके उसकी पूर्ति भी कर ली जाए । रहा दूसरा उद्देश्य तो विहंगम दृष्टि डालने पर वह निर्दोष और स्वार्थ की पूर्ति करने वाला दिखायी देता है, लेकिन वास्तव में वह भी अल्लाह के क़ानून के प्रति घोर विद्रोह था । अल्लाह तआला ने अपने बताये कर्तव्यों के

(शेष पृष्ठ 44 पर)

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com



अल्लाह का ज़िक्र

● हज़रत अबू मूसा अल-अशअरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो अपने रब को याद करता है और जो उसे याद नहीं करता उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कि एक जीवित है और एक मृत ।

–बुख़ारी

और मुस्लिम ने इसको इस प्रकार रिवायत किया है कि आपने कहा : "जिस घर में अल्लाह को याद किया ज़ाता है और जिस घर में अल्लाह को याद नहीं किया जाता उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कि एक जीवित है और एक मृत ।"

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "अल्लाह तआला कहता है : मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूं और जब वह मुझे याद करता है, तो मैं उसके पास होता हूं । यदि वह मुझे अपने दिल में याद करता है, तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूं । और यदि वह मुझे किसी जनसमूह में याद करता है, तो मैं एक ऐसे समूह में उसकी चर्चा करता हूं जो उस बन्दे के समूह से कहीं अच्छा है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "उत्तम स्मरण है : 'ला इलाह इल्लल्लाह' (अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं)।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र (रज़ि॰) से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), इस्लाम के धार्मिक आदेश मेरे लिए बहुत अधिक हैं, तो आप मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइए ? जिसे मैं मज़बूती से पकड़ लूं । आपने कहा : "तुम्हारी ज़ुबान अल्लाह के स्मरण से भीगी रहे ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

● हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "मैं अपने 'मेअराज' (आसमानी यात्रा) के सफ़र में हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) से मिला, तो उन्होंने कहा : ऐ मुहम्मद (सल्ल॰) मेरी तरफ़ से समुदाय को सलाम कहना और उन्हें यह बताना कि जन्नत की मिट्टी बहुत पाक है और उसका पानी बहुत मीठा है और वह एक विस्तृत मैदान है और उसके वृक्ष और पौधे हैं : सुबहानल्लाह, वलहम्दुलिल्लाह, व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर ।' (महान है अल्लाह, और प्रशंसा अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, और अल्लाह सबसे बड़ा है ।)"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

● हज़रत अबू दरदा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "क्या मैं तुम्हारे कर्मों में तुम्हें ऐसे कर्म न बताऊं ? जो सबसे अच्छा और तुम्हारे मालिक की दृष्टि में सबसे निखरा हुआ है और तुम्हारे दर्जों को बहुत ऊंचा करने वाला है ? और तुम्हारे लिए (अल्लाह के मार्ग में) सोना और चांदी ख़र्च करने से बेहतर है और तुम्हारे लिए इससे भी बेहतर है कि तुम्हारे अपने शत्रु से मुठभेड़ हो और तुम उनकी गर्दनें मारो और वे तुम्हारी गर्दनें मारें ? सहाबा ने कहा : क्यों नहीं ज़रूर बताएं ? आपने कहा : "अल्लाह तआला को याद करो ।"

–तिरमिज़ी । अबू अब्दुल्लाह ने कहा है कि इसकी सनदें सहीह हैं।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

अल्लाह के प्रति सच्ची निष्ठा और प्रेम का प्रदर्शन है हज

इस्लाम विशुद्ध एकेश्वरवादी धर्म है । वह मानव स्वभाव के एकदम अनुकूल है । अत: इस्लाम में अल्लाह को मानने और उस पर ईमान लाने का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि अल्लाह नियंता और कार्यसाधक है, बल्कि इस विश्वास में अल्लाह की सत्ता और उसके गुणों की उचित और पूर्ण धारणा पायी जाती है । यह विश्वास हमें अल्लाह की सत्ता और उसके गुणों की जो कल्पना देता है उसका हमारे जीवन से गहरा संबंध है । यही कारण है कि इस्लाम अल्लाह में विश्वास द्वारा केवल यही नहीं कि आत्मा की शुद्धि, विकास ईशभक्ति और नैतिक सुधार का काम लेता है, बल्कि इसी को उसने जीवन के समस्त क्रियाकलाप और मानव सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला माना है । इस्लाम अल्लाह और बन्दे के बीच किसी मध्यस्थ और एजेंसी का क़ायल नहीं । वह किसी ऐसी अनुभूत और भौतिक चीज़ को रद्द करता है, जिसको मनुष्य अपने सोच-विचार में पूज्य की तरह बसा कर अपना सारा ध्यान, साहस और शक्ति उस पर केन्द्रित कर दे और उसके दामन से चिमट जाए । इस्लाम में न तो मध्यस्थ की गुंजाइश है, न दिखावों की, न तस्वीरों, न मूर्तियों की और न यहां पादरी एवं पुरोहित के क़िस्म का कोई वर्ग पाया जाता है, न काहिनों (ज्योतिषियों जैसे कर्म करने वालों) और मुजाविरों की कोई जमाअत । अल्लाह तआला का स्पष्ट कथन है : "और जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुम से पूछें, तो मैं निकट हूं । मैं पुकारने वाले की पुकार का जब वह मुझे पुकारता है, उत्तर देता हूं । तो उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार का भी उत्तर दें, मुझ पर ईमान रखें, ताकि वे मार्ग पर रहें (कुरआन, 2:186)।"

इसके अतिरिक्त इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो विचार की पवित्रता, सोच की बुलंदी, नीयत और संकल्प की सुथराई, अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को पूज्य बनाने से सख़्ती से रोक, कर्म में निष्ठा के मानदंडों की उस पराकाष्ठा पर है, जिससे उत्तम मानदंड अकल्पनीय है । यह भी सच है कि एक ऐसी चीज़ की उत्कंठा और आरज़ू प्रत्येक प्राणी के स्वभाव में दाख़िल हैं, जिसको वह अपनी भौतिक आंखों से देख सके । उसके द्वारा अपने आकांक्षा-भाव को संतुष्टि प्रदान कर सके और सानिध्य व आदर-भाव की उस तीव्र अपेक्षा की पूर्ति कर सके जो सदैव से उसकी प्रकृति में मौजूद है । इसके लिए अल्लाह ने कुछ ऐसी प्रत्यक्ष और अनुभूत चीज़ें नियत की है जो उसकी सत्ता के साथ कुछ विशेषताएं रखती हैं, उसी की ओर जोड़ी जाती है, उसी की कहलायी जाती है और उन पर उसकी इतनी रहमत है कि उनको देखकर अल्लाह का स्मरण बढ़ जाता है । इसके अतिरिक्त उनके साथ बहुत-सी ऐसी घटनाएं, मामले, कर्म और हवाले जुड़े हैं, जो मानव को अल्लाह तआला की निशानियां, उसके इनाम, उसके एकेश्वरवादी धर्म, उसके रसूलों की

कोशिशों और उनके धैर्य को याद दिलाती है । इन चीज़ों का नाम उसने ''शआइर अल्लाह'' रखा । इनके प्रति आदर-प्रदर्शन को अपने प्रति आदर-प्रदर्शन ठहराया एवं इनमें कोताही को अपने हक़ में कोताही के समान बताया तथा मनुष्यों को इस बात की अनुमति बल्कि दावत दी कि उसके द्वारा वे अपनी छिपी हुई प्रेम-भावना और अत्यान्तिक लगाव के प्राकृतिक भाव को संतुष्टि प्रदान करें और अपने लिए शांति एवं सुकून का सामान करें । कुरआन में है : ''यह बात हो चुकी है, और जो कोई अल्लाह की (भक्ति से संबंधित) निशानियों का आदर करे, तो यह दिलों के तक़वा (धर्मपरायणता) की बात है (22:32)।'' एक और स्थान पर है : ''यह बात हो चुकी, और जो कोई अल्लाह की (निश्चित की हुई) मर्यादाओं का आदर करेगा, तो यह उसके रब के यहां उसी के लिए अच्छा होगा (22:30)।'' इमाम ग़ज़ाली (रह०) के अनुसार, अल्लाह के प्रति आदर और प्रेम-भाव एक विवेकी और अच्छे शील-स्वभाव वाले मनुष्य की वास्तविक आवश्यकता है । वह इसकी पूर्ति के लिए सदैव उत्सुक रहता है । अल्लाह के घर (काबा) और उसके साथ अल्लाह की जितनी निशानियां एवं हज की इबादतें व मक़ामात हैं, वे उसकी इस सच्ची और वास्तविक आवश्यकता को भली-भांति पूरा कर सकते हैं एवं उनसे उसको पूरी संतुष्टि और तसल्ली हासिल हो सकती है । अल्लाह तआला का कथन है : ''और (वह समय याद करो) जब हमने इबराहीम के लिए इस घर (काबा) की जगह ठहरायी, (यह कहते हुए) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करो, और मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों एवं (इबादत में) खड़े होने वालों, झुकने तथा सजदा करने वालों के लिए पाक-साफ़ रखो (22:26)।''

अल्लाह के घर को ईमान और इख़लास (सच्ची निष्ठा और प्रेम) की उन बुनियादों पर क़ायम किया गया, जिसकी मिसाल संसार में और कहीं नहीं मिलती । सर्वशक्तिमान् अल्लाह ने इसको सर्वथा भलाई, बरकत और सारे संसार के मार्गदर्शन का उद्गम बनाया है । इसको पसन्द फ़रमाया, इसे अपनी रहमत से नवाज़ा, इसकी नित्यता का निर्णय किया, इसको सौन्दर्य और जलाल का परिधान प्रदान किया और दिलों को इसकी ओर आकृष्ट किया । यह घर हर क़िस्म के ज़ाहिरी हुस्न और कृत्रिम शोभा से ख़ाली है और एक ऐसे नगर में स्थित है जो सभ्यता एवं संस्कृति के हंगामों और ज़िन्दगी के पुरशोर धारे से बहुत दूर है, लेकिन फिर भी इसमें वह आकर्षण पाया जाता है कि लोग इसकी ओर खिंच-खिंचकर श्रद्धा-मुग्ध भाव से पहुंचते हैं एवं इसकी एक झलक देखने के लिए बेताब रखते हैं । हज एक पहलू से सबसे बड़ी इबादत है । अल्लाह के प्रेम में मनुष्य अपना कारोबार और अपने परिवार-मित्रों आदि को छोड़कर लंबी यात्रा पर निकलता है । फिर उसकी यह मात्रा साधारण यात्रा की तरह नहीं होती । इस यात्रा में वह अल्लाह की ओर ध्यान देता है । जैसे-जैसे अल्लाह का घर निकट आता जाता है उत्सुकता और प्रेम की अग्नि और अधिक भड़कती जाती है । वह अपने गुनाहों पर लज्जित होता है । सच्चे दिल से तौबा करता और अल्लाह से प्रार्थनाएं करता है कि उसे अच्छे कर्म करने का सौभाग्य प्राप्त हो । ''इहराम'' बांधने के बाद उसकी ज़ुबान से ये शब्द निकलते हैं : ''हाज़िर हूं, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी सेवा में हाज़िर हूं, हाज़िर हूं तेरा कोई सहभागी नहीं । मैं तेरी सेवा में हाज़िर हूं । निश्चय ही प्रशंसा तेरे ही लिए है । सारी कृपाएं और उपकार तेरे ही हैं, राज्य तेरा ही है, तेरा कोई सहभागी नहीं है ।''

एक दूसरे का सम्मान करें

'कान्ति' का जून 13 का अंक पढ़ा । पत्रिका में बहुत अच्छे लेख छपते हैं मैं बड़े प्रेम से पढ़ता हूं । इस अंक में 'वंदे मातरम् क्यों ? भी पढ़ा, बहुत अच्छा लगा, परन्तु जहां तक मानने या न मानने की बात है वह तो अपना-अपना नज़रिया होता है । गिलास आधा भरा है या गिलास आधा ख़ाली है । दोनों बातें ही सच हैं । बस नज़रिया की बात है ।

यदि हम यह कहते हैं कि ज़र्रे-ज़र्रे में वह ख़ुदा होता है तो क्या संपूर्ण भारत की धरती में ख़ुदा नहीं है ? जब हम अपनी जन्म देने वाली मां को पूज्य मानते हैं तो जिस धरती पर हम जन्में और जो धरती हमारा पालन-पोषण कर रही है यदि हम उसे अपनी जन्म दायी मां के समान मान कर उसकी सम्मान देते हैं तो उसमें क्या हर्ज है, बस सोच व नज़रिये की बात है ।

हम रोज़ाना 'नमस्ते' व 'नमस्कार' शब्दों का ख़ूब प्रयोग करते हैं । इन शब्दों के बारे में मैं जो कहता हूं कुछ लोग मेरी बात को मानते हैं और कुछ नहीं मानते । अपना-अपना नज़रिया है । मेरे अनुसार 'नमस्ते' में दो शब्द होते हैं–नम+स्ते= नम का अर्थ मैं 'नमन' करना मानता हूं और स्ते का अर्थ 'सत्य' मानता हूं । जब हम किसी को 'नमस्ते' कहते हैं तो उसका अर्थ होता है–सत्य को नमन । अर्थात जो सत्य (परमात्मा, ख़ुदा, आत्मा) जो कहो मैं सत्य को 'नमन' करता हूं, उसके सम्मुख झुकता हूं । उसका सम्मान करता हूं ।

इसी प्रकार 'नमस्कार' को (नम+स्कार) में रखें तो उसका अर्थ (''नमन''+आकार सहित) होता है ।

इसी प्रकार सरदार लोग ''सत श्री अकाल'' बोलते हैं । सत का अर्थ=सत्य (परमात्मा) श्री (पूजनीय) अकाल= जिसकी कभी भी मृत्यु नहीं होती है मैं उस परमात्मा को जो सत्य है जो कभी नहीं मरता है मैं उसका सम्मान करता हूं । उत्तर में वह/दूसरा भी यही कहता है । शायद 'आदाब' का अर्थ दूसरे का सम्मान होगा ।

रामेश्वर दयाल गोयल

1130, सदर, करनाल (हरियाणा)

विचारपरक रचनाएं

'कान्ति' का जुलाई अंक मिला । सभी रचनाएं जीवंत व सोचने विचारने वाली हैं । जीवन से जुड़े हर पहलू का समावेश इस एक पत्रिका में देखी जा सकती है । चाहे वो स्वास्थ्य चर्चा हो, बालवीथी हो या अन्य पहलू । सबसे अच्छा लगा विचारार्थ के तहत डॉ॰ अम्बेडकर का विचार पढ़ना । भारतीय नारी सच पूछे तो आज ख़ुद की धरती भारत में ही औचित्यविहीन हो गयी है । स्त्रियों की चाहे वो किसी एज ग्रुप की हो, हर दिन जो पीड़ा सहनी पड़ रही है वो अयंत्रित कर देने वाली है । पूरे विश्व को हम अपना कैसा चेहरा दिखा रहे हैं ? हमारे नेताओं ने हमें कहीं का न छोड़ा । न वे ख़ुद सुधरते न क़ानून व्यवस्था ठीक हो रही है । डॉ॰ अम्बेडकर का सपना धूल-धूसरित हो गया । काश ! हम अपने देश से बुराइयों को समाप्त कर पाते ।

माला वर्मा

हाजीनगर, 24 परगना उत्तर (प॰बं॰)

यौन शिक्षा बनाम आध्यात्मिक शिक्षा

'कान्ति' का अगस्त 2013 का अंक प्राप्त हुआ । इसमें एक लेख में आध्यात्मिक शिक्षा दिये जाने की आवश्यकता बतायी गयी है, जो बिल्कुल ठीक है ।

कुछ विकसित देशों में स्कूली बच्चों को यौन शिक्षा दी जा रही है, जिसके बुरे परिणाम सामने आ रहे हैं । यौन शिक्षा के कारण उन्मुक्त सेक्स की प्रकृति बढ़ती जा रही है, जिससे एड्स जैसे रोग ने महामारी का रूप ले लिया है ।

भारत में भी इन देशों की नक़ल की जा रही है । इससे युवक-युवतियां बिना शादी के साथ रहने लगे हैं, जिससे युवतियां गर्भवती हो जाती हैं और उनका अबॉर्शन करवाना पड़ता है । उन्मुक्त सेक्स की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण विवाह जैसी पवित्र संस्था का तो अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ता जा रहा है । अवैध संबंध स्थापित करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है ।

बच्चों को यौन शिक्षा की नहीं बल्कि आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता है । चूंकि मनुष्य में सही-ग़लत तथा

उचित-अनुचित का निर्णय करने की क्षमता ईश्वर द्वारा दी गयी है । अत: बालकों को आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए तो उनके मस्तिष्क में ईश्वरीय दिव्य प्रवृत्ति पैदा होती है । आध्यात्मिक शिक्षा मनुष्य को संयम से रहना सिखाती है । आध्यात्मिक शिक्षा से लैस युवक-युवतियां उन्मुक्त सेक्स से बचे रहते हैं ।

आध्यात्मिक शिक्षा से विवाह का महत्व भी समझ में आता है । अत: आध्यात्मिक शिक्षा को प्राप्त करके युवक-युवतियां विवाह जैसे पवित्र बंधन में बंधने को अपना सौभाग्य समझते हैं । साथ ही परस्त्री व परपुरुष गमन पर रोक लगती है । अत: बालकों को आध्यात्मिक शिक्षा देने की आवश्यकता है, न कि यौन शिक्षा ।

अबरार अहमद
(लाखेरी वाले)
कोटा जंक्शन (राजस्थान)

अच्छी सामग्री

'कान्ति' मासिक पत्रिका का अप्रैल 2013 अंक पढ़ने को मिला । इस अंक में 'कुरआन ज्योति' नामक स्तंभ बहुत ही ज्ञानवर्द्धक है । इस्लाम में जनसेवा के महत्व पर महत्वपूर्ण लेख पढ़ने को मिला, जो बहुत विचारणीय है । महिला सुरक्षा पर आपके संपादकीय में बहुत अच्छा विचार व्यक्त किया गया है । पूरा ही अंक पठनीय एवं संग्रहणीय है । ऐसी पत्रिका के संपादन के लिए धन्यवाद !

अभिजीत राणे
समूह संपादक, दैनिक 'मुंबई मित्र',
दैनिक 'वृत्त मित्र'
गोरेगांव (पश्चिम), मुम्बई-62

नूतन जानकारियां

'कान्ति' से ही मुझे इस्लाम के संबंध में अनेक नूतन जानकारियां मिलती रहती हैं । यहां तक कि हिन्दू धर्म, अन्य धर्मों तथा सामाजिक बुराइयों एवं उनके निराकरण की बातें भी, आप अधिकारी विद्वानों से लेख लिखवा कर, समाज को उचित मार्गदर्शन कर देते हैं । आभार !

अम्बु शर्मा
संपादक
फ्लैट नं०-4सी, गीत मर्लिन स्टेट,
25/8 डायमंड हार्बर रोड,
कोलकाता-700008

आत्मसम्मान

आत्म विश्वास आत्म सम्मान की जन्नी है । जितना आत्म विश्वास आप में होगा उतना आत्म सम्मान से आप जीएंगे । बिना आत्म विश्वास के आत्म सम्मान नहीं मिलता है । आत्म सम्मान है तो आत्म विश्वास भी होना ज़रूरी है । आत्म विश्वास जड़ है तो आत्म सम्मान उसकी शाखाएं हैं ।

आत्म सम्मान का हमारे जीवन में होना आवश्यक है । आत्म सम्मान ही व्यक्ति को उसकी पहचान बनाता है । जो आप करते हैं वह प्रकृति कहलाती है और जो काम से जुड़े हैं उससे आप में आत्म सम्मान बनता है ।

आत्म सम्मान है तो हर मोर्चे पर जीत आपकी होगी । लोगों का सम्मान पाकर आत्म विश्वास बढ़ेगा । जितना आत्म विश्वास बढ़ेगा उतना व्यक्तित्व विकसित होगा । आत्म विश्वास और आत्म सम्मान व्यक्तित्व को विकास देते हैं ।

कुमार अपने को हीन भावना से ग्रस्त समझता था । उसका हर काम अधूरा रहता था । उसे ज्ञान ही नहीं न की वह सब कुछ कर सता है जो दूसरे बड़े आराम से करते हैं । उसकी इस हीन भावना उसे उबरने नहीं दे रही थी । उसका आत्म विश्वास डांवाडोल रहता था ।

राजेश ने उसे पहले छोटे-छोटे काम में सफलता हासिल करने को कहा । इस तरह कुमार छोटे-छोटे कामों को मज़ा लेकर करने लगा । इससे उसके दिल में श्रेष्ठता का भाव जाग्रत हुआ । अब वह हर काम सफलतापूर्वक करता है । इससे मिले आत्म सम्मान आत्म विश्वास को और बढ़ाता जाता है ।

सम्मान पाने के लिए अपने काम में सफल होना बहुत ज़रूरी है । बेकार रहने से आत्म सम्मान तो जाएगी ही आत्म विश्वास भी कमज़ोर होता जाएगा । सफलता के लिए किसी भी काम को छोटा न समझा जाए । सब काम को पूरी तरह करने की कोशिश करनी चाहिए ।

विकास को ही देखें वह हर काम समय से करता है लोग उसकी तारीफ़ करते हैं । यही तारीफ़ आत्म विश्वास बनकर उभरती है और वह सफलता के झंडे गाड़ देता है ।

सफल जीवन का मूलमंत्र आत्म विश्वास है और इसके एवज़ में मिलने वाला आत्म सम्मान है । जितना आप में आत्म विश्वास होगा उतना ही आप आत्म सम्मान पाएंगे ।

गांधी जी का भी कथन है जीयो तो आत्म सम्मान से, जिसको जितना सम्मान मिले वह उतना भाग्यशाली होता है ।

आत्म विश्वास पाना है और आत्म सम्मान प्यास की इच्छा जितना पानी हम पीएंगे उतना आत्म सम्मान हमारा होगा । आत्म सम्मान की प्यास को जितना हम बढ़ाएंगे उतनी क़ाबलियत हमारी बढ़ती जाएगी ।

मुहम्मद अफ़ज़ल

बड़ा बाज़ार, हज़ारी बाग, झारखंड

प्रकृति से छेड़छाड़

देवभूमि उत्तराखंड में आयी आपदा प्रकृति से की गयी छेड़छाड़ का नतीजा है । विकास की आड़ में हरे-भरे पेड़ों को काट दिया गया । जगह-जगह पुल व बांध बना दिये गये । पानी के वेग को रोकना मुश्किल हो गया । नतीजा पानी के तेज़ बहाव में सब कुछ बह गया । सड़कें, पुल, मकान, दुकान, होटल, बांध समय रहते चेतना होगा । वर्ना इस त्रासदी से बड़ी घटना घट सकती है । कई लोग जलधारा में बह गये, धरती में समा गये, हज़ारों घर-परिवार बर्बाद हो गये, हम सबको यह प्रण करना होगा प्रकृति से छेड़छाड़ न करें । पेड़ों को न काटें, पेड़ उगाएं, पहाड़ों का खनन न करें । यदि हम अब भी न संभले 'हिमालय' को बचाना मुश्किल हो जाएगा सरकार को पहाड़ों के विकास के लिए नयी नीति बनानी होगी, नदियों से छेड़छाड़, बांध बांधना तुरंत बंद करना होगा ।

देश में विकास होना चाहिए पर ऐसा विकास किस काम का जो देश के नागरिकों को ही निगल जाएं ।

यशपाल जैन 'आदर्श'

494/5, राजापार्क, जयपुर-302004

संसार में दो तरह के लोग होते हैं

संसार में दो तरह के लोग होते हैं, एक ग़रीब और दूसरा अमीर । परंतु होते हैं दोनों ही दुखी । इसीलिए कहा गया है कि "दाम बिना निर्धन दुखी और तृष्णावश धनवान । कही न सुख संसार में देखयो सब जगछान । इसलिए ही सभी धर्मों में कहा गया है कि संतोष रखा जाना चाहिए और जितना मिला है, उसमें धैर्यता के साथ उसका भोग करना चाहिए । कुरआन में तो यहां तक आदेश फ़रमाय गया है कि जितना आपके पास है उसमें से कुछ ऋण ग़रीबों को दिया जाए । इस क्रिया को "ज़कात" नाम से कहा जाता है । निश्चय ही इसे अपनाने से हमारे से कम धनि लोगों की ज़रूरतों को हम पूरा करने में समर्थ होंगे और समाज में समानता होगी ।

दूसरे रूप में हमारी सरकार भी इसी समानता को लाने हेतु समाजवाद की प्रक्रिया पर चल रही है परंतु उसकी ग़लत नीतियों एवं प्रबंधन के कारण ग़रीब-ग़रीब बनता जा रहा है और अमीर अमीर होता जा रहा है और कोसों दूर तक समाजवाद नहीं दिखता ।

घेवरचन्द गोदीका

किशनपोल बाज़ार, जयपुर

यथोचित

जुलाई 2013 की 'कान्ति' अभिक्रांत हुई । एतदर्थ आभारी हूं । 'ईदगाह' बाल्यावस्था में पढ़ी थी । 'कान्ति' में प्रकाशित इस कहानी को पढ़कर बचपन की स्मृतियां की लहरें वापस लौट आयीं ।

आस्तिक-नास्तिक बनाम...अभिमत के अंतर्गत प्रूफ़ की त्रुटियों ने गहराई तक झकझोरा । 'कान्ति' में प्रूफ़ दोष न के बराबर होता है फिर ऐसा क्यों ? 'आत्म चिन्तन का पल' अच्छा लगा ।

'बालवीथी' में बाल कविताएं भी छापा करें । आज के बच्चे साहित्य से दूर होते चले जा रहे हैं । 'कान्ति' के निरंतर प्रकाशन के लिए साधुवाद ।

अभिराम सत्यज्ञ जयशील

हथुआ-841436 (बिहार)

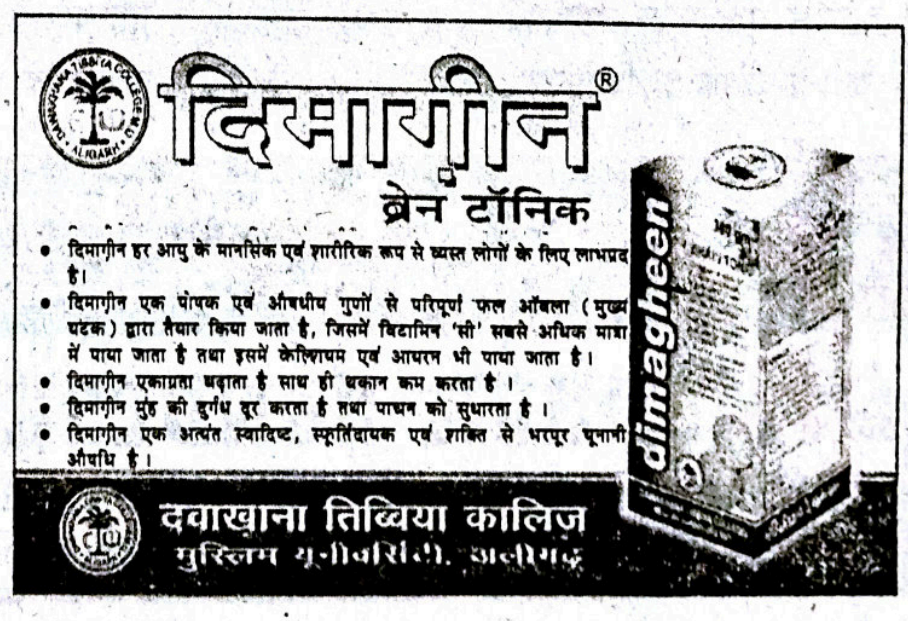

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	–शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	–राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	–एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	–बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	–डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	–ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	–अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	–स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	–इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	–डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	–मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	–नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

दुनिया के महानतम व्यक्तित्व हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

❖ प्रो० मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद

दुनिया में ऐसे तो लाखों पैग़म्बर और सुधारक आते रहे और बड़े-बड़े इन्क़िलाब लाते रहे । लेकिन जो इन्क़िलाब मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा आया और जिस प्रकार और जिस थोड़ी अवधि में आया उसका उदाहरण दुनिया के इतिहास में न मिला और न मिलेगा ।

आप (सल्ल०) ने इस्लाम को जिस प्रकार लोगों के सामने प्रस्तुत किया वह दूसरे धर्मों से नितांत भिन्न है । विशेष रूप से इन अर्थों में कि यह एक सामाजिक आन्दोलन था, जिसका उद्देश्य दुनिया में न्याय की स्थापना और शोषण को समाप्त करना था । इस आन्दोलन ने न केवल पूरी क़ौम का स्वभाव बदल दिया बल्कि समाज के आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक ढांचे को पूर्णत: परिवर्तित कर दिया । यह एक चमत्कार था । ऐसा चमत्कार जिससे दुनिया के बड़े-बड़े बुद्धिमान और विचारक आश्चर्य में पड़ गये ।

आप (सल्ल०) के समय अरब की हालत

छठी शताब्दी ई० के अंतिम काल में अर्थात 571 ई० में जब पैग़म्बर (सल्ल०) अरब की धरती पर पधारे, उस समय अरब का समाज न केवल अज्ञानग्रस्त था बल्कि पूर्णत: अज्ञानता में डूबा हुआ था । उसमें वे सारी बुरी मान्यताएं और अमानवीय व गंदे रीति-रिवाज प्रचलित थे, जो मानवता को पशुता के स्तर पर पहुंचा देते हैं । यह एक अंधकारमय युग था, जिसमें मानवता बर्बरता और पशुता के पैरों तले दम तोड़ रही थी ।

किसी भी समाज को समझने के लिए प्रसिद्ध समाजशास्त्री C. Wright Mills ने तीन बातें बतायी हैं–

1. उस समाज का ढांचा किस प्रकार का है और उसके विभिन्न विभाग एक-दूसरे से किस प्रकार का संबंध रखते हैं ?

2. मानव इतिहास में उस समाज का क्या स्थान है, और मानवता के स्वांगीण विकास का उसके यहां क्या अर्थ समझा जाता है ।

3. और किस प्रकार के लोगों का उस समाज पर वर्चस्व है ?

अरब के समाज को इन तीनों प्रश्नों को लेकर देखा जाए तो यह उत्तर मिलेगा–(1) यह क़बीलों में विभक्त और भेदभाव पर आधारित समाज था, जिसमें समाज के विभिन्न अंग एक-दूसरे का शोषण करते थे । यही उनका पारस्परिक संबंध था और वे परस्पर एक-दूसरे के साथ विरोधात्मक नीति अपनाये हुए थे । काले-गोरे में भेदभाव तथा ऊंच-नीच की धारणाएं व मान्यताएं उस समाज का विशिष्ट गुण बन चुकी थीं ।

(2) मानव इतिहास में उस समाज का स्थान अत्यंत निम्न था । मानवता से यह समाज कोसों दूर था, क्योंकि यहां तो धन की पूजा होती थी और मानवता को धन के पैरों तले कुचला जाता था । मानवता के उत्थान की कोई संभावना उस समाज में शेष न थी ।

(3) जिन लोगों को उस समय के समाज में सत्ता और अधिकार प्राप्त था वे धन के पुजारी, भोग-विलास में लिप्त, अहंकारी, ऊंच-नीच के ध्वजावाहक तथा शोषण के समर्थक और मानवता के उन्मूलक थे । सत्य की धारणा उनमें सिरे से न थी । वे असत्य और अनैतिकता की जीती-जागती तस्वीर थे । यह तो था उस समाज का एक समग्र विश्लेषण, जो समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण या सर्वेक्षण पर आधारित है । यह मैं इसलिए बता रहा हूं कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने दुनिया में पधारे तो आपके सामने कितनी बड़ी चुनौती थी । यह चुनौती थी एक बिगड़े हुए समाज को एक मानवतावादी समाज में बदलने की ।

अरब के उस समाज के अमानवीय पक्ष युद्धप्रियता

युद्धप्रियता की यह हालत थी कि छोटी से छोटी बात

पर लड़ना-मरना और एक-दूसरे का सिर काट लेना उनकी दृष्टि में एक मामूली बात थी ।

क़बीलों में बंटा होना

अरब् समाज छोटे-छोटे क़बीलों में विभक्त था और वहां का हर क़बीला दूसरे क़बीले से और हर ख़ानदान दूसरे ख़ानदान से लड़ने में व्यस्त था । लड़ाइयों का सिलसिला वर्षों तक चलता रहता था । उन लड़ाइयों को इतिहासकार ''अय्यामुल अरब'' (अरब की विपत्ति के यादगार दिन) कहते हैं, जिनकी संख्या सैकड़ों से अधिक है । 'मीदानी नेशापुरी' (मृत्यु 518 हि०) ने ''किताबुल अमसाल'' में उनमें से 132 लड़ाइयों के नाम बताये हैं और कहा है कि–''गणन-कला पूर्णत: उनकी गणना करने में असफल है । इसलिए जो कुछ मैंने बयान किया है उसी पर मुझे संतोष करना पड़ा ।'' ये वे लड़ाइयां थीं, जो इस्लाम से चालीस-पचास वर्ष पूर्व लड़ी गयीं । क़बीलों के बीच मानव-मित्रता, समानता तथा एक क़ौम होने की भावना ही सिरे से नहीं पायी जाती थी । लड़ने-मरने और मारने को ही अज्ञानकाल का श्रेय और क़बीले की शान समझी जाती थी । हिंसा, निर्दयता, हत्या और लूट-मार की अत्यंत बुरी घटनाएं घटित होती रहती थीं ।

मदिरापान

मदिरापान जो हर प्रकार की बुराइयों, अत्याचारों, दुष्कर्मों और व्यभिचार का मूल कारण है अरब के लोगों में उसका इतना अधिक रिवाज था कि हर घर शराबख़ाना बन गया था । शराब के रिवाज का अनुमान इससे हो सकता है कि अरबी भाषा में शराब के ढाई सौ नाम हैं । सभी घरों में शराब की बैठकें लगती थीं । घर की औरतें और बच्चे साक़ी (शराब पिलाने वाले) बनते थे । साथ ही उनके सामने व्यभिचारिणी (दुश्चरित्र) गाने वाली औरतें गाती-बजातीं और पुरुष उसी नशे की हालत में अश्लीलता की बातें करते । अज्ञानकाल का प्रसिद्ध कवि तुरफ़ा ने भी इस बैठकों में जो अश्लीलता होती थी, उसका चित्र अपनी रचनाओं में किया है ।

जुआबाज़ी

मदिरापान के साथ उनमें जुआ खेलने का भी रिवाज आम हो गया था । जुए में धन-दौलत हारने के पश्चात लोग पत्नी तथा बच्चों तक पर दांव लगा देते थे । यह जुआबाज़ी और वह भी शराब की बदमस्ती की हालत में प्राय: मारपीट और लड़ाई पर समाप्त होती थी । अबस और ज़िबयान की चालीस साल की लड़ाई घुड़दौड़ की जुआबाज़ी का परिणाम थी । धन की प्राप्ति और नाम कमाने के इस अवैध साधन से ख़ानदान के ख़ानदान बरबाद हो जाते थे ।

सूदख़ोरी

अरब के इस क़बायली समाज में हर प्रकार की बुराइयों के साथ मानवीय शोषण का एक घिनौनी सूरत सूदख़ोरी थी । सूद का आम तरीक़ा यह था कि एक निश्चित दर पर क़र्ज़ देते थे और उस मूलधन के लौटाने के लिए एक समय निश्चित कर देते थे । जब अवधि समाप्त हो जाती तो उसका तक़ाज़ा करते और अगर ऋणी उसका भुगतान नहीं कर सकता तो उस अवधि में बढ़ोत्तरी कर देते थे और उसके बदले सूद की दर बढ़ा देते थे । परन्तु उसका एक और अत्याचारी रूप भी था कि जब सूद के भुगतान की अवधि समाप्त हो चुकती और ऋणी ऋण का भुगतान नहीं कर पाता तो अवधि बढ़ा देते, परंतु उसके बदले मूलधन में भी बढ़ोत्तरी कर लेते, यहां तक कि कभी-कभी यह बढ़ोत्तरी दुगुनी-चौगुनी तक पहुंच जाती थी । और इस प्रकार बढ़ोत्तरी होते-होते ऋणी की कुल संपत्ति डूब जाती । यह मामला अधिकतर ग़रीबों और किसानों के साथ होता था, जिसका परिणाम यह था कि ग़रीबों और किसानों का पूरा वर्ग कुछ धनवानों के हाथ बंधक था । अगर अंधक रखने वाले अपने बंधक रखे हुए माल एवं सामान को अवधि समाप्त होने तक नहीं छुड़ा सकता तो बंधक रखने वाला (महाजन) उसका मालिक हो जाता था ।

निर्धन लोग अपने धन-दौलत को ही नहीं, अपनी औरतों और बच्चों तक को भी बंधक रखवाते (बुख़ारी, कअब बिन अशरफ़ द्वारा उल्लिखित)। तात्पर्य यह कि यह एक धन का पुजारी समाज था । दौलत के आगे मनुष्य की कोई मूल्य न था । दिखावा, भोग-विलास (अय्याशी), कठोरता एवं क्रूरता का चलन आम था । पूंजीवाद का तो उस समय जन्म नहीं हुआ था, परन्तु क़बायली समाज पूंजीवाद के सभी प्रकार के अभिशापों से भरा हुआ था ।

लूटमार

अरब में प्रतिदिन की लूटमार ने यद्यपि क़बीले को लुटेरा और डाकू बना दिया था, फिर भी कुछ क़बीलों में इस प्रकार के कुछ विशेष जत्थे बन गये थे, जिन्होंने लूटमार

को ही अपनी आजीविका का साधन और दिनचर्या बना लिया था । एक क़बीला दूसरे क़बीले के धन-दौलत, मवेशी ही नहीं, बाल-बच्चों तक पर डाका डालने के लिए तैयार रहते थे । व्यापारियों और सौदागरों के क़ाफ़िले (जत्थे) बिना किसी भारी इनाम के किसी मैदान से सही सलामत न गुज़र सकते थे । एक क़बीला दूसरे क़बीले की औरतों और बच्चों को पकड़ कर किसी दूसरे के पास बेच दिया करते थे और मवेशियों को हांक कर ले जाते थे । सफल डाकू अपने कारनामों को कविताबद्ध करते और उसे गर्वपूर्वक थे ।

चोरी

डकैती के अतिरिक्त परिस्थिति से मजबूर होकर देहातियों (बदुओं) में चोरी का भी चलन था । विभिन्न क़बीलों के ऐसे बहादुर जो क़बीलों में अपना कोई विशिष्ट स्थान नहीं रखते थे, वे विशेषकर चोरी का धंधा अपना लेते थे और इसकी चर्चा गर्व के साथ करते थे ।

बलात्कार और अश्लीलता

बलात्कार और दुराचार आम था । इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने बयान किया है कि अज्ञानकाल में लोग यद्यपि खुलेआम बलात्कार को जायज़ नहीं समझते थे, परंतु छिप कर करने में कोई हर्ज़ नहीं समझते थे और खुल्लम-खुल्ला करना तो कमीनापन है लेकिन छिप कर करने में कोई हर्ज़ नहीं ।

(तफ़्सीर तबरी)

व्यभिचारिणी अपने घरों के सामने झंडियां लगाकर बैठती थीं और उनकी संतान वैध और हलाल संतान के बराबर समझी जाती थीं । बड़े-बड़े रईस अपने घर की लौंडियों (दासियों) को आदेश देते थे कि व्यभिचार के द्वारा कहीं से धन कुछ कमा कर लाएं और उनकी भेंट चढ़ाएं । इन व्यभिचारों पर कविता में प्रशंसा के पुल बांधे जाते थे ।

निर्लज्जता

काबा के हज में हज़ारों आदमी एकत्र होते, लेकिन (कुरैश के सिवा) शेष सभी लोग बिल्कुल नंगे होकर काबे का चक्कर लगाते । औरतें जब नंगी होकर चक्कर लगाती तो लोगों से कहतीं कि हमको कोई इतना कपड़ा दे दो, जिससे गुप्तांगों को ढांका जा सकता ।

महिलाओं पर अत्याचार

सौतेली माताओं पर अधिकतर जमा कर उसे पत्नी बना लेते थे । महिलाओं को विरासत में हिस्सा नहीं मिलता था । निकाह की कोई सीमा नहीं थी । तलाक़ के लिए कोई मुद्दत और इद्दत न थी अर्थात जब तक पति चाहे औरत न पति के पास रह सकती थी न किसी और से विवाह कर सकती थी । (सीरतुन्नबी, लेखक सुलेमान नदवी भाग 4)

बेटी की हत्या

बेटी की हत्या कर रिवाज आम था । लड़की पैदा होती तो उसको मैदान में ले जाकर ज़मीन में ज़िन्दा गाड़ देते थे । एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आकर बताया था कि उसने अपने हाथ से आठ लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया था । लोग लड़कियों के अस्तित्व को संकट और मुसीबत समझते थे । माताएं स्वयं अपनी लड़कियों को क़ुरबानी के लिए हवाले कर देती थीं, और अरबों के लिए किसी को दामाद बनाकर लाना लज्जाजनक बात थी ।

गुलामी

अरब के भेदभाव वाले समाज का एक बहुत बड़ा अभिशाप गुलामी का रिवाज (दास-प्रथा) था । गुलाम ख़रीदे और बेचे जाते थे और उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता था ।

रसूल (सल्ल०) ने उन परिस्थितियों का सामना किस प्रकार किया ?

यह था वह समाज, जो एक चुनौती के रूप में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को मिला, एक रूढ़िवादी समाज, जो अपने ग़लत व पुराने रस्मों को छोड़ने को तैयार न था । चालीस साल की उम्र (अवस्था) के बाद आप (सल्ल०) ने जब नबी होने का ऐलान किया तो उस रूढ़िवादिता को चुनौती दी और एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया । अल्लाह फ़रमाता है–

"और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा है उसके पास और रसूल (सल्ल०) के पास आओ, तो कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को जिस तरीक़े पर पाया है, वही हमारे लिए काफ़ी है । क्या उनके बाप-दादा न कुछ जानते हों और न सीधे रास्ते पर हों तब भी वे उन्हीं का अनुसरण करेंगे ?" (क़ुरआन, 2-170)

सत्य और असत्य की जो लड़ाई अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को करनी पड़ी वह वास्तव में इसी रूढ़िवादिता और आधुनिकता की लड़ाई थी । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक रूढ़िवादी, जीर्ण-शीर्ण, न्यायहीन, अमानवीय,

शोषण-प्रिय और असमानतापूर्ण समाज के स्थान पर एक आधुनिक, न्यायसंगत, मानवतावादी, समतावादी और शोषण मुक्त समाज का ढांचा प्रस्तुत किया । आप (सल्ल०) ने उस अंधकार युग के एक-एक अमानवीय तथा अन्यायपूर्ण रस्म और रिवाज को चुनौती दी और उसे बदल कर रख दिया । यह एक चमत्कार नहीं तो और क्या है कि एक लड़ाकू समाज एक सदाचार प्रिय समाज बन गया, जिसमें मनुष्य की जान को एक मर्यादा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हुई और हत्या, लूटमार, छीन-झपट का स्थान शांति, समझौता और सहयोग ने ले लिया ।

क़बीलाबन्दी

जो समाज क़बीलों में बटा हुआ था उसमें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक ऐसी बराबरी और मानव-मित्रता की रूह फूंक दी कि सारे भेदभाव मिट गये । गोरे-काले में भेद, क़बीलों के भेद, दास और स्वतंत्र में भेद, सब समाप्त हो गये । पूरा समाज एक क़ौम और पूरी क़ौम एक लोहे की दीवार बन गया । जातीय भेदभाव को मिटाने का यह एक अद्‌भुत उदाहरण है । भारत में गांधी जी ने दलितों व पिछड़े लोगों को ऊंची जाति वालों के साथ सामाजिक समता और बराबरी दिलाने की असाधारण कोशिश की यहां तक कि स्वयं भी मैला ढोने वालों की बस्ती में रहे । 1955 ई० में छूआछूत के विरुद्ध क़ानून भी पास हुआ, परंतु छूआछूत अभी तक बाक़ी है । अब भी उन्हें मंदिरों में जाने से रोका जाता है और उन्हें सामाजिक बराबरी अब तक नहीं मिल सकी है ।

समानता

असमानता को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इस प्रकार समाप्त किया कि जो समाज धन का पुजारी था और जिसमें मनुष्य की प्रतिष्ठा उसकी दौलत और शक्ति से आंकी जाती थी वहां आप (सल्ल०) ने लोगों के दिलों में यह विश्वास बैठा दिया कि समाज में बड़ा वह नहीं है, जिसके पास दौलत अधिक है, बल्कि बड़ा वह है जिसके दिल में सबसे अधिक अल्लाह का भय (तक़वा) है । ईशभय आत्मा की उस अनुभूति का नाम है जिसके आधार पर हर काम में ख़ुदा के आदेशानुसार व्यवहार करने की अत्यधिक श्रद्धा और उसके विरोध से अत्यधिक घृणा उत्पन्न होती है ।

सूरह अल-मुल्क में अल्लाह ने फ़रमाया–"और जो लोग अनदेखे अपने परवरदिगार (पालनकर्ता प्रभु) से डरते हैं उनके लिए इनाम और अच्छा बदला है ।" जब यह निश्चित हो गया कि जिसमें सबसे अधिक ईश्वर का भय है वही सबसे बड़ा है तो फिर मनुष्य की प्रतिष्ठा उसके माल व दौलत से नहीं, बल्कि उसके आचरण और व्यवहार से होने लगी । समाज का ढांचा ही बदल गया । प्रसिद्ध समाजशास्त्री Alex Inkeles ने मानव की महानता में विश्वास और न्याय के बटवारे की आधुनिकता को प्रमुख अंग बताया है । इस प्रकार इस्लाम ने एक आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और मात्र प्रस्तुत ही नहीं किया बल्कि उसे व्यावहारिकता का रूप देकर दिखा दिया ।

शराबबन्दी

ऊपर उल्लेख हो चुका है कि शराब किस प्रकार अरबवासियों की रग-रग में घुस गया था । जब क़ुरआन पाक (5-90) की यह आयत अवतरित हुई–

"ऐ ईमान वालो ! शराब, जुआ, बुत और पांसे नापाक और शैतान के काम हैं तो इनसे बचो ताकि सफलता प्राप्त हो ।"

तो उस समय भी शराब का रिवाज जारी था । सहीह बुख़ारी में स्वयं हज़रत अनस (रज़ि०) की ज़ुबानी रिवायत है कि, "मैं अबू उबैदा और उबई इब्ने कअब और अबू तलहा को शराब पिला रहा था कि अचानक एक व्यक्ति ने आकर कहा कि शराब हराम (निषिद्ध) हो गयी । उस सभा में हाफ़िज़ इब्ने हजर के कथनानुसार ग्यारह व्यक्ति थे और नशे में झूम रहे थे (फ़तहउल बारी, भाग 10)। तथापि ज्यों ही यह आवाज़ आयी कि रसूल (सल्ल०) ने शराब को हराम घोषित कर दिया है तो किसी ने पूछा तक नहीं और एकाएक शराब के मटके और प्याले तोड़ डाले । यह न केवल अबू तलहा के घर का हाल था, बल्कि सारे मदीना के गली-कूचों में शराब की नालियां बह गयीं । बुख़ारी में है, "मदीना की गलियों में शराब बहती फिरती थीं ।" हम जानते हैं कि शराब का आकर्षण शराबी के लिए कितना अधिक होता है । लेकिन वहां दूसरा ही हाल हो गया । घड़े तोड़कर नालियों में बहाये गये और फिर कभी शराब को हाथ न लगाया गया । उस समय न तो कोई नशाबन्दी का अफ़सर (Prohitition officer) होता था न कोई सरकारी क़ानून था न पुलिस थी जो उसे लागू करती, लेकिन यह केवल अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के व्यक्तित्व का प्रभाव

और मानवीय आचरण को बदलने की शक्ति थी कि एक पूरा समाज मदिरापान को छोड़कर उसे निषिद्ध घोषित कर दिया । यह एक चमत्कार नहीं तो क्या था ?

जुआ

इसी प्रकार जुआ, सूदख़ोरी, व्यभिचार, महिलाओं पर अत्याचार, लड़कियों को जीवित गाड़ देना, लूट-मार, हत्या और दासों पर अत्याचार जैसे अनेक अनैतिक कुकृत्य बन्द हो गये ।

सूद-ब्याज

जो लोग सूद दर सूद खाते थे उन्होंने सूद से इतना परहेज़ कर लिया कि अगर किसी को ऋण दिया तो उसकी दीवार के छाये में भी न बैठते थे कि कहीं यह ऋण के बदले लाभ उठाना न हो जाए, यह एक चमत्कार नहीं तो क्या है कि कहीं तो ऋणी का माल जायदाद यहां तक कि बाल-बच्चे तक ज़ब्त कर लिये जाते थे और कहां लोग ऋणी को ऋण देकर उससे दूर भागने लगे कि कहीं अनजाने में ऋण के बदले कोई लाभ न उठा लें । यह बात स्पष्ट हो कि उस समय न कोई सरकार थी न नियम-क़ानून, न पुलिस जिसने सूद को निषिद्ध और हराम घोषित किया हो ।

गुलामी

गुलामी के अमानवीय रिवाज को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया गया । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के आन्दोलन ने गुलामों की स्वतंत्रता और उनके साथ उत्तम व्यवहार को एक अभिन्न अंग बना लिया । आप (सल्ल०) ने कहा कि "जिसको ख़ुदा ने तुम्हारे अधीन कर दिया उसको वह खिलाओ जो तुम स्वयं खाते हो, और वही वस्त्र दो जो तुम स्वयं पहनते हो, और उसको इतना काम न दे दो जो उस पर भारी हो जाए और जो भारी काम दो तो उसके काम को पूरा करने में ख़ुद भी साथ मिलकर सहायता करो । (सहीह बुख़ारी, भाग 2) आप (सल्ल०) के इस आदेश पर जब सहाबा (साथी) रज़ि० ने चलना आरंभ कर दिया तो यह भेद करना कठिन हो गया कि मालिक कौन है और दास कौन (सहीह बुख़ारी, भाग 2) इस प्रकार गुलामी वास्तव में समाप्त हो गयी ।

इस सुधार के पीछे भी कोई सरकारी या राजनीतिक शक्ति या पुलिस या फ़ौज या नियम-क़ानून न था । यह सब चमत्कार था रसूल (सल्ल०) के महानतम व्यक्तित्व का । रंग और वंश का भेद इस प्रकार समाप्त हो गया कि वही अरब जो काले लोगों से घृणा करते थे उन्हीं अरबों में एक हब्शी गुलाम हज़रत बिलाल (रज़ि०)-मस्जिदे नबवी के मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) की हैसियत में प्रतिष्ठित हुए और उन्हें दुनिया में एक उच्चे स्थान प्राप्त किया गया ।

इक़बाल के शब्दों में-

एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूद व अयाज़,
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा नवाज़ ।
बन्दा व साहेब व मुहताज व ग़नी एक हुए,
तेरी सरकार में पहुंचे तो सभी एक हुए ।

आर्थिक बदलाव

इस प्रकार समाज का आर्थिक ढांचा ऐसा बदला कि सूदख़ोरी और गुलामी का अमानवीय रिवाज समाप्त हो गया । उत्तम ऋण ने सूदख़ोरी का स्थान ले लिया और पूंजीवादी मानसिकता के स्थान पर ग़रीबों, यतीमों और लाचारों को सहारा देने का रिवाज चल पड़ा । अब मनुष्य को धन की अपेक्षा श्रेष्ठता दी जाने लगी । सूरह तौबा में अल्लाह ने फ़रमाया-

"ऐ ईमान लाने वालो ! किताब वालों के अधिकांश धर्मज्ञाता और संसार त्यागी संत लोगों का माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं । जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं तथा उन्हें अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते उन्हें दुखदायिनी यातना की मंगल सूचनाद दे दो, जिस दिन इस (सोने-चांदी के ढेर) पर जहन्नम की आग दहकाई जाएगी, फिर उससे इनके ललाट और इनके पहलू और इनकी पीठों को दाग़ा जाएगा । (और कहा जाएगा) यह वही है जिसको तुमने अपने लिए जमा कर रखा था, तो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो ।"

(क़ुरआन, 9 : 34-35)

इस प्रकार क़ुरआन पाक ने पूंजीवादी विचारधारा के स्थान पर एक समाजपरक विचारधारा (Socialistic aproach) को उभारा और सामाजिक न्याय पर बल दिया ।

सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक स्तर पर असमानता के स्थान पर समता स्थापित हो गयी । गोरे-काले और अमीर-ग़रीब का भेद समाप्त हो गया और श्रेष्ठता की कसौटी दौलत नहीं बल्कि तक़वा (ईश-भय) बन गया ।

सांस्कृतिक परिवर्तन

सांस्कृतिक और नैतिक स्तर पर दुराचार, बलात्कार और शराब सब बन्द हो गये और समाज ने एक साफ़-सुथरा और पवित्र रूप धारण कर लिया। औरतों पर अत्याचार बन्द हो गये, औरतों में अश्लीलता के स्थान पर शालीनता और उत्तम आचरण को अपनाया और बदकारी (व्यभिचार) को इतना घिनौना समझा जाने लगा कि उसके लिए कठोर दंड निधरित की गयी। औरतों को विरासत में हिस्सा मिला और भ्रूण हत्या अर्थात नवजात बच्चियों की हत्या का रिवाज भी समाप्त हो गया। स्पष्ट रहे कि भारत में अभी तक राजस्थान, तमिलनाडु और अन्य भागों में अभी तक नवजात बच्चियों की हत्या का रिवाज-सा है। जबकि इसे अवैध घोषित हुए बहुत दिन हो गये। (India Today 21 Oct. 1988 ई०)।

सती प्रथा के विरुद्ध राजाराम मोहन राय ने 19वीं शताब्दी में आवाज़ उठायी थी। इसके विरुद्ध क़ानून भी पास हुआ परन्तु 1987 ई० में राजस्थान में देवराला नायक स्थान पर सती के रस्म को बड़े धूम-धाम से मनाया गया, जिसमें एक विधवा रूप कुंवर ने अपने पति की मृत्यु पर अपने आपको अग्नि को समर्पित कर दिया। (देखिये)। इससे पूर्व भी सती की कई घटनाएं हुईं। क़ानून और देश के समाज सुधारक अभी तक इसे रोक न सके।

राजनीतिक न्याय की स्थापना

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के इस इन्क़िलाब ने व्यक्तिगत या क़बाइली अधिनायकत्व के स्थान पर परामर्शदात्री सभा की स्थापना की और विरासती राज्य न रहा, बल्कि चुनाव पर आधारित हुआ। जनता को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला। शासक को शासित के आगे वास्तविक रूप से जवाबदेह होना पड़ा और यह तय पाया कि शासक को शासित के जीवन स्तर से उच्च स्तर पर रहना जायज़ नहीं है, जैसा कि ख़ुलफ़ा-ए राशिदीन (आदरणीय सत्यनिष्ठ ख़लीफ़ा) ने सिद्ध करके दिखा दिया।

इस प्रकार एक ओर तो पूरी जनता का स्वभाव (ETHOS) बदल गया, व्यक्तिगत आचरण बदल गये और दूसरी ओर सामाजिक ढांचा मानव-शत्रु के रूप को छोड़कर एक मानवता-प्रिय रूप में बदल गया। यह मौलिक परिवर्तन (Metamorphosis) व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों स्तरों पर हुआ और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन के केवल बीस वर्षों में।

रसूल (सल्ल०) का कमाल

इन सारे मौलिक परिवर्तनों के पीछे जो एक आश्चर्यजनक बात है और जिस पर मानव की बुद्धि दंग रह जाती है वह यह है कि सभी बदलाव केवल बीस-बाइस सालों में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने प्रस्तुत किये। और उस समाज में प्रस्तुत किये, जो एक अनपढ़ समाज था। जहां न छापा-ख़ाने थे, न पत्र-पत्रिकाएं, न किताबें थीं, न रेडियो, न टेलीविज़न थे, न टेलीफ़ोन और न आवागमन के वे साधन जो आज उपलब्ध हैं जैसे तेज़ गति से चलने वाली ट्रेनें, मोटर और हवाई जहाज़ इत्यादि। हुकूमत का भी संगठित रूप नहीं था। न विधानसभा, न लोकसभा, न पुलिस, न फ़ौज। ऐसी परिस्थिति में चालीस वर्ष की आयु में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को नुबूवत (पैग़म्बरी) मिली और अपने जीवन काल के बीस-बाइस सालों में इतनी बड़ी क्रान्ति ला दी। यह एक ऐसा कारनामा है, जिसका उदाहरण दुनिया में न मिला है और न मिलेगा।

कार्ल मार्क्स ने "दास कैपिटल" 1887 ई० में लिखा और रूस की समाजवादी क्रान्ति 1917 ई० अर्थात तीस साल बाद हुई और उस समय की रूसी क्रान्ति को देखें तो पाते हैं कि रूस के समाज में शिक्षा भी थी, और प्रेम भी था, समाचार-पत्र और पुस्तकें भी थीं, और वे सभी संचार के साधन थे जो पैग़ाम को फैलाने के लिए आवश्यक है। फिर भी आश्चर्य है कि यह क्रान्ति पूरी न हो सकी। फिर यह कथित क्रान्ति 1994 ई० में अर्थात क्रान्ति के 77 वर्ष बाद सोवियत संघ के बिखराव के साथ ही अपना बचा-खुचा प्रभाव खो बैठी।

"News Times" के Sept. 1988 ई० के अंक में Igor Arievich लिखते हैं कि "रूस में जब 1917 ई० में क्रान्ति आयी तो समाज का ढांचा तो बदला लेकिन राष्ट्र का स्वभाव (ETHOS) नहीं बदला। वह पूंजीवादी ही बना रहा। और उसी पूंजीवादी सोच को लिए हुए रूस के समाज ने समाजवादी ढांचा अपना लिया।" लेखक के अनुसार परिणाम यह हुआ कि जनता की शक्ति (Dictatorship of the Proletariat) के स्थान पर दल की शक्ति और दल की शक्ति के स्थान पर (दल की शक्ति और दल की शक्ति के स्थान पर) केवल एक व्यक्ति स्टालिन की शक्ति ने ले ली। देश में सही आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था उत्पन्न

न हो सकी । लेखक के कथनानुसार नौकरियां और पदवी लोगों की क्षमता के अनुसार न देकर सामाजिक स्तर के आधार पर दिये जाने लगे । यही कारण है कि रूस में Glasnost (स्वतंत्र चिंतन) और Perespoika (नव निर्माण) के आन्दोलन बड़े जोर-शोर से चल पड़े थे।वे सारी बुराइयां जो अब तक चलती रही हैं उनका भेद खोला जा रहा है, अर्थात स्वयं रूसी चिंतकों के अनुसार समाजवादी क्रान्ति सही रूप में आयी ही नहीं । इस प्रकार ईसाइयत फैली मगर हज़रत ईसा (अलैहि०) के बाद जैसा कि एक अमेरिकी लेखक Michael Hart ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि "यद्यपि ईसा (अलैहि०) ही ईसाइयत के विशिष्ट नैतिक और धार्मिक आस्थाओं के कर्णधार हैं, किन्तु ईसाई धर्मज्ञान को विशिष्ट प्रगति देने वाले 'सेंटपॉल' थे जो ईसाइयत के मुख्य प्रचारक थे, और जिन्होंने New Testament के अधिकांश भाग लिखे ।" (Reference : Michael H. Hart, The 100-A Ranking of the most influential persons in History. (Hart Publishing INC. New York city, 1978, p. 39)

दुनिया में बड़े-बड़े नेता और सुधारक आये, उन्होंने सुधार का काम किया, परन्तु ऐसा शायद ही कोई सुधारक या नेता रहा हो जिसने अपने जीवन के 20-22 वर्षों में अरब के ऐसे अनपढ़ समाज में जो अज्ञानता और मानव विरोधी सारी बुराइयों से भरा हुआ हो, व्यक्तिगत रूप से एक-एक व्यक्ति के स्वभाव को, सारी क़ौम के स्वभाव को और समाज के पूरे ढांचे को पूर्ण रूप से बदल दिया हो । यह एक ऐसा ऐतिहासिक प्रयोग है जो इतिहास की प्रयोगशाला में अनोखा और अकेला है । ऐसा प्रयोग सिवाय एक चमत्कार के और कुछ नहीं हो सकता, और ऐसा चमत्कार सिवाय एक नबी के और नबियों में यह विशिष्टता केवल मुहम्मद (सल्ल०) को प्राप्त है । Michael Hart जिसका अभी ऊपर उल्लेख हुआ है, स्वयं एक ईसाई लेखक हैं । उन्होंने "The 100-A Ranking of the most Influential person in History" नामक पुस्तक लिखी–इस पुस्तक में उन्होंने दुनिया के 100 महान व्यक्तियों का उल्लेख किया है । उनमें हज़रत ईसा (अलैहि०) भी हैं, बुद्ध भी हैं, कार्ल मार्क्स भी हैं, हज़रत मूसा (अलैहि०) भी हैं, अशोक भी हैं, कन्फ्यूशियस भी हैं, फ्रॉयड भी हैं, सेन्ट पाल भी हैं, परन्तु आश्चर्य की बात है कि उन सभी एक सौ महानतम व्यक्तियों में उन्होंने पहला नाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का रखा है और पहला अध्याय आप (सल्ल०) ही पर लिखा है । उन्होंने लिखा है–"दुनिया के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तियों में मुहम्मद (सल्ल०) को प्रथम स्थान पर रखने का मेरा फ़ैसला कुछ लोगों को आश्चर्य में डाल देगा और कुछ विरोध करेंगे परन्तु वे इतिहास के एक व्यक्ति थे जो धार्मिक और सांसारिक दोनों स्तरों पर पूर्ण रूप से सफल रहे।"

(पृष्ठ 33)

उन्होंने भी वही बात कही है जो मैंने ऊपर कही थी । उनके अनुसार–

"इस किताब में उल्लिखित अधिकांश व्यक्तियों को यह लाभ उपलब्ध था कि वे सभ्यता के केन्द्र और सांस्कृतिक रूप से बहुत ही प्रगतिशील समाज में जन्में और पले-बढ़े, जबकि मुहम्मद (सल्ल०) मक्का में पैदा हुए जो दक्षिणी अरब में है । वह उस समय दुनिया का एक पिछड़ा देश था । व्यापार, कला और ज्ञान-विज्ञान से कोसों दूर था । ...यह अनोखा जोड़ है सांसारिक और धार्मिक प्रक्रिया का, जिसके परिणामस्वरूप मैं समझता हूं कि मुहम्मद (सल्ल०) को मानव इतिहास का एकमात्र सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व समझे जाने का अधिकार प्राप्त है ।"

(पृष्ठ 40)

यह कौन-सा आकर्षण था, यह कौन-सी शक्ति थी, यह कैसी सत्यवादिता और सत्य निष्ठा थी जिसने इतनी बाधाओं और कठिनाइयों के होते हुए अपने जीवनकाल के छोटे से भाग में एक नये समाज को जन्म दिया और उसे चला कर रख दिया । एक आदर्श आचरण दुनिया और विशेषकर मुसलमानों के सामने रख दिया । एक न्यायसंगत जीवन और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय पर आधारित समाज के न केवल सिद्धान्त स्पष्ट कर दिये बल्कि उस समाज को स्थापित करके दिखा दिया ।

मुसलमान और आदर्श आचरण

आइये अब हम यह देखें कि हम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के अनुयायी होने का दावा करते हैं क्या उन सिद्धान्तों का अनुसरण कर रहे हैं? क़ुरआन मजीद की सूरह आले इमरान की आयत 110 में अल्लाह मुसलमानों से फ़रमाता है–

"तुम वह उत्तम गिरोह हो जिसे मानव के लिए पैदा किया गया है, तुम भलाई का आदेश देते हो और बुरी बातों

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, ईंग्लिश मिडियम विद्यालय)

महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सुचना

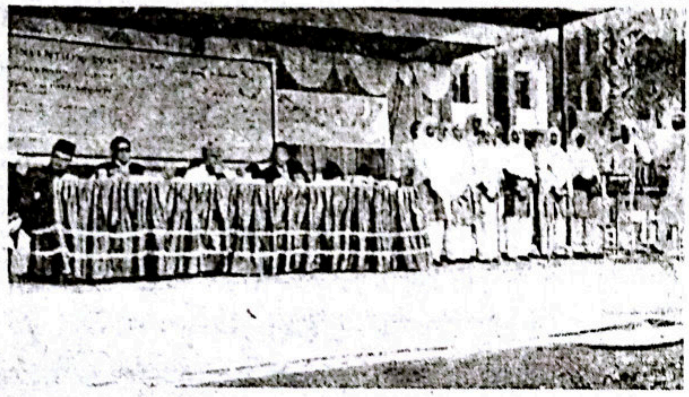

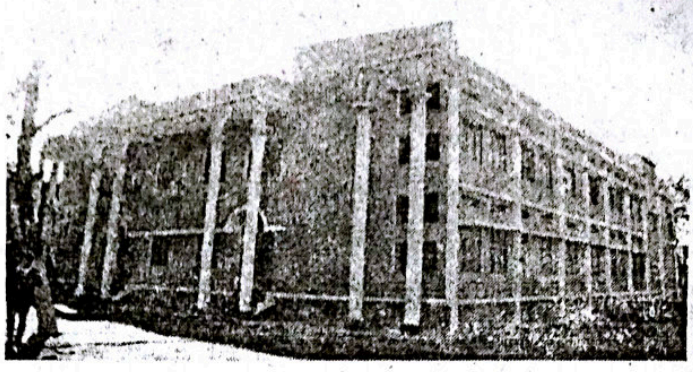

हजारीबाग के प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाडी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माडर्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लडकीयों के लिए नायाब तोहफा

लडकीयों के लिए 100 बेड का शानदार हॉस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू० अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू० का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो० 09431530878, Website : munammission.org

E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस०एम० नईम
डायरेक्टर
एम०ए०, बी०एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी०एस०सी०, बी०एड

से रोकते हो और अल्लाह पर 'ईमान' रखते हो ।'' यह है वह कर्तव्य जो मुसलमानों पर डाला गया है । कुरआन और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के आदर्श आचरण के रूप में हमारे हाथों में एक मार्गदीप दिया गया कि हम उससे अंधेरे दूर करें और खुद भी उजाले में चलें और दूसरों को अंधेरे से निकालें । लेकिन हम दूसरों को तो क्या अंधेरे से निकालते खुद ही अंधेरों में खो गये । अब आप खुद विचार करें कि सज़ा के भागी कौन हैं ? वे लोग अधिक ज़िम्मेदार हैं जिन्हें मार्गदीप मिला ही नहीं या वे जिन्हें मार्गदीप मिला और वे स्वयं अंधेरों में डूब गये ?

यह बात मस्तिष्क से निकाल दीजिये कि केवल मुसलमान घर में जन्म हो जाने से और एक मुस्लिम जैसा नाम रख लेने से आप पूरे मुसलमान हो गये । कुरआन में अल्लाह ने सूरह अल-हुजुरात की आयत 14 में साफ़-साफ़ फ़रमाया है–

''बद्दू कहते हैं कि ''हम 'ईमान' लाए''। कह दो : तुम ईमान लाए, परन्तु यूं कहो : हम इस्लाम लाए हैं और अभी 'ईमान' अभी तुम्हारे दिलों में उतरा ही नहीं है । और यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करोगे तो वह तुम्हारे कमाई में से कुछ कम नहीं करेगा निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला और कृपाशील है ।''

अर्थात जब तक ईमान पूर्ण रूप से न लाया जाए इस्लाम लाने से हम 'मोमिन' (ईमान वाले) नहीं हो सकते । कुरआन मजीद की सूरह निसा की आयत 136 में है–

''ऐ ईमान लाने वालो ! ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और जो किताब अन्तिम रसूल पर उतारी है और उस किताब पर जिसे वह इससे पहले उतार चुका है ।''

किताब पर ईमान लाने का अर्थ ही यह है कि किताब में बताए गये सिद्धान्तों और शिक्षाओं को माना जाए और उसमें लिखित आदेशों की पाबन्दी की जाए, नहीं तो फिर 'ईमान' लाने का अर्थ क्या हुआ?

कुरआन पाक के कुछ और आदेशों पर विचार कीजिए–सूरह बक़रा की आयत 188 में बताया गया है कि–

''और तुम आपस में एक-दूसरे का माल को अवैध रूप में न खाओ, और न इसको (रिश्वतों के तौर पर) हाकिमों के पास पहुंचाओ कि इस तरह तुम जानते-बूझते लोगों के माल का कुछ भाग हक़ मारकर हड़प कर सको ।

सूरह हूद की आयत 85 में है–

''नाप तौल न्याय के साथ किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और धरती में बिगाड़ न करते फिरो ।''

सूरह अल-मोमिनून में अल्लाह तआला ने फ़रमाया–''जो अपनी अमानतों और अपने वादे का ध्यान रखने वाले हैं और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं ऐसे ही लोग वारिस होने वाले हैं 'फ़िरदौस' (जन्नत) के और वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे ।'' (23 : 8- 11)

अब ज़रा सोचिए कि हममें से कितने हैं जो दूसरे का हक़ नहीं मारते, घूस लेने और देने से बचे रहते हैं, व्यापार में ईमानदारी दिखाते हैं, अमानतों और वादों का ध्यान रखते हैं । आज अधिकांश लोग दौलत के पुजारी हो गये हैं और समाज में प्रतिष्ठा उसी को अधिक देते हैं जिसके पास दौलत अधिक है, चाहे वह किसी भी तरीक़े से जमा की गयी हो । आज हम समाज में सबसे ऊंचा स्थान उसको नहीं देते जिसके दिल में अल्लाह का भय सबसे अधिक है । क्या ये सब बातें 'ईमान' से मेल खाती हैं ?

आज कहां हैं वे मुसलमान जिनके आचरण में कुरआन के आदेशों की पूर्ण झलक दिखायी देती हो और जो सामाजिक और आर्थिक न्याय पर दिल से विश्वास रखते हों ।

अपनी कविता 'जवाबे-शिकवा' में अल्लामा इक़बाल ने क्या ख़ूब कहा–

शोर है हो गये दुनिया से मुसलमां नाबूद
हम यह कहते हैं कि थे भी कहीं मुस्लिम मौजूद?
वज़ा में तुम हो नसारा तो तमद्दुन में हनूद
ये मुसलमां हैं जिन्हें देख के शर्माएं यहूद
यूं तो सैयद भी हो मिर्ज़ा भी हो अफ़ग़ान भी हो,
तुम सभी कुछ हो बताओ तो मुसलमान भी हो?

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक सद्क्रान्ति का नमूना हमारे सामने रख दिया । आदर्श आचरण का स्वरूप हमें दिखा दिया, फिर भी हम अनुसरण न करें तो दोष किसका है ?

मुसलमानों का कर्तव्य सामाजिक व आर्थिक-अन्याय से लड़ना और न्याय की स्थापना के लिए प्रयत्न करना है और यही काम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने किया ।

रसूल पाक (सल्ल०) का आदर्श आचरण

व्यक्तिगत रूप से जो आचरण अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का था उसे एक आदर्श (Ideal) चरित्र कहना ही उचित होगा। आप (सल्ल०) बचपन से ही सच बोलने वाले और अमानतदार थे, नुबूवत से पूर्व ही आप (सल्ल०) को अमीन की उपाधि लि चुकी थी। आप (सल्ल०) ने अज्ञानता की अमानवीय रस्मों को आरंभ से न माना। अत्याचार का भी साथ न दिया। सदा ग़रीबों और लाचारों की सहायता की। ऋण लिया तो ग़रीबों की सहायता के लिए लिया। और भूखे रहे तो पेट पर पत्थर बांध लिया। वादा किया तो उसे निभाया। हमेशा से आप (सल्ल०) को सादगी पसन्द थी। एक बार हज़रत अली (रज़ि०) ने एक व्यक्ति को निमंत्रण दिया। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) ने कहा कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) भी आते और हमारे साथ भोजन करते तो अच्छा होता। हज़रत अली (रज़ि०) गये और नबी (सल्ल०) से निवेदन किया। आप (सल्ल०) आये, परन्तु दरवाज़े पर पहुंचे तो यह देखकर कि घर में दीवारों पर पर्दे लटक रहे हैं, लौट गये। हज़रत अली (रज़ि०) ने वापस होने का कारण पूछा तो नबी (सल्ल०) ने बताया कि पैग़म्बर की शान के विरुद्ध है कि वह किसी सज-धज वाले घर में प्रवेश करे। (अबू दाऊद, भाग 2, पृष्ठ 171)

एक बार नबी (सल्ल०) किसी युद्ध से वापस आये। हज़रत आइशा (रज़ि०) ने स्वागत के तौर पर घर की दीवार पर पर्दा लटका दिया था। आप (सल्ल०) घर के अन्दर आये तो हज़रत आइशा (रज़ि०) ने सलाम किया। आप (सल्ल०) ने उत्तर न दिया। और चेहरा-मुबारक से अप्रसन्नता के चिन्ह प्रकट होने लगे। इसके बाद आप (सल्ल०) पर्दे की ओर बढ़े और उसको फाड़ दिया और फ़रमाया : "अल्लाह ने हमको ईंट-पत्थर को सजाने के लिए साधन नहीं दिया।" (अबू दाऊद, भाग 2, पृष्ठ 219)

एक बार हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के गले में सोने का हार देखा तो फ़रमाया : "क्या तुमको यह अप्रिय न लगेगा जब लोग कहेंगे कि पैग़म्बर (सल्ल०) की बेटी के गले में आग का हार है।" (नसई, भाग 2, पृष्ठ 143)

एक बार हज़रत आइशा (रज़ि०) के हाथों में सोने के कंगन देखकर फ़रमाया : "अगर इसको उतार कर 'वरस' के कंगन को ज़ाफ़रान से रंग कर पहन लेतीं तो अच्छा होता।" (नसई, भाग 2, पृ० 143)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कहा करते थे कि आदमी को उन कुछ चीज़ों के अतिरिक्त और किसी चीज़ का हक़ नहीं है–रहने के लिए घर, शरीर ढंकने के लिए एक कपड़ा और पेट भरने के लिए रूखी रोटी और पानी।" (तिरमिज़ी)

आप (सल्ल०) के घर में अक्सर उपवास (फ़ाक़ा) रहता और रात को तो आप (सल्ल०) और सारा घर प्राय: भूखा सो रहता। हज़रत आइशा (रज़ि०) बताती हैं कि पूरे जीवन अर्थात मदीना के जीवन-काल से मृत्यु तक आप (सल्ल०) ने कभी दो वक़्त भरपेट रोटी नहीं खायी (सीरतुन्नबी, भाग 1)। ग़रीबों से हमेशा प्यारे करते थे। हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) अपने आपको ग़रीबों से ऊंचा समझते थे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनसे कहा कि, "तुमको जो सहायता और रोज़ी ईश्वर की ओर से मिली है वह उन्हीं ग़रीबों के बदौलत मिली है।"

(सहीह मुस्लिम)

सहनशीलता और सहानुभूति का यह हाल था कि आप (सल्ल०) नमाज़ पढ़ने मस्जिद जाते तो रास्ते में एक यहूदी औरत का घर पड़ता था। वह जान-बूझकर ऊपर से आप (सल्ल०) पर कूड़ा फेंक देती थी। आप (सल्ल०) कूड़े को झाड़कर सीधे आगे बढ़ जाते और नमाज़ पढ़ते। एक दिन बुढ़िया ने कूड़ा न फेंका, तो उसके घर आप (सल्ल०) उसे देखने गये। वह दंग रह गयी और बोली मैं तो आप (सल्ल०) पर कूड़ा फेंकती थी। आप (सल्ल०) मेरे पास कैसे आये।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "आज तुमने कूड़ा न फेंका, तो मैंने समझा कि तुम बीमार हो गयी हो इसलिए मैं तुम्हारा हाल मालूम करने आया हूं।" यही सहानुभूति जब राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर आयी तो वह भी लाजवाब और अद्‌भुत थी। मक्का विजय के समय विजेता के रूप में आप (सल्ल०) जब मक्का वापस आए तो अपने भाषण में कहा–

"ऐ कुरैश के लोगो! अब अज्ञानता का घमंड और वंश पर गर्व करना अल्लाह ने मिटा दिया। सब लोग आदम की नस्ल से हैं और आदम मिट्टी से बने थे।"

(सीरतुन्नबी, भाग 1)

यह था वह महान पैग़ाम जिसने सारे विश्व के लिए मानव एकता की आधारशिला उपलब्ध करा दी। ख़ुतबे के बाद आप (सल्ल०) ने जनसमूह की ओर देखा तो अत्याचारी कुरैश थे। उनमें वे महज्वाकांक्षी भी थे जो इस्लाम को

मिटाने में सबसे आगे थे, वे भी थे जिनकी ज़ुबानें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर गालियों की बौछारे करती थीं । वे भी थे जिनके अस्त्र-शस्त्र ने रसूल (सल्ल०) के साथ गुस्ताख़ियां की थीं, वे भी थे जिन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के रास्ते में कांटे बिछाये थे, वे भी थे जो नसीहत के वक़्त आप (सल्ल०) के एड़ियों को पत्थर मारकर लहूलुहान कर दिया करते थे, वे भी थे जो आप (सल्ल०) के ख़ून के प्यासे थे, वे भी थे जिनके हमलों की बाढ़ मदीना की दीवारों से आ-आकर टकराती थी, वे भी थे जो मुसलमानों को तपती रेत पर लिटा कर उनके सीनों पर आग से दाग़ लगाया करते थे ।

सारे संसार के लिए रहमत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उनकी ओर देखा और प्रभावी रूप से पूछा–"तुमको कुछ मालूम है, मैं तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करने वाला हूं ?" वे लोग यद्यपि अत्याचारी थे, निष्ठुर थे, बेरहम थे, लेकिन स्वभाव को पहचानने वाले थे । पुकार उठे, "तू शरीफ़ भाई है, और शरीफ़ भाई का बेटा है ।"अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया : "आज तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो ।"

क्या इस क्षमाशीलता, दयालुता, मानव प्रेम, सहनशीलता और इस अनोखे दयाभाव का कोई उदाहरण इतिहास प्रस्तुत कर सकता है? और फिर यही नहीं मक्का के विरोधियों ने वहां से हिजरत करने वाले मुसलमानों के घरों पर अधिकार जमा लिया था और उन्हें मक्का से निकाल दिया था अब वही हिजरत करने वाले विजेता के रूप में मक्का वापस आये तो यह अवसर था कि उनके अधिकार उन्हें वापस दिये जाएं । लेकिन आप (सल्ल०) का कमाल देखिये कि आप (सल्ल०) ने मुहाजिरों को आदेश दिया कि वे भी अपनी जायदाद से दस्तबरदार हो जाएं । अर्थात अपने छिने हुए मकान जो हड़पने वालों ने ले लिए थे उन्हें भी वापस न लें ।

दुनिया में जब भी किसी गिरोह को किसी दूसरे गिरोह पर विजय प्रापत हुई, तो विजेता ने लूट-मार, हत्या, छीन-झपट, अत्याचार और हिंसा अवश्य किया है । विजित की जायदादों पर अपना अधिकार जमा लिया है और उसके साथ बेदर्दी से पेश आये हैं । यह एक अनोखा उदाहरण है कि जहां अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और उनके साथियों ने एक ओर तो बेहद अत्याचार सहे, मक्का छोड़ कर चले गये, जायदादों से हाथ धोया और फिर जब विजेता बनकर वापस आये तो अत्याचार करना तो दूर की बात है अपनी छिनी हुई जायदादें भी वापस न लीं । यह आचरण केवल सारे संसार के लिए रहमत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का ही हो सकता है । Michael Hart ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति घोषित किया, तो ग़लत नहीं किया ।

एक सामाजिक विश्लेषण

ऊपर मैंने आरंभ में इस्लाम से पूर्व के अरब समाज का C. Wright Mills के दृष्टिकोण के आधार पर तीन बिन्दुओं पर विश्लेषण किया है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जो व्यक्तिगत और सामाजिक क्रान्ति लायी थी, उसके बाद अरब समाज का उन्हीं तीन बिन्दुओं पर विश्लेषण किया जाए तो इस प्रकार होगा–

1. समाज से असमानता समाप्त हो गयी, और मानव एकता और बराबरी पर आधारित समाज बन गया । समाज के विभिन्न भागों में शोषण और विरोधपूर्ण संबंधों के स्थान पर शोषणविहीन और न्यायसंगत संबंध स्थापित हुए । काले-गोर और ऊंच-नीच का भेद मिट गया ।

2. मानव इतिहास में इस नये समाज को अत्यंत उच्च स्थान प्राप्त हुआ । दौलत को मानवता की तुलना में श्रेष्ठता देने की बजाए वह समाज मानवता और ईश-भय को दौलत पर श्रेष्ठता देने लगा । मानवता के विकास का रास्ता खुल गया ।

3. नये समाज में जो लोग सत्ता में आये वे मानवतावादी, विनीत, दयालु, मानव-समानता के ध्वजावाहक, शोषण के विरोधी और मानवता के सच्चे मित्र थे । असत्य से कोसों दूर और सत्य की एक जीती-जागती तस्वीर थे ।

यह था वह संपूर्ण बदलाव जो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने जीवन के बीस-बाइस सालों में पेश किया ।

आज दुनिया को इसी परिवर्तन की आवश्यकता है, जिससे आज की यह चीख़ती और व्याकुल मानवता समाज एक ऊंच-नीच और अज्ञानता के भेदभाव से मुक्ति पा सके, और चारों ओर केवल न्याय और परस्पर प्रेम और भाईचारे की रोशनी नज़र आये ।

(यह लेख 22 नवम्बर 1988 ई० को हुसैनी सोसाइटी द्वारा आयोजित 'सीरत-सभा' में पढ़ा गया ।)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करो ।"

(कुरआन)

Ek Hamdard, Ranchi
(Jharkhand)

सेदोकाएं

अन्तर्बाह्य

जिसने खोली
खिड़कियां अपनी,
सदा उसी ने पाया
दिपदिपाते
सूरज को सम्मुख,
सौभाग्य मुस्कराया ।

■

जिसने यहां
फिर-फिर अपने
अन्तर्मन में झांका
कसौटी पर
कसकर स्वयं को,
मूल्य अपना आंका ।

■

नीति

जीवन-युद्ध
पड़े यहां सबको
सदा स्वयं लड़ना ।
किन्तु लड़े जो
युद्ध यह अभीत,
मिले उसी को जीत ।

■

दर्शन

जीवन-चक्र
घुमाते रहते हैं
माया-ममता-मोह ।
आते हैं तभी
यहां जाने कितने
आरोह-अवरोह ।

■

उम्र का पथ
चलता है मनुष्य,
यहां जीवन-भर ।
मनुष्य चाहे
जागा रहे या सोया,
रहे ज़ारी सफ़र ।

■

अपसंस्कृति

कैसी विकृति !
हावी हुई सर्वत्र
अब अपसंस्कृति ।
टूटे हैं तभी
पुराने मानदंड,
पूजित है पाखंड ।

■

पीज़ा-बर्गर,
फ़ैशन-फेसबुक
बने नया कल्चर ।
आज की पीढ़ी
इन्हीं के लिए बस
रहती है तत्पर ।

■

डॉ॰ रामनिवास 'मानव'
'अनुकृति', 706, सेक्टर-13,
हिसार-125005 (हरि॰)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और ईदुल अज़हा

❖ मौलाना अबुल आला मौदूदी

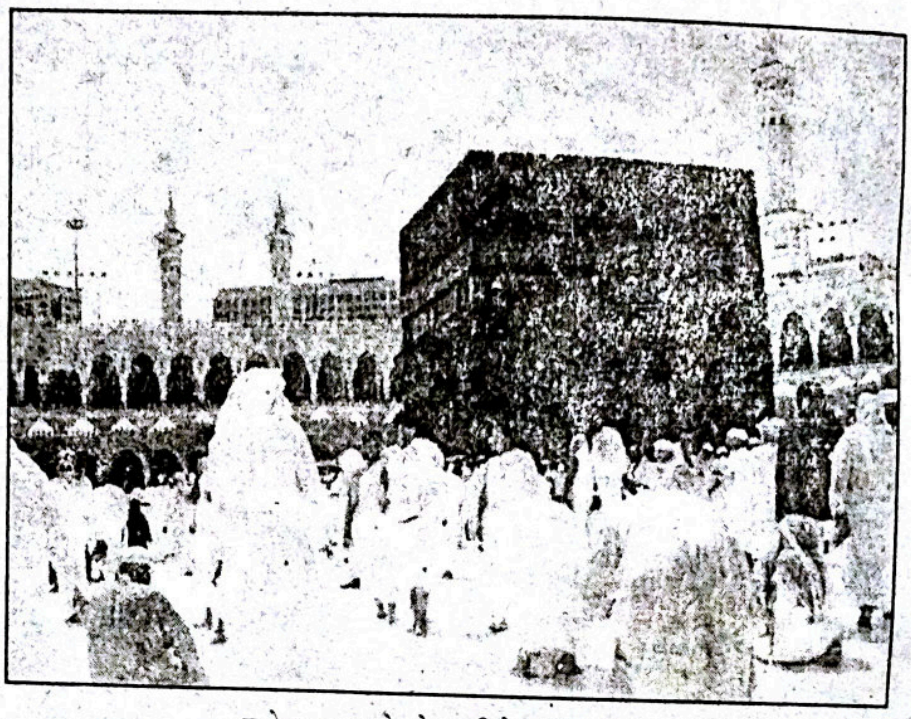

त्योहार और इन्सान के सामाजिक जीवन में चोली-दामन का साथ है । जब से आदमी ने इस धरती पर सामाजिक जीवन-यापन करना प्रारंभ किया है, संभवत: उसी वक़्त से त्योहार मनाने का सिलसिला भी चला आ रहा है । दुनिया में कोई क़ौम (राष्ट्र, जाति) ऐसी नहीं है और कभी नहीं रही जिसने साल में दो-चार या पांच-दस दिन इन उद्देश्य के लिए विशेष न किये हों । ये त्योहार दरअस्ल समाज की जान हैं । लोगों का एक जगह जमा होना, साझी भावनाओं का प्रदर्शन करना, मिलकर खुशियां मनाना, एक ही तरह की पूर्व-निर्धारित रस्में अदा करना--ये अपने अन्दर सरेस जैसी विशेषता रखता है, जिससे लोग आपस में जुड़कर एक सुगठित समाज का निर्माण करते हैं--और उनमें सामूहिकता की भावना न केवल उत्पन्न होती है, बल्कि थोड़े-थोड़े अंतराल से ताज़ा और जाग्रत होती रहती है ।

साधारणतया जो त्योहार दुनिया के विभिन्न देशों और क़ौमों में मनाये जाते हैं उनका जायज़ा लेने से मालूम होता है कि प्रत्येक त्योहार या तो किसी महत्वपूर्ण घटना की यादगार में मनाया जाता है, या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मंसूब होता है, या किसी ख़ास धार्मिक समारोह से संबंध रखता है । बहरहाल त्योहार के लिए कोई न कोई उपलक्ष्य ज़रूरी है जो एक क़ौम के लोगों या एक देश के वासियों के लिए साझी दिलचस्पी की चीज़ हो--और जिससे उनकी गहरी भावनाएं जुड़ी हों । इसी वजह से एक क़ौम या देश के त्योहारों में अन्य क़ौम या देश के लोग दिलचस्पी नहीं लेते । और किसी कारण से सहज रूप से दिलचस्पी लेना चाहें तो ले नहीं सकते । क्योंकि एक क़ौम का त्योहार जिन परंपराओं से संबंध रखता है, वे दूसरी क़ौम की भावनाओं और एहसासात में वह हरकत पैदा नहीं करतीं जो खुद उस क़ौम में पैदा करती हैं ।

त्योहार मनाने के तरीक़े भी दुनिया की विभिन्न क़ौमों में बेशुमार हैं । कहीं खेल-कूद, राग-रंग और मनोरंजन तक ही त्योहार सीमित होता है । कहीं मनोरंज़न, शालीनता की सीमा लांघ कर अभद्रता और अश्लीलता की सीमा तक पहुंच जाता है । कहीं शालीन मनोरंजन के साथ कुछ गंभीर रस्में भी अदा की जाती हैं । कहीं इन सामूहिक समारोहों से लाभ उठाकर लोगों में उच्च चरित्र आचरण पैदा करने और किसी उद्देश्य से अनुराग पैदा करने की कोशिश की जाती है ।

****

ग़र्ज़ किसी क़ौम का त्योहार मनाने का तरीक़ा मानो एक मापदंड है, जिससे आप उसके स्वभाव, उमंगों और मनोवृत्ति को स्पष्ट रूप से नाप पर देख सकते हैं । जितना ऊंची नैतिक भावना किसी क़ौम में होगी उतने ही उसके त्योहार शालीन और पावन होंगे । इसी तरह नैतिक रूप से कोई क़ौम जितनी पतित होगी वह अपने त्योहारों में उतने ही वीभत्स दृश्य पेश करेगी ।

इस्लाम चूंकि एक विश्वव्यापी सुधारवादी आन्दोलन है जो किसी ख़ास देश या क़ौम से ताल्लुक़ नहीं रखता, बल्कि पूरे विश्व के इन्सानों को एकेश्वरवादी सभ्यता का

वास्तविक प्रसन्नता का दिन

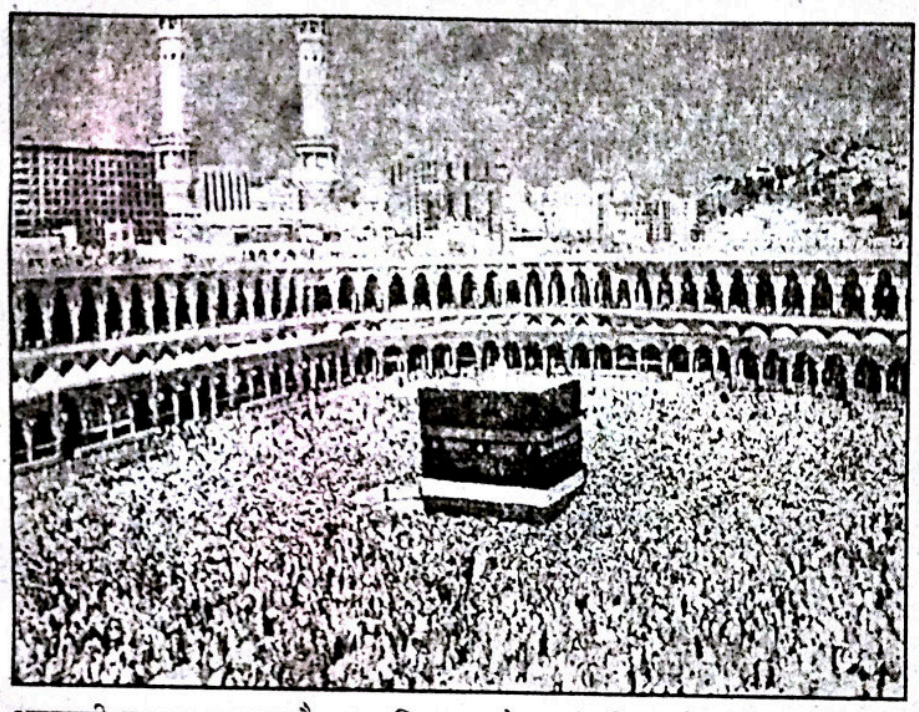

अनुयायी बनाना चाहता है । इसलिए उसने जहां जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को अपने ख़ास ढंग पर ढाला है, उसी तरह त्योहारों को भी एक विशिष्ट रूप प्रदान किया है, जो दुनिया भर के त्योहारों से भिन्न है । सामाजिक जीवन में त्योहारों का जो महत्व है और समाज में सामूहिक समारोहों के लिए जो एक क़ुदरती प्यास पायी जाती है, उसे तो इस्लाम ने नज़रअंदाज़ नहीं किया है, बल्कि उससे लाभांवित होने की पूरी कोशिश की है । मगर त्योहारों के समारोह, त्योहार मनाने के तरीक़े और त्योहार की नैतिक भावना में मौलिक परिवर्तन कर दिया है, जिसकी तीन विशिष्टताओं की तरफ़ मैं आपका ध्यान दिलाऊंगा ।

एक विश्वव्यापी आन्दोलन क़ौमी त्योहारों को पसन्दीदगी की नज़रों से नहीं देख सकता, जिन त्योहारों की बुनियाद भिन्न-भिन्न क़ौमी परंपराओं पर हो । जिनके साथ एक ही क़ौम की दिलचस्पियां और भावनाएं जुड़ी हों, और जिनमें एक क़ौम के साथ दूसरी क़ौम सहज रूप से शरीक न हो सकती हो । ये दरअस्ल इन्सानियत का राष्ट्रीय विभाजन और भेदभाव को सुदृढ़ करने वाले प्रेरक हैं । ये जिस तरह एक राष्ट्र को सुगठित करने में मदद देते हैं, उसी तरह प्रत्येक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से फोड़ने और अलग करने का भी काम करते हैं ।

अतएव कोई ऐसा आन्दोलन जो राष्ट्रीयताओं से ऊपर उठकर इन्सानियत से बहस करता हो और पूरे विश्व के इन्सानों को एक सभ्यता के रिश्ते में पिरोना चाहता हो, इस क़िस्म के त्योहारों को सिर्फ़ यही नहीं कि क़बूल नहीं कर सकता बल्कि गवारा भी नहीं कर सकता । क्योंकि वे उसके उद्देश्य के मार्ग में व्यावहारतः एक रुकावट होते हैं । इसके सामने उद्देश्य का स्वाभाविक तक़ाज़ा यही है कि जो क़ौमे उसके प्रभावधीन आएं, उनसे वह क़ौमी त्योहार छुड़वा दे और ऐसे त्योहार सुनिश्चित करे जिनमें वे सब शरीक हो सकती हों जो एक साथ क़ौमी भी हों और अन्तर्राष्ट्रीय भी । जिनका आधार क़ौमी परंपराएं व भावनाएं न हों बल्कि इन्सानियत के लिए साझा महत्व रखने वाली भावनाएं और परंपराएं हों ।

फिर जो आन्दोलन विश्वव्यापी होने के साथ खुदापरस्ताना (ईश्वरवादी) भी हो, वह ऐसे त्योहारों को उन सब समारोहों को, जो पुरातन आस्थाओं की याद ताज़ा करने वाले हों, बंद कर दे–और उनकी जगह ऐसे त्योहार निर्धारित करे जो खुदापरस्ती का गहरा रंग लिए हुए हों । खुदापरस्ती के साथ अनिवार्यतः नैतिकता का भी एक उच्च उद्देश्य पैदा होता है...और इसका तक़ाज़ा यह है कि एक खुदापरस्ताना तहरीक अपने अनुयायियों को ऐसे त्योहार दे जो अभद्रता और आशालीनता से बिल्कुल मुक्त हों । जिनमें लुत्फ़ व तफ़रीह तहज़ीब के साथ और ख़ुशी का इज़हार संजीदगी के साथ हो । जो महज़ खेलकूद ही पर ख़त्म न हो जाएं बल्कि... सामूहिक जीवन में त्योहारों से जो एक हरकत पैदा हो जाती है, उसे उच्च श्रेणी के नैतिक लक्ष्यों के लिए पूरी तरह इस्तेमाल किया जाए ।

****

इस्लाम ने अपने पैरवों के लिए जो त्योहार मुक़र्रर किये

हैं, उनमें ये तीनों विशेषताएं सुस्पष्ट नज़र आती हैं । अरब, ईरान, मिस्र, शाम और अन्य देशों में जिन क़ौमों ने इस्लाम क़बूल किया, उनके तमाम मज़हबी और क़ौमी त्योहार इस्लाम ने छुड़ा दिये और उनकी जगह दो त्योहार राइज किये जिन्हें आप 'ईदुल फ़ित्र' और 'ईदुज़्ज़ुहा' के नाम से जानते हैं । इनमें से पहला त्योहार तो इस ख़ुशी में मनाया जाता है कि ख़ुदा के नाम पर रमज़ान के तीव रोज़े रखने का जो हुक्म हमें दिया गया था उसकी तामील करने में हम कामयाब हो गये । अत: इस आज्ञापालन से फ़ारिग़ होकर हम अपने मालिक का शुक्र अदा करें ।

रहा दूसरा त्योहार तो वह उस अद्वितीय क़ुरबानी की यादगार है जो अब से चार हज़ार वर्ष पहले ख़ुदा के एक सच्चे फ़रमांबरदार (आज्ञा-पालक) बन्दे ने अपने मालिक के सम्मुख पेश की थी । इन दोनों त्योहारों में आप स्पष्टतया देख सकते हैं कि किसी ख़ास क़ौमियत का लगाव बिल्कुल नहीं है । बल्कि दो ऐसी चीज़ों को त्योहार की बुनियाद बनाया गया है जिससे दुनिया के सारे ख़ुदापरस्त इन्सानों की भावनाएं समान रूप से जुड़ सकती हैं । इसी तरह दोनों त्योहारों में अल्लाह (ईश्वर) की ख़ासिल बंदगी का गहरा रंग पाया जाता है । किसी व्यक्ति-पूजा (Hero worship) या किसी सृष्टि-रचना की पूजा का लेशमात्र प्रभाव भी आप इन त्योहारों में नहीं पा सकते । फिर इन त्योहारों के मनाने का जो तरीक़ा निश्चित किया गया है, वह भी इतना पावन है कि इससे ज़्यादा शालीन, सुसंस्कृत और नैतिक गुणों से भरपूर तरीक़ा कल्पना में भी नहीं आ सकता ।



बाद के मुसलमानों ने इस्लामी काल की अस्ली शान को किसी हद तक जाहिलियत के कृत्यों से दाग़दार कर दिया है । लेकिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के काल में जिस तरह ईद मनायी जाती थी उसका नक़्शा मैं आपके सामने खींचता हूं, जिससे आप इस त्योहार की पाकीज़गी का सही अंदाज़ा कर सकेंगे ।

ईद के दिन सुबह को तमाम मुसलमान औरत, मर्द, बच्चे सब ग़ुस्ल (स्नान) करते थे और अच्छे से अच्छे कपड़े जो ख़ुदा ने उन्हें दिये थे, पहनते । रमज़ान की ईद में नमाज़ के लिए जाने से पहले तमाम ख़ुशहाल लोग एक निर्धारित राशि सदक़ा (दान-पुण्य) की निकालकर ग़रीबों को देते थे, ताकि कोई शख़्स ईद के दिन भूखा न रह जाए ।

बक़र ईद में इसके विपरीत नमाज़ के बाद क़ुरबानी की जाती थी । ज़रा दिन चढ़ने पर सब लोग घरों से निकल खड़े होते थे । हुक्म था कि औरत, मर्द, बच्चे सभी निकलें ताकि मुसलमानों के बाहुल्य और उनकी शान का इज़हार हो । ख़ुदा से दुआ मांगने में भी सब शरीक हों, और इस सामूहिक ख़ुशी में भी सबको शिरकत का मौक़ा मिल जाए । ईद की नमाज़ मस्जिद के बजाय बस्ती के बाहर मैदान में होती थी, ताकि बड़े से बड़ा मजमअ (समूह) बन सके । नमाज़ के लिए जाते वक़्त सारे मुसलमान यह तकबीर पढ़ते हुए चलते थे–

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द

(अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है । अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, अल्लाह की सबसे बड़ा है । सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं ।)

हर गली-कूचे, बाज़ार और सड़के पर यही नारे लगते जाते थे, जिनसे पूरी बस्ती गूंज उठती थी । ईद के मैदान में जब सब लोग जमा हो जाते तो सफ़े (पंक्तियां) बांधकर सारा मजमअ अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की इमामत में पूरी एकाग्रता से दो रकअत नमाज़ अदा करता । फिर आप (सल्ल०) खड़े होकर ख़ुत्बा (प्रवचन)

देते । जुमे की नमाज़ के विपरीत यह ख़ुत्बा नमाज़ के बाद होता था, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा आदमी अपने रहनुमा की अहम तक़रीर के वक़्त मौजूद रहें, जिसका मौक़ा साल में सिर्फ़ दो बार आता है । पहले एक तक़रीर मर्दों के सामने होती है, फिर आप मैदान के उस हिस्से की तरफ़ तशरीफ़ ले जाते जहां औरतें जमा होती थीं और वहां की तक़रीर फ़रमाते थे । इन तक़रीरों में तालीम, तलक़ीन, नसीहत के अलावा इस्लामी जमाअत के मुताल्लिक़ उन तमाम महत्वपूर्ण समस्याओं और मुद्दों पर भी रोशनी डाली जाती थी जो उस वक़्त दरपेश होते थे । कोई फ़ौजी या सियासी मुहिम अगर पेशेनज़र होती तो उसका इन्तिज़ाम भी वहीं इस मजमे में कर दिया जाता। सामूहिक (जमाअती) ज़रूरतों की तरफ़ भी लोगों का ध्यान दिलाया जाता और हर शख़्स अपनी हैसियत के अनुसार उनके पूरा करने में हिस्सा लेता । यहां तक कि, रिवायतों में आया है कि औरतें अपने ज़ेवर तक उतार कर जमाअत की ख़िदमत के लिए पेश करती थीं । फिर यह मजमअ ईदगाह से पलटता था और हुक्म यह था कि जिस रास्ते से आये हो उससे हटकर दूसरे रास्ते से घरों की तरफ़ वापस जाओ, ताकि बस्ती का कोई हिस्सा तुम्हारी चहल-पहल से और तुम्हारी तकबीरों की गूंज से ख़ाली न रह जाए ।

ईद के दिन सुबह को तमाम मुसलमान औरत, मर्द, बच्चे सब ग़ुस्ल (स्नान) करते थे और अच्छे से अच्छे कपड़े जो ख़ुदा ने उन्हें दिये थे, पहनते । रमज़ान की ईद में नमाज़ के लिए जाने से पहले तमाम ख़ुशहाल लोग एक निर्धारित राशि सदक़ा (दान-पुण्य) की निकालकर ग़रीबों को देते थे, ताकि कोई शख़्स ईद के दिन भूखा न रह जाए ।

बक़र ईद में इसके विपरीत नमाज़ के बाद क़ुरबानी की जाती थी । ज़रा दिन चढ़ने पर सब लोग घरों से निकल खड़े होते थे । हुक्म था कि औरत, मर्द, बच्चे सभी निकलें ताकि मुसलमानों के बाहुल्य और उनकी शान का इज़हार हो । ख़ुदा से दुआ मांगने में भी सब शरीक हों, और इस सामूहिक ख़ुशी में भी सबको शिरकत का मौक़ा मिल जाए । ईद की नमाज़ मस्जिद के बजाय बस्ती के बाहर मैदान में होती थी, ताकि बड़े से बड़ा मजमा (समूह) बन सके ।

****

नमाज़ से वापस होकर बक़र ईद के दिन तमाम सामर्थ्यवान मुसलमान क़ुरबानी करते थे इस क़ुरबानी का मक़सद उस वाक़िये की याद ही को नहीं बल्कि उन जज़्बात को भी ताज़ा करना था, जिनके साथ इराक़ का रहने वाला एक प्रवासी बूढ़ा (हज़रत इब्राहीम अलैहि०) मक्का में ख़ुदा का इशारा पाते ही ख़ुद अपने बेटे को ख़ुदा की मुहब्बत पर क़ुरबान करने के लिए तैयार हो गया–और ऐन वक़्त पर ख़ुदा ने अपने रहम व करम से उसके बेटे के बदले मेढ़े की क़ुरबानी पेश करने की इजाज़त दे दी थी । ठीक इसी तारीख़ को इसी वक़्त तमाम मुसलमान वही अमल व्यवहारत: करके उस जज़्बे को ताज़ा करते हैं कि हज़रत इब्राहीम (अलैहि०) की तरह वह भी ख़ुदा के 'मुस्लिम' (आज्ञापालक) बन्दे हैं । उन्हीं की तरह अपनी जान, माल, औलाद हर चीज़ को ख़ुदा के हुक्म और उसकी मुहब्बत पर क़ुरबान करने के लिए तैयार हैं । और उनका जीना व मरना सब ख़ुदा के लिए है । इस नीयत का इज़हार जानवर को ज़िब्ह करने के अमल से इन शब्दों से होता है जो ज़िब्ह के वक़्त ज़बान से अदा किये जाते हैं–

'इन्नी वज्जह्तु वजहिया लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाति वल अर-ज़ हनीफ़वं वमा अन-न मिनल मुशरिकी-न इन्ना सलाति व नुसुकी व यहया-य व म-म-ति लिल्लाहि रब्बिल आलमी-न ला शरी-क-ल-हु व बिज़ालि-क अमिर-तू व अना मिनल मुस्लिमी-न० अल्लाहुम्मा ल-क व मिन-क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर०'

(मैंने अपना रुख़ उसकी तरफ़ फेर दिया जिसने आसमानों और ज़मीन को उत्पन्न किया है । मैं ठीक उसी तरीक़े का अनुयायी हूं जो इबराहीम (अलैहि०) का तरीक़ा था–और मैं ख़ुदा के साथ दूसरों को शरीक ठहराने वालों में से नहीं हूं । मेरी नमाज़, मेरी कुरबानी, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब कुछ अल्लाह के लिए है जो संपूर्ण सृष्टि का पालनहार (परवरदिगारे आलम) है, जिसका कोई शरीक नहीं । इसी का मुझे हुक्म दिया गया है और मैं ख़ुदा के आज्ञाकारी (फ़रमांबरदार बन्दों में से हूं । ख़ुदाया यह तेरा ही माल है और तेरे ही लिए है–बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर)।

ये अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा करते हुए जानवर ज़िब्ह किया जाता था और इस मंज़र को घर की औरतें और बच्चे सब देखते थे, ताकि सबके दिलों में वही कुरबानी और ख़ुदा की उसी फ़रमांबरदारी के जज़्बात ताज़ा हो जाएं । फिर यह गोश्त ग़रीबों और रिश्तेदारों में तक़सीम कर दिया जाता था । जानवर की खाल या उसकी क़ीमत ग़रीब लोगों को दे दी जाती थी, ताकि ईद सिर्फ़ ख़ुशहाल लोगों ही का त्योहार बनकर न रह जाए ।

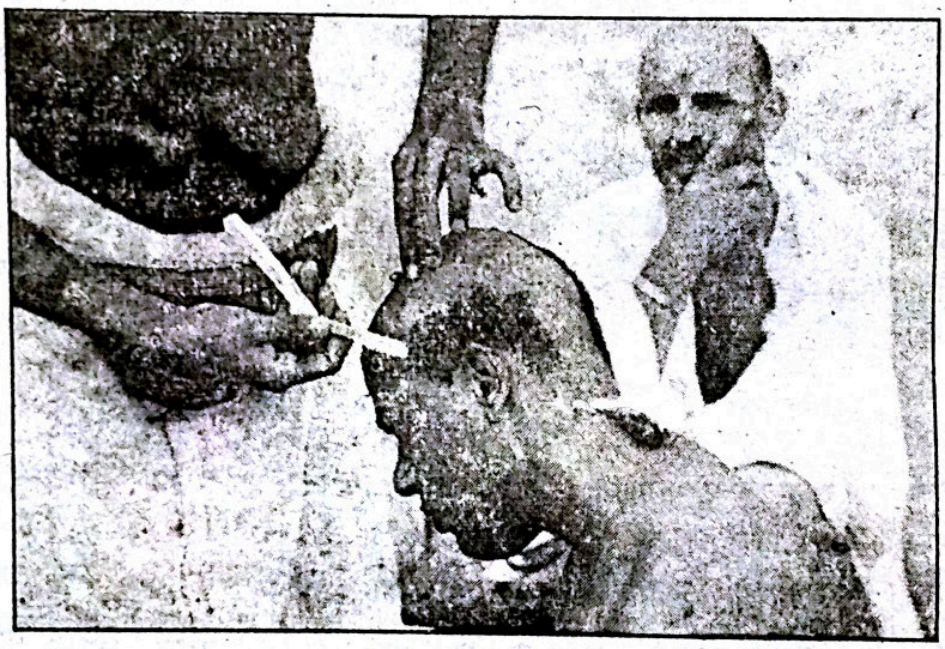

बस यह ईद भी जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़माने में मनायी जाती थी । इन 'सरकारी रस्मों' के अलावा ग़ैर-सरकारी तौर पर नवजवान कुछ खेलकूद भी लेते थे । और घरों की बाल-बालिकाएं मिल-बैठकर कुछ गीत भी गा लिया करती थीं । मगर यह चीज़ बस एक हद के अन्दर ही थी, उससे आगे क़दम बढ़ाने की इजाज़त नहीं थी । बल्कि सोसायटी के रहनुमा तो युवकों की इन जायज़ ख़ुशियां मनाने के अमल में हिस्सा लेने से बचते थे । ताकि उनका उत्साहवर्धन न हो जिससे वह अवांछनीय हरकतें करने का साहस करने लगें ।

रहनुमाओं का जो तर्ज़अमल था उसका अंदाज़ा इस घटना से हो सकता है कि एक बार ईद के दिन आप (सल्ल०) अपने घर में दाख़िल हुए तो देखा कि हज़रत आइशा (रज़ि०) के पड़ोस की दो लड़कियां बैठी गीत गा रही हैं । गीत कुछ इश्क़-आशिक़ी और शराब-कबाब के प्रसंग के न थे, बल्कि जंगे बग़ास के ज़माने के गीत थे । लड़कियां भी कुछ पेशेवर गायिकाएं नहीं थीं, बल्कि घरों की बहू-बेटियां थीं जो कभी दिल बहलाने को आपस में बैठकर मासूमाना गीत गा लिया करती थीं । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनकी इस तफ़रीह में दख़ल नहीं दिया और ख़ामोशी के साथ एक कोने में जाकर चादर ओढ़कर लेट गये । थोड़ी देर बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) आये और उन्होंने अपनी साहब-ज़ादी को डांटा कि अल्लाह के रसूल के घर में यह क्या हरकत हो रही है । उनकी आवाज़ सुनकर नबी (सल्ल०) ने चेहरे से कपड़ा हटाया और फ़रमाया–'रहने दो, हर क़ौम की एक 'ईद' (ख़ुशी का त्योहार) होती है, आज हमारी ईद है ।' आप (सल्ल०) का यह इरशाद सुनकर हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ख़ामोश हो गये । मगर यह सिलसिला जारी न रह सका । उनके पीठ मोड़ते ही हज़रत आइशा (रज़ि०) ने लड़कियों को आंख का इशारा किया और वे अपने घरों को भाग गयीं ।

इस वाक़िये से मालूम होता है कि जवानों के मासूमाना खेलकूद और कुछ गा-बजा लेने को जायज़ तो रखा जाता था, लेकिन बड़े ख़ुद इन दिलचस्पियों में हिस्सा लेकर उनकी हिम्मत नहीं बढ़ाते थे । बाद में जब बड़ों ने हदों की देखरेख छोड़ दी तो रस्सी ढीली ही होती चली गयी ।

क़ुरबानी पर आपत्ति क्यों ?

■ अबू अहमद नूर इलाही

जानवर की क़ुरबानी अल्लाह की क़ुरबत (समीपता) हासिल करने के ज़रियों में से एक निहायत ही उच्च ज़रिया है । माल व जान की क़ुरबानी के बग़ैर इन्सान अपनी ज़िन्दगी के बेहतरीन उद्देश्यों को हरगिज़ हासिल नहीं कर सकता । दुनिया के भौतिक एवं नश्वर उद्देश्य भी क़ुरबानियों के बग़ैर हासिल नहीं हो सकते । अल्लाह की समीपता और उसकी रज़ामंदी जो इन्सानी ज़िन्दगी का परम उद्देश्य है, उसके लिए तो बड़ी से बड़ी क़ुरबानी की ज़रूरत है ।

इन्सान के पास भौतिक संसार में सबसे क़ीमती चीज़ उसकी जान है । ज़रूरत पड़ने पर ख़ुदा की राह में अपनी जान की क़ुरबानी देना ख़ुदा के बन्दों पर लाज़िम है । अगर जान के बदले अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) हासिल हो जाए तो यह सौदा बहुत ही सस्ता है । जान की क़ुरबानी के बाद दूसरे दर्जे पर अपनी प्रिय चीज़ों की क़ुरबानी है जैसे माल, दौलत आदि ।

क़ुरबानी चूंकि इन्सानी फ़ितरत का तक़ाज़ा है, इसलिए इन्सान की उत्पत्ति के साथ ही क़ुरबानी का सिलसिला भी शुरू हो जाता है । अत: हज़रत आदम (अलैहि०) जो सबसे पहले इन्सान थे, उन्हीं के ज़माने से क़ुरबानी का प्रचलन भी शुरू हो चुका था । जैसा कि क़ुरआन में उनके दो बेटों की क़ुरबानी का ज़िक्र मौजूद है–

'उन्हें आदम के दो बेटों का वाक़िया सुनाइये, जबकि दोनों ने क़ुरबानी दी थी–एक की तो क़बूल हो गयी मगर दूसरे की क़बूल न हुई ।'

इसी तरह हज़रत इबराहीम (अलैहि०) को बेटे की क़ुरबानी का हुक्म हुआ । चूंकि अल्लाह का मक़सद उनके बेटे की जान लेना नहीं था बल्कि उनके ईमान का ख़ुलूस (निष्ठा) का इम्तिहान अपेक्षित था । इसलिए उनके बेटे की जगह मेढ़े की क़ुरबानी क़बूल फ़रमायी, ताकि आने वाली नस्लें भी इस इबराहीमी सुन्नत पर अमल कर सकें ।

क़ुरबानी पर एतिराज़

अल्लाह का इरशाद है–'हमने हर उम्मत के लिए क़ुरबानी करना मुक़र्रर किया है ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें अता किये थे ।' अल्लाह की तरफ़ से तो हर ज़माने में हर उम्मत को यही हुक्म मिला था कि जानवरों की क़ुरबानियां महज़ अल्लाह की रज़ा और उसकी क़ुरबत हासिल करने के लिए दिया करें । लेकिन मक्का के मुशरिकों ने अल्लाह के नेक बन्दों के लिए--जिन्हें वे ख़ुदा की तरफ़ से प्रतिनिधि, दिव्यात्मा समझते थे–क़ुर्बानियां, मन्नतें और नज़्रें देना शुरू कर दीं तो अल्लाह ने अपने आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिये अल्लाह के लिए क़ुरबानियां और नज़्रें देने की क़दीम सुन्नत (सनातन परंपरा) को फिर से जारी करवाया ।

क़ुरबानी के लिए अगरचे वक़्त मुक़र्रर है, मगर इसके लिए कोई ख़ास जगह सुनिश्चित नहीं है । कुछ लोगों का यह कहना है कि क़ुरबानी सिर्फ़ मक्का में हाजियों के लिए जाइज़ है । इसके सिवा दुनिया के अन्य क्षेत्रों के लिए जाइज़ नहीं । दूसरे, यह कि क़ुरबानी करना बेरहमी है । इसलिए क़ुरबानी करने के बजाय जानवर की क़ीमत सदक़ा (दान) कर देनी चाहिए ताकि उससे ग़रीबों का फ़ायदा हो । इनका यह कहना सरासर ग़लत और शैतानी वसवसा है । हदीस से साबित है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मदीना में पूरे दस साल क़ुरबानी करते रहे, जबकि हज मक्का में होता है । रहा बेरहमी का सवाल उठाना, तो अल्लाह जो सारी कायनात का ख़ालिक़ (स्रष्टा), मालिक, सर्वशक्तिमान और पालनहार है, जब ख़ुद उसी ने क़ुरबानी का हुक्म दिया है तो फिर इस क़िस्म की बहानेबाज़ी आक़ा की नाफ़रमानी के समान है और ग़ुलामी के आदाब के सरासर ख़िलाफ़ है ।

रही यह बात कि क़ुरबानी की जगह सदक़ा कर देना चाहिए, इस तरह एक तरफ़ तो क़ुरबानी अदा हो जाएगी और दूसरी तरफ़ ज़रूरतमंदों, ग़रीबों को फ़ायदा पहुंचेगा जो क़ुरबानी के ज़रिये नहीं पहुंच सकता । हर साल क़ुरबानी

की सूरत में लाखों रुपया ज़ाया होता है, अगर यह जन-कल्याण (रिफ़ाई काम) में ख़र्च किया जाए तो इससे मुल्क और मिल्लत को बहुत फ़ायदा पहुंच सकता है । इन एतिराज़ों का जवाब यह है–

पहली बात तो यह है कि सदक़ा क़ुरबानी का बदला नहीं हो सकता । इसलिए कि तमाम इबादतों की एक ज़ाहिरी सूरत है एक बातिनी (आंतरिक) हक़ीक़त...या यूं कहिये कि एक ज़ाहिरी शरीर और एक उसकी आत्मा । जिस तरह हर शरीर में उसके अनुरूप आत्मा होती है, उसी तरह हर इबादत की हक़ीक़त और रूह (अन्तर्भावना) उस इबादत ही के अनुरूप होती है । जो हिकमत और रूह एक इबादत में कारफ़रमा होती है, वह किसी दूसरी इबादत में नहीं पायी जा सकती । मसलन सदक़ा की ज़ाहिरी सूरत है माल ख़र्च करना और उसकी आंतरिक भावना है इन्सानों से हमदर्दी, समानता और कल्याण की भावना उत्पन्न करना । इसी तरह क़ुरबानी की एक ज़ाहिरी सूरत है यानी जानवर ज़िब्ह करना । एक उसकी रूह है यानी त्याग, उत्सर्ग (ईसार) की भावना उत्पन्न करना । जिस तरह एक चीज़ की रूह दूसरी चीज़ में नहीं डाली जा सकती, उसी तरह एक इबादत की रूह दूसरी इबादत में नहीं पायी जा सकती । लिहाज़ा ईसार का जो जज़्बा जानवर की क़ुरबानी से पैदा हो सकता है वह सदक़ा से हरगिज़ नहीं पैदा हो सकता । इसकी मिसाल तो ऐसी है जिस तरह किसी शख़्स को प्यास लगी हो और हम उससे कहें रोटी खा लो, या जिसे भूख लगी हो उससे कहें पानी पी लो । चूंकि रोटी और पानी के मक़सद अलग-अलग हैं, इसलिए एक चीज़ का मक़सद दूसरी चीज़ के इस्तेमाल से हरगिज़ हासिल नहीं हो सकता ।

जब हमें जानवर की क़ुरबानी का हुक्म दिया गया है तो इस हुक्म की तामील क़ुरबानी ही से हो सकती है, सदक़ा से नहीं हो सकती । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ुरबानी के दिनों में जानवर की क़ुरबानी से बढ़कर कोई अमल अल्लाह को महबूब नहीं । आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि क़ियामत के दिन क़ुरबानी का जानवर सही सलामत साक्षात हाज़िर होगा और उसके शरीरांगों, बाल और प्रत्येक ख़ून की बूंद के बदले क़ुरबानी देने वाला अज्र व सवाब (पुण्य) का हक़दार होगा । क़ुरबानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले ही क़ुरबानी अल्लाह के यहां क़बूल हो जाती है । इसलिए क़ुरबानी ख़ुशी-ख़ुशी दिया करो ।

इस्लाम से पहले लोग क़ुरबानी करके उसका गोश्त बैतुल्लाह (काबा) के सामने लाकर रखते थे और उसका ख़ून बेतुल्लाह की दीवारों पर लथेड़ देते थे । क़ुरआन ने बताया कि ख़ुदा को तुम्हारे इस गोश्त और ख़ून की ज़रूरत नहीं है, उसके यहां तो क़ुरबानी के वे जज़्बात पहुंचते हैं जो ज़िब्ह करते वक़्त तुम्हारे दिलों में बेदार होते हैं या बेदार होना चाहिए । क़ुरबानी गोश्त और ख़ून का नाम नहीं है, बल्कि उस हक़ीक़त का नाम है कि हमारा सब कुछ ख़ुदा के लिए है और उसी की राह में क़ुरबान होने के लिए है ।

क़ुरबानी करने वाला सिर्फ़ जानवर के गले पर ही छुरी नहीं फेरता बल्कि वह सारी नापसन्दीदा ख़्वाहिशों, दुष्इच्छाओं के गले पर ही छुरी फेरकर उन्हें ज़िब्ह कर डालता है । इस शऊर के बग़ैर जो क़ुरबानी की जाती है, वह इबराहीम (अलैहि०) और इस्माईल (अलैहि०) की सुन्नत की नहीं बल्कि एक क़ौमी रस्म है, जिसमें गोश्त-पोस्त की फ़रावानी व बहुलता तो होती है लेकिन तक़वा (ईश-परायणता) नापैद होता है जो क़ुरबानी की रूह है । क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है–

'अल्लाह को इन जानवरों का गोश्त और ख़ून हरगिज़ नहीं पहुंचता बल्कि उसे तुम्हारी जानिब से तुम्हारा तक़वा पहुंचता ।' (सूरह हज, आ० 38)

ख़ुदा के दरबार में वही अमल मक़बूल और स्वीकार्य है, जिसका प्रेरक ख़ुदा का तक़वा हो । इरशाद है–

'अल्लाह सिर्फ़ मुत्तकियों (ईश-परायण लोगों) का अमल ही क़बूल करता है ।' (सूरह अल-माइदा, आ० 27)



जीव-हत्या ?

❖ मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

दिल्ली से मुरादनगर (यू॰पी॰) जाने के लिए मैं बस में सवार था । बस के अन्दर एक सज्जन ने मुझे अपने बराबर वाली सीट पर बैठने के लिए इशारा किया । मैं उनको धन्यवाद देते हुए उनके पास बैठ गया । जैसे ही बस चलना शुरू हुई उस व्यक्ति ने मेरी ओर रुख़ किया ।

''मियां जी ! आप लोगों की हर बात बड़ी अच्छा है, लेकिन यह बात बहुत ख़राब है कि आप लोग गोश्त खाते हैं ।''

मेरा स्वभाव है कि मैं किसी अपरिचित आदमी से इस तरह की बातचीत नहीं करता, क्योंकि जब तक सामने वाले व्यक्ति के बारे में जानकारी न हो उस समय तक किसी गंभीर विषय पर बातचीत करना अच्छा नहीं जान पड़ता । उस व्यंग्य और टिप्पणी पर मैं चुप ही रहा । बस थोड़ा आगे बढ़ी तो उन सज्जन ने फिर अपनी बात दुहराई–

''मियां जी ! आप लोग गोश्त खाते हैं और जीव हत्या करते हैं, यह बहुत बुरी बात है ।''

मैंने उन्हें चुप करने के लिए सिर्फ़ यह जवाब दिया, ''जनाब ! मांसाहार और जीव हत्या तो हमारे यहां होती ही रही है । हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) और ऋषियों-मुनियों से यह परंपरा चली आ रही है । राजा दशरथ ने शिकार खेलते हुए ही श्रवण कुमार को हिरन समझ कर मार डाला था । रामचन्द्र जी सीता जी की इच्छा पर हिरन का शिकार करने गये और उनकी अनुपस्थिति में रावण ने सीता जी का अपहरण कर लिया । यज्ञ और अन्य धार्मिक उत्सवों में हमारे महापुरुष जानवरों की भेंट चढ़ाते और जीव हत्या करते रहे हैं । रामायण, वेद और अन्य धार्मिक किताबें इसका प्रमाण हैं ।''

मेरी बात सुनकर वह सज्जन चुप हो गये । लेकिन थोड़ी देर बाद बोले, ''आप पढ़े-लिखे आदमी मालूम होते हैं और आपको हमारे धर्म के बारे में भी अच्छी-खासी जानकारियां हैं ।''

मैंने कहा कि ''हमें एक-दूसरे के बारे में जानकारी होनी ही चाहिए । अगर मेरी जानकारी ग़लत हो तो आप कृपया बतलाइए ?'' वे सज्जन फिर चुप हो गये । लेकिन कुछ मिनट के बाद फिर बोले, ''अच्छा मियां जी ! ज़रा यह बताइए कि आप लोग जानवर के गले पर छुरी चलाते हैं और उसका गोश्त खाते हैं, अगर यही व्यवहार आपके साथ किया

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1400 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Free education is given to poor students of the locality after school time.
- Our immediate needs are—Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

(Prof. Z. H. Khan) Chairman

(Prof. M. B. Zaman) Secretary

SHATABDI PUBLIC SCHOOL

Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

जाए तो आपको कैसा महसूस होगा ?''

मैं इस तरह की बातचीत से जितना बच रहा था, वह आदमी मुझे उतना ही उलझा रहा था । अत: मैंने उचित समझा कि उनसे इस विषय पर खुलकर बातचीत कर ही ली जाए । मैंने कहा कि पहले आप अपना परिचय तो कराएं । उन्होंने बताया कि वे शर्मा जी हैं और खेतीबाड़ी करते हैं । मुरादनगर (यू०पी०) के पास एक देहात के रहने वाले हैं ।

मैंने उनसे मालूम किया कि शर्मा जी ! आप काश्तकार हैं तो आपके पास ट्रैक्टर तो होगी ही ? कहने लगे, नहीं साहब नहीं, मैं तो एक छोटा-सा किसान हूं दो बैल रखकर उन्हीं से खेती करता हूं और अन्य काम लेता हूं ।

मैंने तुरंत आश्चर्यचकित मुद्रा में उनसे पूछा–''शर्मा जी आप बैलों को हल में जोतते हैं । यह तो आप बड़ा जुल्म करते हैं ! सोचिए तो सही कितना बड़ा जुल्म है यह बैलों पर ! ज़रा बताएं कि अगर बैलों की जगह पर हल में हमें जोता जाए तो कैसा महसूस होगा ? मेरा तर्क सुनकर शर्मा जी निरुत्तर हो गये और उन्होंने ख़ामोशी ग्रहण कर ली । मैंने मौन को तोड़ते हुए उनसे दूसरा प्रश्न किया कि आपके पास यह जो डिब्बा है इसमें क्या है ?

दरअस्ल मैंने भांप लिया था कि शर्मा जी के पास जो डिब्बा है उसमें कीड़े मारने का तेल (दवा) है–शर्मा जी बोले, ''आजकल फ़सल में कीड़े बहुत लग रहे हैं, जिससे फ़सल की सुरक्षा हो सके ।''

मैंने फ़ौरन कहा, ''नहीं...नहीं शर्मा जी ! आप ऐसा हरगिज़ न करें । यह तो बड़ा जुल्म होगा । बड़ा अत्याचार होगा ! आप कीड़ों की हत्या करेंगे, क्या कीड़े जीव नहीं हैं ? ज़रा बताइए शर्मा जी ! अगर यह ज़हर मिला तेल हमें पिलाया जाए तो हम कैसा महसूस करेंगे ?''

मेरी बात सुनकर शर्मा जी ख़ामोश हो गये और मैंने महसूस किया कि शायद वे अपनी ग़लती महसूस कर रहे हैं । अत: मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए मैंने फिर अर्ज़ किया कि जनाब, मेरी कोई बात ग़लत हो तो बताइए, मैंने तो आप ही के उसूल के मुताबिक़ बातें कही हैं ।

शर्मा जी कुछ सोचने लगे और फिर बोले, ''बात तो आपकी सही मालूम होती है ।'' मैंने कहा, ''हम बहुत-सी बातें कहते हैं और उन्हें दुहराते हैं, लेकिन कभी ग़ौर नहीं करते कि हम क्या कह रहे हैं । बेसोचे-समझे ऐसी बातें करना एक आम आदम हो गयी है । यह वास्तविकता है और इस पर हम सब अमल भी कर रहे हैं कि इन्सानी ज़िन्दगी और मानव हितों के लिए दुनिया की हर वस्तुएं इस्तेमाल की जा सकती हैं । जानवरों को भी इन्सान की सेवा के लिए पैदा किया गया है । अत: इन्सान हमेशा से उनकी खालों, बालों, हड्डियों तथा दूध और गोश्त आदि से फ़ायदा उठाता रहा है और आज भी उठा रहा है ।

मैंने शर्मा जी से उनका पता लिया ताकि संपर्क किया जा सके और उन्हें इस्लामी साहित्य भेजने की पेशकश की और उन्होंने ख़ुशी से पुस्तकें पढ़ने का वादा किया ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic Understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15,000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov-March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your Cheque/Draft in favour of the society

(Nayyarruzzama)
Chairman

(Prof. Inamul Huque)
Secretary

J I S S S

Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

इस्लाम ही मौलिक धर्म

❖ मालिक राम

क़ुरआन पाक में जिन्नों और इन्सानों को पैदा करने और उनकी ज़िन्दगी का उद्देश्य यह बताया गया है कि वे अल्लाह तआला के नेक और इबादत करने वाले बन्दे बनें ।

जब सृष्टि की रचना का कारण और उद्देश्य ही यह हो तो यह कैसे सोचा जा सकता है कि अल्लाह तआला ने बंदों के लिए एक लक्ष्य तय कर दिया और उस तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं बताया और कोई उस रास्ते को बताने वाला पैदा नहीं किया । इन्हीं दोनों सन्देहों को इस तरह दूर किया । (भाव) "हम तक पहुंचने का रास्ता इस्लाम कहलाता है ।"

मुसलमान वे हैं जो अनदेखे अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उसकी इबादत करते हैं । अपनी मानसिक, नैतिक, आत्मिक तथा अन्य दूसरी क्षमताओं को, जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया है, उसकी और उसके बन्दों के रास्ते में ख़र्च करते हैं । केवल यही नहीं, उनका यह भी ईमान है कि आरंभ से ही अल्लाह ने बन्दों की हिदायत के लिए नबी भेजे और उन पर वह्य (प्रकाशना) उतारी । इसलिए वे (मुसलमान) सभी पिछले नबियों और उन पर अवतरित की गयी वह्यों को भी मानते हैं । उन्हें इसका भी विश्वास है कि हम इस जीवन में जिन अच्छे-बुरे कर्मों को कर रहे हैं, एक न एक दिन उनका फल और दंड भी ज़रूर मिलेगा । यही शिक्षा आरंभ से इन्सानों की तरफ़ आती रही है और यही वह रास्ता है जो लक्ष्य तक पहुंचाने वाला है और इसी का नाम इस्लाम है ।

फिर केवल रास्ता ही नहीं बताया बल्कि ऐसे लोग भी पैदा किये जो इस रास्ते के प्रत्येक घुमाव और चक्कर से अवगत थे । वह यह जानते थे कि लक्ष्य तक पहुंचने से पहले कहां-कहां कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और उनसे बचने के उपाय क्या-क्या हैं ? क़ुरआन मजीद के अनुसार सीधा रास्ता दिखाने वाले ये हादी (हिदायत करने वाले) प्रत्येक क़ौम में पैदा हुए ।

उन्होंने लोगों को शिक्षाएं दीं और बताया कि नेकी क्या है और बुराई क्या है ? नेकी पर चलने और बुराई से बचने की हिदायत दी । यही लोग अल्लाह के नबी और रसूल थे, जो उसकी वह्य और इल्हाम (वह्य के द्वारा मिलने वाला ज्ञान) की रोशनी में विभिन्न क़ौमों की रहनुमाई करते रहे ।

प्रत्येक नबी अपनी क़ौम में सबसे पहले अपने नुबूवत की सच्चाई और अल्लाह की हिदायत के हक़ (सत्य) होने पर ईमान लाता है । दूसरे शब्दों में वह सबसे पहले

इस तरह अल्लाह की हिदायत सभी क़ौमों के लिए आयी है और उसका माध्यम नबी (अलैहि०) बने । जब हिदायत का स्रोत भी एक है और हिदायत का माध्यम भी एक है, तो यह ज़रूरी है कि उसके नतीजे में आने वाली हिदायत (या दीन) भी एक ही होती और दुनिया कभी गुमराह न होती । लेकिन हम देखते हैं कि इसके बावजूद क़ौमें सीधे रास्ते से भटक गयीं । उन्होंने तरह-तरह के माबूद (पूज्य) गढ़ लिये और उनकी पूजा की जाने लगी । उन माबूदों की अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग सूरतें बन गयीं । उदाहरणस्वरूप भारत और बाबुल (प्राचीन इराक़) में ये सूरज, चांद, सितारे और दूसरे आकाशीय नक्षत्र थे, बल्कि उनसे भी आगे बढ़कर हर प्रकार के देवी-देवताओं को गढ़ लिया गया था ।

''मुस्लिम'' होता है । मानो वह एक नमूना है । इस्लाम, इस्लामी शिक्षा और उस पर अमल करने का । दूसरे लोग उसके रास्ते पर चलते हैं, यही उनके अनुयायी या 'उम्मत' कहलाते हैं ।

अब स्पष्ट है कि इस्लाम, मुस्लिम, नबी, रसूल, वह्य आदि अरबी भाषा के शब्द हैं और हर जगह उन शब्दों के लिए यही इस्तलाहें (शब्दावली) जारी नहीं रही होंगी । किसी न किसी चरण में दुनिया में विभिन्न भाषाओं का चलन रहा है । जिस देश या क़ौम में कोई नबी आया, उस पर अवतरित होने वाली वह्य भी उस क़ौम की भाषा में ही रही होगी ताकि वह आम लोगों को सीधा रास्ता दिखा सके ।

इससे पता चलता है कि यह 'वह्य' केवल अरबी में नहीं हो सकती । इससे तो नबी के आने का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है क्योंकि उस स्थिति में उसकी बात किसी के समझ में ही न आती । यदि शिष्य गुरु की बात ही न समझ सके तो वह शिक्षा कहां से प्राप्त करेगा । कहने का तात्पर्य यह है कि हालांकि नबी विभिन्न क़ौमों में आये और उनके वह्य की भाषा भी अलग-अलग थी, लेकिन उनका उद्देश्य एक-सा था ।

इस तरह अल्लाह की हिदायत सभी क़ौमों के लिए आयी है और उसका माध्यम नबी (अलैहि०) बने । जब हिदायत का स्रोत भी एक है और हिदायत का माध्यम भी एक है, तो यह ज़रूरी है कि उसके नतीजे में आने वाली हिदायत (या दीन) भी एक ही होती और दुनिया कभी गुमराह न होती । लेकिन हम देखते हैं कि इसके बावजूद क़ौमें सीधे रास्ते से भटक गयीं । उन्होंने तरह-तरह के माबूद (पूज्य) गढ़ लिए और उनकी पूजा की जाने लगी । उन माबूदों की अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग सूरतें बन गयीं । उदाहरणस्वरूप भारत और बाबुल (प्राचीन इराक़) में ये सूरज, चांद सितारे और दूसरे आकाशीय नक्षत्र थे, बल्कि उनसे भी आगे बढ़कर हर प्रकार के देवी-देवताओं को गढ़ लिया गया था, ज़मीन, पानी, आग, वर्षा, बिजली-गरज हर चीज़ की कोई न कोई देवी थी या देवता । उनकी मूर्तियां बना ली गयीं और उनके लिए विशेष मंदिरों का निर्माण हुआ, जहां उनकी पूजा होती थी और उन्हें खुश रखने के लिए चढ़ावे चढ़ाये जाते । चीन और ज़ापान में मरे हुए बुज़ुर्गों की पूजा होती थी और दूसरी जगहों पर भी यही हाल था ।

इस सिलसिले में सबसे अधिक अफ़सोसनाक बात यह है कि बहुत-सी क़ौमों ने उन नबियों को ही माबूद पूज्य का दर्जा दे दिया, जो उन्हें अपने रब (प्रभु) और ख़ालिक़ (स्रष्टा) की तरफ़ बुलाने आये थे । अपने पद के लिहाज़ से उनके मिसाली जीवन में तो संदेह हो ही नहीं सकता । उन पर अल्लाह की विशेष कृपा होती है । वे गुनाहों से पाक होते हैं । बस यही बात उनके अनुयायियों के समझ में नहीं आयी । उन्होंने यह सोचा कि ये लोग हमारी तरह गोश्त-पोस्त के मामूली इन्सान नहीं हो सकते, अन्यथा उनमें भी वही कमज़ोरियां होतीं जो हम में हैं ।

इन्सानी ज़िन्दगी का उद्देश्य यह है कि वह अल्लाह तआला की इबादत करे और इबादत के नतीजे में होना यह चाहिए कि जहां तक हो सके इन्सान अपने आपको अल्लाह की विशेषताओं का मज़हर (प्रदर्शक) बनाए । हम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने माहौल में रहने पर मजबूर है । और अलग-अलग समयों में हर माहौल की मांगें भी अलग-अलग होंगी । जो व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति की प्रतिक्रिया में किसी ख़ुदाई विशेषता का सबसे अधिक प्रदर्शन करता है, वह उतना ही अपने जीवन-उद्देश्य में सफल समझा जाएगा ।

नबियों से अधिक और कौन अपनी कथनी और करनी पर पूरा उतरेगा । बस जब उन्होंने हर एक अवसर पर आम मानव स्तर से ऊपर उठकर बातें की और उस पर अमल करके भी दिखाया तो ज़ाहिर देखने वाली आंखों ने यह तो न देखा कि यह असाधारण काम अल्लाह की सहायता का प्रमाण है, बल्कि उससे यह ग़लत नतीजा निकला कि यह व्यक्ति हम में से नहीं है और इन्सान के रूप में ख़ुदा ने जन्म लिया है । कुछ ने अल्लाह का बेटा या बेटी बना दिया । यह चलन किसी एक क़ौम या मुल्क तक सीमित नहीं रहा, बल्कि दुनिया की अधिकांश क़ौमें इस गुमराही का शिकार हुई कि उन्होंने किसी न किसी तरह अपने नबियों को उनके अस्ल मक़ाम से अधिक ऊंचा बना दिया और उन्हें ख़ुदाई विशेषता में बराबर का भागीदार बना दिया । जैसे भारत में अवतार या देवता, हज़रत मसीह (अलैहि०) को ख़ुदा का बेटा बना दिया, वह भी इकलौता ।

अर्थात यह स्थिति इतनी बार पेश आ चुकी थी कि भविष्य में भी उसे दोहराये जाने का विश्वास किया जा सकता था । इसलिए ज़रूरत इस बात की थी इस आशंका को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाता । अतएव इस्लाम

ने अपने कलिमा में इस चीज़ को रोका ।

विरोधी एतिराज़ करते हैं कि स्वयं इस्लामी कलिमा में शिर्क है । एक साहब लिखते हैं ।

''जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) दुनिया में थे तो उनका आदर सत्कार हमारा फ़र्ज़ था । लेकिन आज मुसलमानों ने अपने कलिमे के अन्दर मुहम्मद (सल्ल॰) को भी शामिल कर रखा है । जब हम यह कहते हैं कि अल्लाह के सिवाय हमारा कोई माबूद नहीं, तो अल्लाह हाज़िर व नाज़िर है, वह हमारी बात सुनता है । लेकिन जब हम कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल॰) हमारे रसूल हैं और इस वाक्य को अल्लाह के कलिमे के साथ मिला देते हैं, तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) हमारी बात सुनते नहीं । अल्लाह की कल्पना के साथ मुहम्मद (सल्ल॰) की कल्पना उसी समय हमारे सामने आ जाती है तो फिर तौहीद कहां रही ?''

मसाबीहुल इस्लाम, गंगा प्रसाद उपाध्याय, पृ॰ 277)

यह एतिराज़ बहुत से लोगों ने किया है, शब्द बदलते रहते हैं, लेकिन भाव सबका यही है कि कलिमे में रसूल (सल्ल॰) का नाम शामिल करना तौहीद के ख़िलाफ़ है और एक तरह का शिर्क है । मगर सच्चाई यह है कि इस एतिराज़ की बुनियाद ही ग़लत है और सोच की कमी का नतीजा है । कलिमा ख़ुदा या उसके रसूल (सल्ल॰) को सुनाने के लिए नहीं पढ़ा जाता बल्कि यह तो अपने ईमान का ऐलान है । कलिमा इबादत का हिस्सा नहीं, बल्कि यह तो पढ़ने वाले की निष्ठापूर्व श्रद्धा और उससे ताल्लुक़ की गवाही है । जब कोई आदमी ''ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' कहता है तो वह इस बात की शहादत देता है कि मैं आज से ख़ुदा के सिवा किसी और माबूद की इबादत नहीं करूंगा, यहां तक कि मुहम्मद (सल्ल॰) की भी नहीं, क्योंकि वह भी उसके केवल रसूल (संदेशवाहक) हैं न कि माबूद ।

यह तो तौहीद पर ईमान और यक़ीन का ऐलान है । इसमें शिर्क कहां से आ गया और इसकी ज़रूरत जैसा कि ऊपर बयान हुआ, इसलिए पेश आयी कि बीते हुए काल में अनेकों बार ऐसा कड़ुआ तजुर्बा हो चुका था कि उम्मतों ने समय के साथ-साथ अपने नबियों को ही माबूद बना लिया था ।

अत: इंस्लामी कलिमे का उद्देश्य यह था कि कहीं मुसलमान भी पिछली उम्मतों की भांति अपने नबी (सल्ल॰) को माबूद न बना लें । यह मानो ख़ालिस तौहीद का ऐलान है । इसको पढ़ने वाला यह निश्चय करता है कि आज से मैं किसी ग़ैर-अल्लाह की इबादत नहीं करूंगा ।

अपने घर को
इस्लाम के प्रकाश से रोशन कीजिए
स्वयं पढ़िए, अपने प्रियजनों, संबंधियों
और अन्य लोगों को भी पढ़ाइए

हिन्दी भाषियों का मासिक पत्र
कान्ति
www.kanti.in
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 220/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

दावत
دعوت
www.dawatonline.com
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 600/-
आजीवन : Rs. 10,000/-

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 250/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

सहयोग राशि
वार्षिक
स्वदेश में
: Rs. 220/-
विदेशों में
30 अमेरिकी
डॉलर
आजीवन
: Rs. 5,000/-

ماہنامہ زندگی نو
www.zindgienau.com

मांगे जाने पर नमूने की प्रति निशुल्क भेजी जाएगी।

MANAGER, DAWAT TRUST,
D-314, DAWAT NAGAR, ABUL FAZL ENCLAVE,
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025,
TEL.: Dawat: 09818799113, Kanti: 09818799223,
E-mail: dawattrust@yahoo.co.in

خطبات

مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ

موجودہ عہد کے لسانی وفکری مزاج کو سامنے رکھتے ہوئے اسلام کے بنیادی ارکان کی اہمیت وضرورت پر دل نشیں اور آسان انداز میں یقین آفریں کتاب۔

اردو

اول	[حقیقتِ ایمان]		16.00
دوم	[حقیقتِ اسلام]		16.00
سوم	[حقیقتِ صوم وصلوٰۃ]		22.00
چہارم	[حقیقتِ زکوٰۃ]		18.00
پنجم	[حقیقتِ حج و جہاد]		24.00
خطبات مکمل		100.00 [PB]	125.00 [HB]

ہندی

اول	[ایمان کی حقیقت]	19.00
دوم	[اسلام کی حقیقت]	18.00
سوم	[نماز، روزہ کی حقیقت]	23.00
چہارم	[زکوٰۃ کی حقیقت]	18.00
پنجم	[حج کی حقیقت]	17.00
خطبات مکمل		95.00

انگریزی

Fundamentals of Islam - I	28.00
Fundamentals of Islam - II	30.00
Fundamentals of Islam - III	28.00
Fundamentals of Islam - IV	26.00
Fundamentals of Islam - V	30.00
Fundamentals of Islam	130.00 PB 160.00HB

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS NEW DELHI ★ مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز ★

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858

E-mail: mmipublishers@gmail.com • **Website:** www.mmipublishers.net

राशियों का मकड़जाल

❖ डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात
(एम॰ए॰, पी-एच॰डी॰)

वैसे तो प्रतिदिन अनेक समाचार पत्रों में और टी॰वी॰ वु कई चैनलों पर राशिफल प्रकाशित व प्रसारित होती है; परन्तु ग्रहण के दिनों यह प्रचार उन्माद की तरह तीव्रतम हो जाता है । हर राशि का नाम लेकर लोगों को ग्रहण के कथित दुष्प्रभाव से भयभीत किया जाता है और उससे बचने के लिए उन्हें तरह-तरह के ऐसे उपाय बताये जाते हैं, जिनसे राशिफल बताने वालों की जेबें धन से भरें व लोगों के दिमाग़ों में अंधविश्वास का अंधेरा और ज़्यादा गहरा हो ।

इस वर्ष चार आंशिक सूर्य ग्रहणों का योग है—तीन लग चुके हैं और एक नवम्बर में लगेगा । इसी बात पर छाती पीटी जा रही है कि दुनिया पर बहुत बड़ी विपत्ति आ गयी है कि इस वर्ष चार सूर्य ग्रहण लगने हैं ।

सूर्य ग्रहण क्या है ?

यह एक प्राकृतिक घटना है । जब घूमते-घूमते चांद सूर्य के आगे आ जाता है तो पृथ्वी पर उसका कुछ भाग ढक जाता है, जो ग्रहण कहलाता है । चांद क्योंकि सूर्य से छोटा है, अत: वह कथित पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय भी उसे पूरी तरह ढक नहीं सकता । यही कारण कि चांद के सूर्य को पूरी तरह ढकने के बाद भी सूर्य का एक चमकदार छल्ला बना रहता है । जैसे चांद के पृथ्वी और सूर्य के मध्य आने पर सूर्य ग्रहण लगता है, वैसे ही पृथ्वी के चांद और सूर्य के दरमियान आने पर चन्द्र ग्रहण लगता है । घूमते-घूमते ग्रहों, उपग्रहों का इस तरह की स्थिति में आ जाना स्वाभाविक और प्राकृतिक चीज़ है । इसमें न कुछ शुभ है, न अशुभ ।

वैज्ञानिकों ने आकाशीय पिंडों की गतिविधि का विश्लेषण करने के बाद बताया है कि एक सदी में 237 सूर्य ग्रहण हैं, जिनमें से लगभग एक चौथाई पूर्ण सूर्य ग्रहण होते हैं और शेष आंशिक, सामान्यत: हर तीन साल में दो पूर्ण सूर्य ग्रहण होते हैं । आंशिक सूर्य ग्रहण साल में ज़्यादा से ज़्यादा पांच बार लग सकता है । 1935 ई॰ में 5 सूर्य ग्रहण लगे थे । उससे कहीं प्रलय नहीं आयी थी, जो इस वर्ष चार सूर्य ग्रहणों को लेकर निहित स्वार्थी तत्व इतनी हायतौबा मचाकर लोगों को आतंकित कर रहे हैं ।

उर्दू के एक शायर ने कहा है : "कौन रोता है किसी के लिए, हर एक को अपनी ही बात पे रोना आया ।" यह लोगों को उनके भले के आतंकित करके उपाय नहीं बता रहे हैं, बल्कि उनकी कमाई को खुद ग्रहण करने के लिए ही तरह-तरह के पापड़ बेल रहे हैं ।

राशियां और ऋषि

ये कहते हैं कि हमारे त्रिकालदर्शी ऋषियों-मुनियों ने समाधि लगाकर प्रत्येक राशि पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव व सुप्रभाव का ज्ञान प्राप्त किया था ।

लोग ऋषियों के प्रति श्रद्धा के कारण इनकी बातों पर विश्वास कर लेते हैं और इनके मकड़जाल में फंसे रहते हैं पर सवाल उठता है कि हमारे किस ऋषि ने राशियों की बात किस ग्रंथ में की है ? वेदों में कहीं भी राशियों का उल्लेख नहीं है । इतना ही नहीं, वैदिक ज्योतिष के प्राचीन ग्रंथ 'वेरांग ज्योतिष', जिसे महर्षि लगध-कृत माना जाता है, में भी राशियों की चर्चा नहीं, उसमें सिर्फ़ 27 नक्षत्रों की सूची है । उसमें न ग्रहों का उल्लेख है, न 12 राशियों का और न सप्ताह के 7 वारों का । वेदों के बाद के साहित्य-महाभारत आदि में भी राशियों का कहीं उल्लेख नहीं ।

इसीलिए 'धर्मशास्त्र का इतिहास' में भारत रत्न डॉ॰ पांडुरंग वामन काणे ने लिखा है : ईसा से कई शताब्दियों पूर्व वैदिक और घरेलू कृत्यों के लिए केवल शुभ नक्षत्र का निर्धारण होता था, न कि किसी तिथि का । सप्ताह के दिनों का भी उल्लेख नहीं किया जाता था, राशियां भी वर्णित नहीं हैं और ग्रहों की ओर भी संकेत नहीं है । (उन) प्रारंभिक युगों में ऐसे कोई नियम नहीं बन पाये थे जिनसे ग्रहों का किसी नक्षत्र में प्रभाव जाना जा सके और न कुंडलियां ही बनती थीं, जिनमें ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों के घर आदि बने हों । महाभारत में कहीं भी ग्रहों की स्थितियों को उनकी

राशियों अथवा सप्ताह-दिनों (यथा, मंगल आदि) के संबंध में नहीं बताते (धर्मशास्त्र का इतिहास, चतुर्थ खंड, पृष्ठ 262 तथा 265)।

जब न वेदों में राशियां हैं, न 'वेरांग-ज्योतिष' में हैं और न महाभारत आदि में हैं, तब टी०वी० चैनलों पर चिल्लाने वाले भविष्यवक्ता किसी ऋषि की धौंस देते हैं ? क्या वे भोले-भाले और श्रद्धालु क़िस्म के लोगों के साथ विश्वासघात नहीं कर रहे हैं ? क्या उनके सहज विश्वासी होने का अनुचित लाभ नहीं उठा रहे हैं ? क्या भगवे वस्त्र पहनकर, माथे पर तिलक लगाकर और गले में रुद्राक्ष की माला लटका कर ऋषियों का नाम लेकर झूठ बोलना किसी भी तरह उचित ठहराया जा सकता है ? हमारी चुनौती है सब ज्योतिषाचार्यों को कि यदि वे झूठे नहीं हैं तो वेदों, वेदांत ज्योतिष, महाभारत आदि ग्रंथों में कहीं एक बार भी 12 राशियों का वर्णन दिखाएं, अन्यथा हिन्दू जनता की भावनाओं से खिलवाड़ करना बंद करें।

राशियां और म्लेच्छ

वराह मिहिर पांचवीं छठी शताब्दी में पहली बार राशियों का उल्लेख अपनी पुस्तक 'बृहज्जातक' में करता है और ध्यान देने की बात यह भी है कि वह उनके लिए संस्कृत के नामों का प्रयोग नहीं करता, यद्यपि पुस्तक वह संस्कृत में लिख रहा था। उसने राशियों के लिए क्रिय, ताबुरि, कौर्य्य, तौक्षिक आदि शब्दों का प्रयोग किया। ये शब्द यूनानी भाषा के हैं। वराह मिहिर द्वारा राशियों के लिए यूनानी शब्दों का संस्कृत की पुस्तक में इस्तेमाल करना यह बताता है कि तब तक मीन, मेष, कन्या आदि शब्द इन यूनानी शब्दों के लिए गढ़े नहीं गये थे, जिन्हें आज हिन्दू ज्योतिषी इस्तेमाल करते नहीं अघाते। इससे यही सिद्ध होता है कि राशियां यूनानियों की जूठन हैं और जो लोग इन्हें ऋषियों का ज्ञान बताते नहीं अघाते वे वस्तुतः यूनानियों के वमन को पान की तरह मुंह में डाले घूम रहे हैं!

'भारतीय ज्योतिष' के लेखक शंकर बालकृष्ण दीक्षित ने 1896 में लिखा था : 'मत्स्यौ घटी नुमिथुनं सगदं सवीणं' इत्यादि राशि लक्षण वराह ने दिये हैं। उनके आधारभूत दूसरे वचन यवनेश्वर और सत्य के ही दिये हैं, आर्षवचन (ऋषियों के वचन) नहीं, मेष आदि राशि संबंधी कथाएं पाश्चात्यों में मिलती हैं, वैसी हमारे पुराणों में नहीं मिलती। कदाचित् ये संज्ञाएं मूलतः हमारी नहीं हैं। (भारतीय ज्योतिष, मराठी से हिन्दी अनु० द्वितीय संस्करण 1963, पृष्ठ 667)

यहां श्री दीक्षित ने दो बहुत महत्वपूर्ण बातें कही हैं, जब उन्होंने कहा है कि वराह मिहिर ने जो राशियां लिखी हैं, उनके समर्थन में किसी ऋषि का वचन उद्धृत नहीं किया है; बल्कि यवनों के ही कथन उद्धृत किये हैं। दूसरी बात उन्होंने यह कही है कि मीन, मेष आदि की बाबत कहानियां हमारे पुराणों में नहीं मिलती। उनकी बाबत कहानियां पाश्चात्य देशों के साहित्य में ही मिलती हैं। श्री दीक्षित की ये टिप्पणियां भी यही प्रमाणित करती हैं कि न राशियों का सिद्धांत हमारा है और न उनके नाम ही हमारे हैं।

यवन और वराह मिहिर

जिस वराह मिहिर ने राशियों का पहली बार किसी प्राचीन संस्कृत ग्रंथ में वर्णन किया है, उसने उनके नाम तो यूनानी भाषा में दिये ही हैं, साथ ही यह स्पष्ट घोषणा की है कि यवन (=यूनानी लोग) म्लेच्छ हैं, परन्तु यह ज्योतिष शास्त्र उनके ही पास है—म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्। (बृहत्संहिता, 1/30)

वराह के इस कथन के समर्थन में जो वचन उद्धृत किया जाता है, उसमें भी यही कहा जाता है कि मय नामक दानव को सूर्य ने यह शास्त्र सिखाया था—यद् दानवेन्द्राय मयाय सूर्यः शास्त्रं ददौ सम्प्रणताय पूर्वम्।

(देखें, बृहत्संहिता, 1/30 की विमला-टीका)

वराह के समर्थक वचन में भी यह नहीं कहा गया कि सूर्य ने किसी ऋषि-मुनि को यह ज्ञान दिया था, बल्कि यही कहा गया है कि उसने एक दानव मय को यह ज्ञान दिया था। वराह खुद म्लेच्छ यूनानियों के पास इस शास्त्र के होने की घोषणा करता है। ऐसे में हमारे ऋषि-मुनि बीच में कहां से आ गये जिनका नाम निहित स्वार्थों व ढोंगी तत्व लेते रहते हैं ?

राशियों का फंदा

राशियों को एक फंदे की तरह इस्तेमाल किया जाता है। दुनिया भर के 6-7 अरब लोगों को 12 भागों में विभक्त करके, उनकी क़िस्मत को 12 तरह की बना दिया जाता है, जो सरासर मनमानापन है।

नाम राशि

राशियों को नाम राशि और जन्मराशि-इन दो भागों में विभक्त किया जाता है। नाम राशि नाम के पहले वर्ण के

आधार पर मानी जाती है । यह कितना बेहूदा और अवैज्ञानिक विभाजन है, इसका अंदाज़ा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि राम और रावण; कृष्ण और कंस; सीता और सूर्पनखा, गाय और गधा की एक ही नाम राशि है । यदि इन नाम राशियों में ज़रा भी सच्चाई होती तो रावण भी राम की तरह पूज्य होता; कंस भी कृष्ण की तरह पूजनीय होता; सूर्पनखा भी सीता की तरह पूज्य नारियों में गिनी जाती और गधे को भी वही सम्मान मिलता जो गाय को दिया जाता है ।

जन्म राशि

जन्म राशि भी नाम राशि की तरह ही तुक्केबाज़ी है । क्योंकि इसमें दुनिया भर के सब प्राणियों के जन्म 12 समयों में विभक्त किये गये हैं । समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में इन जन्म तिथियों के आधार पर साप्ताहिक और मासिक आधार पर भविष्यवाणियां छपती हैं, यथा, मार्च 21 से अप्रैल 20 तक जन्मे लोगों की मेष राशि है; अप्रैल 21 से मई 21 तक जन्मों की वृष राशि है, आदि ।

अब एक महीने में दुनिया भर में करोड़ों बच्चे जन्म लेते हैं । उन सबकी क़िस्मत उन सबका भविष्य एक-सा कैसे हो सकता है ? जिस समय एक इन्सान का बच्चा जन्मता है, उसी समय एक गाय और भैंस का बच्चा भी जन्म लेता है । क्या इन्सान के बच्चे और गाय-भैंस के बच्चों का भविष्य एक-सा होगा ?

राशियां ऐसी रस्सियां हैं जिनसे निहित स्वार्थी तत्व भोले-भाले लोगों की बुद्धि को फांसी देते हैं और उन्हें विवश मछलियों की तरह अपने जाल में फंसा कर लूटते हैं । इसीलिए पहली राशि मेष (भेड़) है । लोगों को भेड़ें बनाकर भेड़चाल जो लागू करनी होती है ।

सबके लिए समान

ग्रहों, ग्रहणों आदि का कोई प्रभाव नहीं होता, परन्तु ज्योतिषी दावा करते हैं कि उनका प्रभाव होता है । हमारा कहना है कि यदि पल भर के लिए यह मान भी लें कि उनका प्रभाव होता है तो वह सब पर एक-सा ही पड़ेगा । यदि धूप में दस लोग चल रहे हैं तो उनको एक-सी गर्मी महसूस होगी, ऐसा नहीं होगा कि जिसकी कुंडली में सूर्य अनुकूल है, उसे जून की दोपहरी में सड़क पर चलते ठंडक महसूस हो और जिसकी कुंडली में सूर्य प्रतिकूल हो, वह मूंगफली की तरह भुज जाए ।

सूर्य, चांद आदि जिन्हें हमारे 'सर्वज्ञ' ज्योतिषी ग्रह बताते नहीं शरमाते, ऐसे पिंड हैं जिन्हें न हमारा क, ख, ग समझ आता है, और न हमारे विश्वासों-अंधविश्वासों से कुछ लेना-देना है । ये प्राकृतिक पिंड हमारे विचारों से एकदम तटस्थ हैं, ये सब भी उसी तरह गति करते थे, जब सिंधु घाटी की सभ्यता विकसित हुई और तब भी जब वेदों के मंत्र रचे गये । ये तब भी उसी तरह गति करते थे, जब हिन्दुओं को राशियों के मकड़जाल का ज्ञान तक नहीं था और अब जब राशियों के नाम पर लोगों को मूंडा जा रहा है, वे तब भी उसी तरह तटस्थपूर्वक गति किये जा रहे हैं । वे न किसी का नाम जानकर उस पर कृपा या क्रोध करते हैं और न किसी की जन्म तिथि का प्रमाण पत्र देखकर । एक जुलाई, 2011 को जो सूर्य ग्रहण लगा वह केवल अंटार्कटिका और दक्षिणी अक्षांश में दिखना था, दुनिया में अंयत्र कहीं भी वह दिखायी न देना था और न दिखायी दिया ही, क्योंकि जब चन्द्रमा के केन्द्र की छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ पाती तब पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों में आंशिक सूर्य ग्रहण लगा करता है ।

अंटार्कटिका और दक्षिणी अक्षांश में केवल पेंगुइन व समुद्री पक्षी जिनके न नाम हैं, न जन्म तिथियां । अतः किसी की न नाम राशि है, न जन्म राशि । यदि सूर्य ग्रहण वास्तव ममें राशि देखकर असर करता है, तो एक जुलाई को सूर्य ने क्या किया होगा ? क्या वह माथा पीटकर नहीं रह गया होगा ! हमारे लबार ज्योतिषाचार्य इस बारे में ऐसे चुप हैं । मानो मुंह में जवाब ही न हो, परन्तु भारत में जहां इस ग्रहण को कुछ भी लेना देना नहीं है, वे एकदम मुखर हैं और एक से बढ़कर एक मिथ्या बात बोले जा रहे हैं, लबारपन पूरे यौवन पर है । हमारे ज्योतिषगदों की विडंबना तो देखिए कि जो बात प्राइमरी स्कूल का बच्चा भी जानता है, वह इन्हें मालूम नहीं है और जिस चीज़ का अस्तित्व नहीं उसके बारे में ये मुखर ही नहीं, पूरे लबार हैं । ग्रहों ग्रहणों आदि का किसी राशि पर कोई असर नहीं पड़ता, ऐसा कोई कथित असर है ही नहीं जो किसी पर पड़ सकता हो, परन्तु ये अनस्तित्व की ही दुहाई दिये जा रहे हैं, क्योंकि इससे लोग मुंडे जा सकते हैं, परंतु पृथ्वी को इनके ग्रंथ अचला (स्थिर, गतिहीन) ही बताये जा रहे हैं । भास्कराचार्य (1114 ई० से 1400 के मध्य कहीं) जैसा दिग्गज ज्योतिषी कहता है : धरती स्वभाव से ही अचला है, इसीलिए तो धरती को

अचला कहते हैं–भूरचला स्वभावत: (सिद्धांतशिरोमणि, गोलाध्याय, 5)

ज्योतिषगर्द धरती को अचला ही नहीं मानते, उसे ग्रहों में भी नहीं गिनते, क्योंकि त्रिकालदर्शियों को इस बात का ज्ञान ही नहीं था कि पृथ्वी भी ग्रह है । वे चांद को ग्रह रटे जा रहे हैं । जबकि बच्चे तक जानते हैं कि वह पृथ्वी का उपग्रह है । इसी तरह ज्योतिषी सूर्य को ग्रह बताते नहीं अघाते, जबकि वास्तविकता यह है कि सूर्य ग्रह नहीं है, बल्कि तारा है । जिस बच्चे को पहाड़े ही सही नहीं आते वह गुणा या जमा-घटा सही क्या खाक करेगा ? यही हाल ज्योतिषगर्दों का है । जब न उनके ग्रह सही हैं, न अन्य खगोलीय बातें सही हैं तब उनके कथित प्रभाव की गणना कैसे सही हो सकती है, यदि पल भर के लिए यह मान भी लें कि ग्रहों का कोई असर होता है ?

यदि वास्तव में इनका असर होता तो वह सब पर एक जैसा होता, जैसे बिजली का झटका सभी को एक जैसा लगता है, भले ही उनकी राशि कोई हो या उनके जन्म के समय के ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति कैसी भी हो ।

उपभोक्ता अदालत

ज्योतिषियों के दावों को उपभोक्ता अदालतों में ले जाना चाहिए, जब उनके दावे ग़लत सिद्ध हों, उन्हें ऐसे ही नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि जब वे फीस लेकर ग़लत भविष्यवाणी करते हैं, वे वस्तुत: उपभोक्ता से वैसी ही छल करते हैं जैसा कम तोलने या घटिया माल बेचने वाला या ज़्यादा मूल्य वसूलने वाला करता है, लोगों को जागृत होना होगा, ज्योतिषियों के ग्राहकों को भी जागना होगा ।

मौलिक कर्तव्य

संविधान में लिखित मौलिक कर्तव्यों (अनु॰ 51ए) को भी वर्तमान दंतहीनता से उबार कर दंतवान बनाना होगा, तभी संविधान की भावना से न्याय किया जा सकता है । जब तक समाज में अवैज्ञानिक विचारों को फैलाने वालों को नकेल डालने का प्रावधान नहीं होगा, मौलिक कर्तव्यों से संबंधित अनुच्छेद तब तक ऐसे ही निर्जीव पड़ा रहेगा और इसका होना न होने के बराबर ही बना रहेगा । भारत के प्रबुद्ध नागरिकों को वैद्यों, योग-सिखाऊ लोगों और ज्योतिषगर्दों के मामले में भी 'ग्राहक जागो' के नारे को व्यवहार में लाना होगा, तभी पाखंडों, ढ़ोंगों, छल-कपटों व झूठ के सौदागरों से बचाव संभव हो सकेगा । (सा॰ 'भीम पत्रिका')

उत्तराखंड बाढ़ पीड़ितों के लिए रिलीफ़ की अपील

16,17 जून 2013 को उत्तराखंड के रुद्रपुर, प्रयाग, चमोली और पौड़ी ज़िलों में वर्षा और बाढ़ के कारण बहुत बड़ी संख्या में लोगों की जानें गयी हैं । हज़ारों लोग मारे गये और लाखों बेघर हो गये । बहुत से गांवों और क़स्बों के नाम व निशान तक मिट गये ।

जमाअत इस्लामी हिन्द, हल्क़ा उत्तर प्रदेश पश्चिम और उत्तराखंड ने इस बीच हरिद्वार, जोली ग्रांट और ऋषिकेश में मेडिकल कैम्प लगाये जिनके माध्यम से सैकड़ों प्रभावितों को तुरंत मेडिकल एड दिया गया । अब हल्क़ा ने अपनी टीमों के ज़रिये प्रभावित क्षेत्रों का सर्वे कराकर प्रभावितों के पुनर्वास का काम शुरू कर दिया है ।

सर्वे से यह भी पता चला कि मुस्लिम व्यापारियों का भी बड़े पैमाने पर माली नुक़्सान हुआ है और वे चूंकि किराये पर दुकान लेकर चलाते थे इसलिए वे सरकारी सहायता से भी वंचित हैं । पहले चरण में हमने 20 लाख रुपये के बजट से काम शुरू कर दिया है ।

अह्ले ख़ैर लोगों से मदद की अपील है ।

–इनआमुल्लाह इस्लाही

(अमीर हल्क़ा पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड)

चेक या ड्राफ्ट पर लिखें :

JAMAT-E-ISLAMI HIND (U.P. WEST)

Account No. 66260021000001028

Punjab National Bank

IFSC CODE PUNB 0662600

खत व किताबत का पता :

Office Jamaat-e-Islami Hind (U.P. West)

Mini By-Pass Road, Pandit Nagla,

Moradabad-244001 (U.P.)

Mobile No. : 09557373217

E-mail : upwestjih@yahoo.in

इस्लामी बैंकिंग पर आर॰बी॰ आई॰ का सराहनीय क़दम

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

मुसलमानों की देश में इस्लामी बैंकिंग शुरू करने की बहुत पुरानी मांग को स्वीकार करते हुए केन्द्रीय रिज़र्व बैंक ने केरल में इस्लामी तर्ज़ की बैंकिंग शुरू करने को मंज़ूरी दे दी है । रिज़र्व बैंक के नये 23वें गवर्नर रघुराम राजन व्यक्तिगत रूप से वर्षों से इस्लामी बैंकिंग के पक्ष में रहे हैं । उनका मानना है कि यह बैंकिंग व्यवस्था भारत के लिए बहुत उपयोगी और कल्याणकारी है । इससे देश की बिगड़ती अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में मदद मिलेगी । केरल के वाणिज्य मंत्री पी॰के॰ कुन्हालीकुट्टी के मुताबिक़, रिज़र्व बैंक ने यह मंज़ूरी खाड़ी देशों द्वारा भारत की बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं में पूंजी निवेश के प्रति बढ़ती दिलचस्पी को देखते हुए दी है । अब केरल स्टेट इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कारपोरेशन (KSIDC) एक ब्याज मुक्त वित्तीय कंपनी भी चलाएगी, जिसका नाम केरामन फाइनेंशियल सर्विसेज़ लिमिटेड (CFSL) होगा । यह कंपनी पहले से ही कार्यरत है ।

इस कंपनी को अल-बरका फाइनेंशियल सर्विसेज़ की जगह लिया गया है । वाणिज्य मंत्री कुन्हालीकुट्टी और केरामन फाइनेंशियल सर्विसेज़ लिमिटेड के चेयरमैन पी॰ मुहम्मद अली ने कोच्ची में पत्रकारों और संवाददाताओं को बताया कि एक हज़ार करोड़ रुपये की अधिकृत पूंजी से इसे शुरू किया जायेगा, जिसे बढ़ाकर जल्द ही ढाई हज़ार करोड़ रुपये कर दिया जायेगा । इन्होंने बताया कि इस कंपनी को जल्द खाड़ी देशों से चालीस हज़ार करोड़ रुपये मिलने का अनुमान है, जिससे हमारी अर्थव्यवस्था यक़ीनन सुधरेगी । CFSL में KSIDC का 11 फ़ीसद हिस्सा होगा, जबकि 8 फ़ीसद हिस्सेदारी व्यक्तिगत शेअरधारकों की होगी ।

जनाब मुहम्मद अली ने बताया कि केरामन फाइनेंशियल सर्विसेज़ लिमिटेड को रिज़र्व बैंक, सेबी और वक़्फ़ बोर्ड की मंज़ूरी मिल चुकी है । CFSL के इस्लामी शरिआ पर आधारित कई उत्पाद होंगे, जो देश के सभी मुख्य शहरों और खाड़ी देशों में अगले महीने लांच किये जाएंगे । इस कंपनी के प्रबंध निदेशक ए॰पी॰एम॰ मुहम्मद हनीश के अनुसार, केरामन फंड के बैनर तले निवेश की वैकल्पिक स्कीमें भी शुरू की जाएंगी, जो मुख्य रूप से अभी केरल तक ही सीमित होंगी । ये सभी उत्पाद ब्याजमुक्त होने के साथ ही शराब, जुआ, तम्बाकू आदि समाज विरोधी और हानिकारक कारोबार या इससे जुड़ी अन्य चीज़ों से अनिवार्यत: मुक्त होंगे, क्योंकि इस्लाम इनकी अनुमति नहीं देता ।

रिज़र्व बैंक की मंज़ूरी का देश के कई मुस्लिम संस्थाओं, संगठनों और लब्ध-प्रतिष्ठ जनों ने स्वागत किया है । दुनिया के 75 देशों में इस्लामी बैंकिंग सेवा मौजूद है, जिनमें दस खरब डॉलर से अधिक का कारोबार हो रहा है । इस सेवा को अपनाने वाला भारत अब 76वां देश बन चुका है । इसलिए अब माना जा रहा है कि 2015 इस्लामी बैंकिंग का कारोबार बढ़कर 28 खरब डॉलर हो जाएगा । अदालत में मुक़दमे के चलते भारतीय रिज़र्व बैंक ने इस वर्ष के शुरू में अल-बरका को इस्लामी बैंकिंग शुरू करने की अनुमति देने से इन्कार कर दिया था । अत: अब नये नाम के साथ इसे शुरू करना ही उचित था ।

प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह ब्याजमुक्त बैंककारी के प्रशंसक रहे हैं । अभी कुछ ही समय पहले अपनी मलेशिया यात्रा के दौरान कहा था कि "इस व्यवस्था में मंदी को झेलने की क्षमता है । यह बाज़ार के दबावों को काफ़ी सहन कर सकती है । बैंकिंग के क्षेत्र में समय-समय पर प्रयोग करते रहना ज़रूरी है और मलेशिया की इस्लामिक बैंकिंग प्रणाली के सामयिक होने के कारण मैं आर॰बी॰आई॰ से

कहूंगा कि इस दिशा में गंभीरता से सोचे एवं इसका अध्ययन करे कि मलेशिया मौजूदा आर्थिक समस्याओं से कैसे निबट रहा है ?''

बहरहाल अब रिज़र्व बैंक ने यह ऐतिहासिक- सराहनीय क़दम उठा लिया है, जिसका सकारात्मक परिणाम आना यक़ीनी है । इस क़दम से देश की अर्थव्यस्था को ज़रूर मज़बूती मिलेगी ।

देश में इस्लामी बैंक अथवा इस्लामिक फ़ाइनेंस संस्थानों की स्थापना के प्रयास 2005 से ही शुरू हो गये थे जब रिज़र्व बैंक ने ''इस्लामी बैंक'' की उपयोगिता एवं मार्केट के बारे में पता करने के लिये, आनन्द सिन्हा की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया था । इसके बाद राजिन्दर सच्चर की अध्यक्षता में आयोग बनाया गया, जिसने निष्कर्ष निकाला कि भारत के 50 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम विभिन्न फाइनेंस योजनाओं एवं शेयर निवेश के बाज़ार से बाहर हैं, क्योंकि उनकी कुछ धार्मिक मान्यताएं हैं । इस्लामिक बैंक की स्थापना को शुरू में केरल के मलप्पुरम से शुरू करने की योजना थी, लेकिन डॉ॰ सुब्रह्मण्यम स्वामी ने केरल उच्च न्यायालय में याचिका दायर करके एवं विभिन्न अख़बारों में लेख लिखकर बताया कि ''इस्लामिक बैंक'' की अवधारणा न तो भारतीय रिज़र्व बैंक के मानदंडों पर खरा उतरता है, और न ही एक ''सेकुलर'' देश होने के नाते संविधान में फिट बैठता है, तब से इसे फ़िलहाल इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया गया था । केरल उच्च न्यायालय ने इस्लामी बैंक शुरू करने के केरल सरकार के फ़ैसले पर रोक लगा दी थी ।

इस्लामी वित्तीय व्यवस्था की उपयोगिता को देखते हुए एक जुलाई 2011 को मुंबई स्टाक एक्सचेंज ने शरीया-50 इंडेक्स शुरू किया था, जिसके बड़े ही अच्छे परिणाम सामने आये । ''तसीस'' (TAQWAA ADVISORY AND SHARIAH INVESTMENT SOLUTIONS (P) LTD.] की निगरानी में यह इंडेक्स लांच किया गया था । यह संस्था एवं इनका शरीयत बोर्ड यह तय करती है कि कौन-सी कंपनी, शरीअत के अनुसार ''हलाल'' है और कौन-सी ''हराम'' ? इस इंडेक्स में पचास कंपनियां शामिल की गयी हैं । इस्लामी शरीअत के लिहाज़ से शराब, सिगरेट, अस्त्र-शस्त्र बनाने वाली और ब्याज, जुआ, सट्टा का कारोबार करने वाली कंपनियों को इससे दूर रखा गया है ।

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

लिए सूर्य के हिसाब के बजाय चांद का हिसाब जिन महत्वपूर्ण हितों के कारण अपनाया है, उनमें से एक यह भी है कि उसके बन्दे समय की तमाम गर्दिशों में, हर प्रकार के हालात और परिस्थितियों में उसके आदेशों पर चलने के आदी हों, जैसे रमज़ान है तो वह कभी गर्मी में और कभी वरसात में और कभी सर्दियों में आता है और ईमान वाले इन सब वदले हुए हालात में रोज़े रखकर आज्ञापालन का प्रमाण भी देते हैं और सर्वोत्तम नैतिक प्रशिक्षण भी पाते हैं । इसी तरह हज भी चांद के हिसाब से अलग-अलग मौसमों में आता है और इन सब तरह के अच्छे और बुरे हालात में अल्लाह की प्रसन्नता के लिए यात्रा करके बन्दे अपने अल्लाह की आज़माइश में पूरे भी उतरते हैं और बन्दगी में दृढ़ता भी प्राप्त करते हैं । अब अगर कोई गिरोह अपनी यात्रा और अपने व्यापार और अपने मेलों-ठेलों की आसानी के लिए हज को किसी प्रिय मौसम में सदा के लिए तय कर दे, तो यह ऐसा ही है जैसे मुसलमान कोई सम्मेलन करके तय कर लें कि आगे से रमज़ान का महीना दिसम्बर या जनवरी के अनुसार कर दिया जाएगा । इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि बन्दों ने अपने अल्लाह के प्रति विद्रोह किया, स्वच्छन्द हो गये और उसके श्रेष्ठतम हितों की अपने घटिया स्वार्थों और इच्छाओं पर बलि चढ़ा दी । इन्हीं कारणों से अल्लाह ने इस आयत में 'नसी' को 'कुफ़्र में ज़्यादती' क़रार दिया है ।

यह बात भी ध्यान में रहे कि नसी निरस्त किये जाने का यह एलान सन् 09 हि॰ के हज के अवसर पर किया गया और अगले साल सन 10 हि॰ का हज ठीक उन तारीख़ों में हुआ जो चांद के हिसाब के अनुसार थी । इसके बाद से आज तक हज अपनी सही तारीख़ों में हो रहा है ।

38. यहां से वह व्याख्यान आरंभ होता है जो तबूक की तैयारी के समय में अवतरित हुआ था ।

पर्यावरण सुरक्षा और इस्लामी शिक्षाएं

■ इंजीनियर मुहम्मद सलीम

आज पूरी दुनिया इसके लिए चिंतित नज़र आती है कि पर्यावरण का संतुलन जो बिगड़ रहा है और प्राकृतिक संसाधनों का जिस तरह दुरुपयोग हो रहा है, उसे अगर रोका नहीं गया तो भविष्य में उसके घातक परिणाम सामने आएंगें । आइए ज़रा इस दृष्टि से विचार करें कि इस्लाम इस बारे में हमारा क्या मार्गदर्शन करता है ।

इस्लाम अल्लाह की ओर से सभी मनुष्यों के लिए चुनी गयी संपूर्ण जीवन व्यवस्था है । अल्लाह जो इस संसार का और इसमें मौजूद हर चीज़ का रचयिता और पालनहार है । उसने इस संसार को एक विशेष उद्देश्य से और न्याय एवं संतुलन के आधार पर रचना की है । हर चीज़ उतनी ही मात्रा में पैदा की जितनी उसकी ज़रूरत थी । न कोई चीज़ ज़रूरत से कम है और न कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ।

अल्लाह ने मानव जीवन के प्रत्येक विभाग के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन दिये हैं । ताकि इस संसार में, समाज में और मानव जीवन में न्याय स्थापित हो सके । संसार, समाज और जीवन में न्याय का स्थापित न रहना ही बिगाड़ है । न्याय जितना प्रभावित होगा, बिगाड़ उतना ही बढ़ता जाएगा । अल्लाह कहता है–

थल और जल में बिगाड़ पैदा हो गया है, लोगों के अपने हाथों की कमाई से...। (क़ुरआन, 30:41)

अर्थात मनुष्य के स्वार्थ और लालच के कारण समाज में भी बिगाड़ पैदा हो गया है और संसार में भी । अधिक से अधिक धन कमाने के लिए पेड़ों को काटना, जंगलों को उजाड़ देना, पहाड़ों पर मौजूद हरियाली को समाप्त कर देना, पहाड़ों को खोदना, आवश्यकता से अधिक पानी का इस्तेमाल करना और उसे बर्बाद करना पानी के प्राकृतिक रास्तों में रुकावटें डालना, उन प्राकृतिक संसाधनों पर, जिन पर सभी लोगों का बराबर अधिकार है, कुछ लोगों का सरकारों द्वारा क़ब्ज़ा कर लेना और दूसरों को उनसे वंचित कर देना । ये सब संतुलन को बिगाड़ने वाली चीज़ें हैं, इसका परिणाम हम अपनी आंखों से देख रहे हैं । भूजल का स्तर बहुत नीचे चला जाना वर्षा नहीं बहुत कम और कहीं बहुत अधिक होना, बाढ़ और भूकंप का प्रकोप और इनके साथ-साथ तरह-तरह की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का पैदा होना, इस बिगाड़ के विभिन्न रूप हैं ।

पानी के दुरुपयोग पर प्रतिबंध : पानी धरती पर मौजूद प्राकृतिक संसाधनों में बहुत महत्वपूर्ण है । इसी से मानव जीवन का आरंभ, पोषण, विकास, समृद्धि और अस्तित्व जुड़ा हुआ है । अल्लाह ने पानी को मानव आवश्यकताओं के अनुरूप बड़ी मात्रा में उतारा । हमारी धरती के दो तिहाई भाग पर समुद्र है, शेष एक तिहाई पर थल है, जिसके कुछ ही भाग में मानव जीवन है । इस महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन पर सारे मनुष्यों का समान अधिकार है । इसी लिए अल्लाह ने इसके सही इस्तेमाल का आदेश दिया क़ुरआन मजीद में कहा गया है–

खाओ पियो, मगर दुरुपयोग न करो, अर्थात बर्बाद न करो । (क़ुरआन, 7:31)

पानी की एक-एक बूंद अमानत है, जिसका हिसाब लिया जाएगा । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पानी का दुरुपयोग न करने का आदेश दिया है । आप (सल्ल०) ने कहा कि अगर तुम नदी के किनारे भी हो (यानी तुम्हारे पास बड़ी मात्रा में पानी मौजूद हो) तब भी ज़रूरत से ज़्यादा पानी ख़र्च नहीं करो । एक हदीस के अनुसार क़ियामत के दिन अल्लाह कुछ लोगों से बहुत नाराज़ होगा, उनसे बात भी नहीं करेगा । इनमें वह व्यक्ति भी होगा जिसने दूसरों का पानी रोका होगा ।

खाद्य सामग्री का दुरुपयोग न करने का आदेश

इस्लामी शिक्षाओं में खाने-पीने और ज़रूरत की दूसरी चीज़ों के दुरुपयोग को और उन्हें बर्बाद करने को बहुत नापसन्द किया गया है । क़ुरआन मजीद में कहा गया है–

फ़ज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है । (क़ुरआन, 17:27)

हदीसों में बताया गया है कि खाना उतना ही लिया जाए, जितना खाया जा सके । बर्तन में खाना न छोड़ें बल्कि बर्तन को अच्छी तरह साफ़ करके खाएं । आज शादी-विवाह और दूसरे आयोजनों में बहुत खाना बर्बाद होता है । इससे

पर्यावरण दूषित होता है, जबकि यह खाना बहुत से ग़रीब और ज़रूरतमंद लोगों की भूख मिटाने का साधन हो सकता है ।

आज की पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के समय में उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि पूंजीपतियों का धन बढ़ता रहे । लोगों को चाहे उन चीज़ों की ज़रूरत न हो, मगर हालात ऐसे बना दिये जाएं कि लोग उन्हें ख़रीदने पर मजबूर हों । आज उपभोग करके फेंक देने के कल्चर को बढ़ावा दिया जा रहा है । डिस्पोजेबल चीज़ों का चलन तेज़ी से बढ़ रहा है । इसमें कुछ सुविधा हो सकती है मगर इसका अस्ली कारण बाज़ारवाद को बढ़ावा देना है । विज्ञापनों और अन्य प्रोग्रामों के माध्यम से अनावश्यक चीज़ों को अत्यावश्यक बनाया जा रहा है, ताकि पूंजीपतियों का हित प्रभावित न हो इस्लाम इस तरह की सभी चीज़ों से रोकता है, इस्लाम विकास चाहता है, मगर ऐसा विकास जो आवश्यक और संतुलित हो और उससे वातावरण की पवित्रता प्रभावित न हो । इस यूज़ एंड थ्रो कल्चर से पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ रहा है और इसके कारण दूसरी समस्याएं भी जन्म ले रही हैं ।

वृक्षारोपण और बंजर क्षेत्र को सींचना : इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार यदि कोई व्यक्ति कोई ऐसा काम करे, जिससे लोगों को उसके मरने के बाद भी फ़ायदा मिलता रहे, तो मरने के बाद भी उसके कर्मपत्र में पुण्य लिखा जाता रहेगा । किसी ने अल्लाह से बदला मिलने के विश्वास के साथ यदि कोई नहर बनवायी, कुंआ खुदवाया, अस्पताल बनवाया, स्कूल बनवाया या इसी तरह का कोई और काम किया, जिससे लोगों को बाद तक लाभ पहुंचता रहे, तो मरने के बाद भी उसे इसका भला बदला मिलता रहेगा ।

इसी तरह पेड़ लगाना, उनकी रक्षा करना, निर्जन क्षेत्रों में ऐसी सुविधाएं पैदा करना, जिससे वे क्षेत्र बस जाएं, हरे-भरे हों, बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाना ये सारे काम ऐसे हैं, जिनका लाभ करने वालों को मरने के बाद भी मिलता रहेगा, इसलिए ऐसे कामों के लिए प्रेरित किया गया है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की एक हदीस के अनुसार मनुष्यों में सबसे बेहतर मनुष्य वह है, जिसके ज़रिये लोगों को फ़ायदा पहुंचे । ये सारी चीज़ें एक तरफ़ आम लोगों के लाभ की हैं तो दूसरी ओर पर्यावरण की सुरक्षा और पवित्रता का भी माध्यम हैं । युद्ध की हालत में भी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपनी सेना को यह निर्देश दिया था कि वे रास्ते में खेतों को नुक़सान न पहुंचाएं । बिना किसी सख़्त ज़रूरत के पेड़ों को न काटें । एक हदीस के अनुसार अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि कोई आदमी देखे कि क़ियामत आने वाली है और उस समय उसके हाथ में एक पेड़ की हरी शाखा हो तो वह उस शाखा को ज़मीन में रोप दे ।

स्वच्छता (पवित्रता) आधा ईमान है : सफ़ाई और पवित्रता जिसका सीधा संबंध लोगों के स्वास्थ्य से है और पर्यावरण की स्वच्छता और पवित्रता से भी, उसका इस्लाम में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । हदीस में सफ़ाई को आधा ईमान बताया गया है ।

बड़ी और घनी बस्ती के बजाय छोटी-छोटी बस्तियां बसाने का निर्देश : एक ओर निर्जन क्षेत्रों को बसाने और उनको विकसित करने को पुण्य कार्य बताया गया है तो दूसरी और बड़ी और घनी आबादियों को हतोत्साहित किया गया है और छोटी-छोटी आबादियां बसाने का निर्देश दिया गया है ।

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर (रज़ि०) ने आबादियों को योजनाबद्ध तरीक़े से विकसित करने की व्यवस्था की और उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि शहरों को बहुत बड़ा न होने दिया जाए । आबादी बढ़े तो छोटी-छोटी नयी बस्तियां बसायी जाएं और उनमें लोगों को सुविधाएं दी जाएं । छोटी बस्तियां व्यवस्था की दृष्टि से भी बेहतर होती हैं और पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से भी ।

आज हमारी सरकार की ग़लत नीतियों के कारण एक-एक नगर में करोड़ों की आबादी है और उसकी वजह से स्वास्थ्य की समस्याएं पैदा हो रही है, पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है । मनुष्यों की बुनियादी आवश्यकताएं भी पूरी नहीं हो पा रही हैं । अपराधों में वृद्धि हो रही है, क़ानून व्यवस्था की समस्या पैदा हो रही है और अन्य सामाजिक समस्याएं जन्म ले रही हैं ।

अगर इस्लाम की इन शिक्षाओं को अमल में लाया जाए और उनकी रोशनी में योजना बनायी जाए तो पर्यावरण को भी सुरक्षित रखा जा सकता है और विभिन्न समस्याओं से भी जनता की सुरक्षा की जा सकती है । हमारे देश की जनता को भी और सरकारों को भी इस पर विचार करने की ज़रूरत है ।

इस्लाम में नारी

इस्लाम के पूर्व नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय थी । पुरुष उस पर अत्याचार करने को अपना अधिकार समझता था । यहां तक कि अत्याचार को सहन करना नारी अपना कर्तव्य समझती थी । वह पति को अपना देवता समझती थी । वह अपने किसी भी अधिकार के प्रति जागरूक नहीं थी । अत: कन्या का जन्म लेना अशुभ माना जाता था । बच्ची के जन्म लेने पर उसे जीवित दफ़्न करना आम बात थी ।

"जब इनमें से किसी को बेटी के पैदा होने की शुभ-सूचना दी जाती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह बस ख़ून का-सा घूंट पीकर रह जाता है । लोगों से छिपता फिरता है कि इस बुरी ख़बर के बाद क्या किसी को मुंह दिखाये । सोचता है कि अपमानपूर्वक बेटी को लिए रहे या मिट्टी में दबा दे ।" (कुरआन, 16:58-59)

यहूदी व ईसाई धर्म के मतानुसार नारी पाप का कारण समझी जाती थी । भारतीय समाज में तो नारी की तुलना पशु से की जाती थी । रामचरित मानस में तुलसीदास ने कहा है–

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी
सकल ताड़ना के अधिकारी ।

(सुंदर कांड, 62:3)

नारी के लिए वेद का ज्ञान प्राप्त करना निषिद्ध था । विधवाओं का जीवन नारकीय था तथा इस कारण से नारी सती प्रथा के चंगुल में फंसी हुई थी जिसके अंतर्गत यदि किसी स्त्री का पति मर जाए तो उसकी पत्नी जीवित ही पति की चिता में कूद कर जान दे देती थी । नारी पूज एंड थ्रो सामान की तरह समझी जाती थी, जिसका जब चाहा इस्तेमाल किया और फिर फेंक दिया ।

ऐसी विकट परिस्थितियों में इस्लाम ने नारी के प्रति अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की । इस्लाम ने स्त्री व पुरुष दोनों को ईश्वर की सबसे अच्छी मख़लूक़ घोषित किया है । इस्लाम में न स्त्री पुरुष से श्रेष्ठ है, न पुरुष स्त्री से श्रेष्ठ है । कुछ क्षेत्रों में पुरुषों को स्त्रियों पर वरीयता प्राप्त है तो कुछ क्षेत्रों में स्त्रियों को पुरुषों पर वरीयता प्राप्त है । दोनों के अपने-अपने दायित्व हैं, दोनों के अपने-अपने कार्य क्षेत्र हैं । ईश्वर ने स्त्री-पुरुष दोनों को एक जान से पैदा किया है । अत: ईश्वर की दृष्टि में दोनों समान हैं ।

"लोगों, अपने रब से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत पुरुष और स्त्रियां दुनिया में फैला दिये ।"

(कुरआन, 4:1)

स्त्री व पुरुष दोनों को अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन कर समाज की गाड़ी को आगे बढ़ाना है एवं दोनों को ससम्मान जीने का हक़ है । स्त्रियों का सम्मान हर हाल में आवश्यक है । स्त्रियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करके इस्लाम ने नारी को मानसिक दासता से मुक्त किया है । स्त्री व पुरुष दोनों का अलग-अलग कार्य क्षेत्र है ।

घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति, धनोपार्जन, श्रम एवं परिश्रम के कार्यों हेतु अपनी प्राकृतिक संरचना एवं शक्ति को देखकर बाहर का दायित्व पुरुष को सौंपा गया है, जबकि बच्चों का लालन-पालन, घर संभालने व गृहस्थी के प्रबंधन की ज़िम्मेदारी स्त्री को उसकी प्रकृति व शारीरिक क्षमता के अनुरूप सौंपी गयी है ।

इस्लाम के अनुसार पुरुष जैसा कर्म करेंगे, उन्हें वैसा ही फल मिलेगा और स्त्रियां जैसा कर्म करेंगी उन्हें वैसा ही फल मिलेगा । यदि वे ईमान रखते होंगे तथा सत्कर्म करेंगे तो उन्हें जन्नत में दाख़िला मिलेगा । उनमें लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा । "जो कुछ पुरुषों ने कमाया है उसके अनुसार उनका हिस्सा है और जो कुछ स्त्रियों ने कमाया है उसके अनुसार उनका हिस्सा ।"

(कुरआन, 4:32)

"और जो सत्कर्म करेगा, चाहे पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि हो वह ईमान वाला, तो ऐसे ही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनका तनिक भी हक़ न मारा जाएगा ।"

(कुरआन, 4:124)

इस्लाम में स्त्रियों को परदा करने का आदेश दिया है,

क्योंकि इस्लामी वस्त्र पहन कर कोई भी स्त्री बुरे पुरुषों की बुरी नज़र से बच सकती है तथा इससे उसके शील की रक्षा होती है । जबकि इस्लाम से पूर्व स्त्रियां बेपरदा रहती थीं जिसे कि क़ुरआन ने जाहिलियत क़रार दिया है ।

"अपने घरों में टिक कर रहो और विगत अज्ञानकाल की-सी सज-धज न दिखाती फिरो ।" (क़ुरआन, 33:33)

"ऐ नबी अपनी पत्नियों और बेटियों और ईमान वालों की स्त्रियों से कह दो कि अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें । यह ज़्यादा उचित तरीक़ा है, ताकि वे पहचान ली जाएं और न सतायी जाएं ।"

(क़ुरआन, 33:59)

इस्लाम में स्त्रियों को ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार दिया गया था जबकि अज्ञानकाल अर्थात इस्लाम के आगमन के पूर्व में उन्हें यह अधिकार प्राप्त नहीं था ।

इस्लाम ने स्त्री को केवल सामाजिक व पारिवारिक अधिकार ही नहीं दिये बल्कि आर्थिक अधिकार भी दिये हैं । इस्लाम ने पैतृक व ससुराल की संपत्ति में स्त्री को भागीदार बनाया एवं उसे महर की संपत्ति की स्वामिनी घोषित किया । उसे निजी संपत्ति रखने का भी अधिकार दिया गया ।

इस्लाम में पत्नी के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी पति के कंधों पर रखी गयी है । इसके अलावा इस्लाम में स्त्री को अपनी मर्ज़ी से विवाह करने का अधिकार प्राप्त है । यही नहीं उसे संबंध-विच्छेद का अधिकार भी प्राप्त है तथा इसके साथ ही विधवा या परित्यक्ता स्त्री को पुनर्विवाह का अधिकार भी प्राप्त हैं ।

अब हम देखते हैं कि इस्लाम में नारी को क्या स्थान दिया गया है–

(1) बहन-बेटी के रूप में : अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया है–जिसने दो लड़कियों का पालन-पोषण किया यहां तक कि वे वयस्क हो गयीं तो क़यामत के दिन वह मुझ से इतना क़रीब होगा (यह कहते हुए आप सल्ल० ने अपनी दोनों उंगलियां मिलायीं)। (मुस्लिम)

(2) पत्नी के रूप में : "वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास ।"

(क़ुरआन, 2:187)

अर्थात पति-पत्नी एक-दूसरे के शील की रक्षा करते हैं ।

(3) मां के रूप में : एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आया और कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! लोगों में कौन सबसे ज़्यादा मेरे अच्छे व्यवहार का हक़दार है ? आपने कहा–तेरी मां । उसने कहा–फिर कौन ? आपने कहा–तेरी मां । उसने कहा–फिर कौन ? आपने कहा–तेरी मां । उसने कहा–फिर कौन ? आपने कहा–तेरा बाप । अल्लाह ने तुम पर माताओं के आदेशों की अवहेलना और उनका हक़ मारना हराम कर दिया है । (बुख़ारी)

इस्लाम में ईश्वर के निकट लिंग के आधार पर कोई श्रेष्ठ नहीं है, बल्कि अधिक ईशभय रखने वाला श्रेष्ठ है ।

"ईश्वर की दृष्टि में तुम लोगों में श्रेष्ठ वह है जो तुम में अधिक ईशभय रखने वाला है ।" (क़ुरआन, 49:13)

इस प्रकार इस्लाम स्त्रियों को सम्मान से जीने का अधिकार प्रदान करता है ।

● **अबरार अहमद**

(लाखेरी वाले)

माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हरगिज़ जमा नहीं हो सकते

मद्रासी

मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी०जी०)
फोन : 0771-2539516,2236788

मद्रासी होटल
शॉप नं० 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

शिकारी पेड़-पौधे

■ राजेन्द्र कुमार शुक्ला

संसार में कुछ ऐसे पेड़-पौधे भी पाये जाते हैं जिनकी खुराक जानवर और आदमियों का मांस और उनका ख़ून है । अफ़्रीक़ा, आस्ट्रेलिया और भारत देश के असम और बंगाल के कुछ भागों में भी इस प्रकार के विचित्र पेड़-पौधे पाये जाते हैं । विश्व के विभिन्न भागों में ये शिकारी पौधे पाये जाते हैं । गर्म इलाक़ों में ये पौधे आसानी से पनपते हैं । इसके अलावा दलदली जगहों में भी पाये जाते हैं । इन पेड़-पौधों, झाड़ियों की ऊंचाई 3 से 4 फुट तक होती है ।

ऐसे शिकारी पेड़-पौधों की अब तक लगभग 450 प्रजातियां पायी गयी हैं । इनके फूल रंगीन और ख़ूबसूरत होते हैं । कीड़े-मकोड़े इसके मनमोहक रंग और मीठे रस के लालच में इनकी खुराक बन जाते हैं । ये पौधे पानी की सतह के नीचे और दूसरे पेड़ों के नीचे ख़ासतौर पर उगते हैं । जिस ज़मीन में फास्फेट और नाइट्रेट के तूल तत्व अधिक होते हैं, वहां मांसाहारी पेड़-पौधे अधिक मात्रा में पाये जाते हैं ।

अफ़्रीक़ा के घने जंगल में कुछ ऐसे मांसभक्षी पेड़ पाये जाते हैं, जिनकी विविध शाखाओं के अगले भागों में बड़े-बड़े ढालनुमा फूल लगे होते हैं । इनकी शाखाओं में लगभग दो फुट तक लंबे-लंबे कांटे होते हैं । यदि कोई आदमी या जानवर भूल से इस पेड़ के पास से गुज़रता है तो यह अपनी ज़हरीली शाखाओं से उस प्राणी को घेर लेते हैं । उसके तेज़ कांटे शिकारी के पूरे शरीर में घुस जाते हैं । ये पेड़ उसका ख़ून चूसकर उसे मुर्दा बना देते हैं । ऐसे पेड़ों के नीचे आदमियों और जानवरों की हड्डियों के ढांचे का एक ढेर-सा लगा रहता है ।

ऐसा ही एक पौधा है फ्लेट्रेप । घरेलू मक्खियां अक्सर इसकी शिकार बनती हैं । फ्लेट्रेप के रंगीन और आकर्षक पौधे मक्खियों को अपने जाल में फंसा लेते हैं । ज्यों ही वे इनसे टकराती हैं, पौधे का जबड़ा तुरंत बंद हो जाता है और मक्खी क़ैद । इनमें न नसें होती हैं न रंग । अनेक वैज्ञानिकों ने बहुत शोधकार्य किये, किन्तु किसी को भी इस पौधे के बारे में ठीक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी ।

कुछ वैज्ञानिकों का विचार है कि इन पेड़ के पत्तों के बीच में गाढ़ा रस होता है, उसकी हरकत से ही यह प्रक्रिया होती है । फ्लेट्रेप के पत्ते तश्तरी के आधे आकार के बराबर होते हैं । ये पौधे अक्सर काई की सतह के नीचे छिपे रहते हैं । इसके पत्ते 45 इंच का कोण बनाये रहते हैं ताकि शिकार फ़ौरन गिरफ़्त में आ सकें ।

जावा में पाया जाने वाला टैगर फ्लांट नामक पौधा तो और भी भयानक और ख़तरनाक होता है । वह अपने शिकार पर एक पीड़ादायक तेज़ाब छिड़क कर उसे मार डालता है । जावा के लोगों का कहना है कि कोई भी प्राणी उस पेड़ के निकट जाने की हिम्मत नहीं कर पाता । उस पेड़ के ऊपर से उड़ने वाले पक्षी बेहोश होकर नीचे गिर जाते हैं । कहते हैं, इस पौधे से निरंतर एक ज़हरीली गैस निकलती रहती है, जो इस पेड़ के चारों ओर फैली रहती है ।

ब्राजील में मैन चिनील नामक एक पौधा पाया जाता है । इसके बारे में एक अजीब बात प्रचलित है । बसंत ऋतु में जब यह फूलता-फलता है, तब उसके नीचे ठहरने वाले मुसाफ़िर मर जाते हैं, कहते हैं कि इस पेड़ के फूलों के नीचे से एक प्रकार का विषयुक्त चूर्ण झड़ता है । इसलिए उसके नीचे रहने वालों की मृत्यु हो जाती है ।

समुद्र तट

भारत को समुद्र ने तीन ओर से घेर रखा है । किन्तु सभी राज्यों में सबसे अधिक समुद्र तट का विस्तार गुजरात राज्य का है । यहां का समुद्र तट 1074 किमी॰ लंबा है जो देश का सबसे लंबा समुद्र तट है । इसके तट पर विभिन्न बंदरगाह हैं और नमक उत्पादन में भी यह राज्य सबसे आगे है । यहां देश का 70 प्रतिशत नमक तैयार होता है ।

सितारों की बातें

ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है, वह हमेशा एक जैसा नहीं रहता । अंतरिक्ष में जगमगाने वाले तारे भी नहीं । एक दिन सबकी तरह उनका भी अंत होता है । हालांकि हम तारों को बदलते हुए नहीं देख सकते, क्योंकि उनकी उम्र लगभग अरबों वर्षों में होती है । क़रीब 5 अरब वर्षों से चमकता आ रहा सूर्य का अंत एक दिन ज़रूर होगा । क़रीब सूर्य के अंत के साथ ही हमारी पृथ्वी समेत सौरमंडल के सभी ग्रहों का भी अंत हो जाएगा । तारों को जन्म लेने में ही जिस तरह लाखों वर्ष लग जाते हैं, उसी तरह उनकी मौत भी धीरे-धीरे हज़ारों लाखों सालों में होती है, अचानक नहीं ।



किसी भी तारे की मौत तब होनी शुरू होती है जब ईंधन के रूप में उसका हाइड्रोजन पूरी तरह समाप्त हो जाता है । हाइड्रोजन ख़त्म होते ही जाड़ा धीरे-धीरे विराट आकार में फूलने लगता है । इसकी सतह धीरे-धीरे ठंडी होने लगती है और इसका रंग लाल होने लगता है । लाल रंग में बदला हुआ यह तारा लाल दानव या 'रेड जॉयंट' कहलाता है । ब्रह्माण्ड में ऐसे असंख्य तारे हैं जो मृत्यु की तरफ़ बढ़ते हुए लाल दानव के रूप में मौजूद हैं । पांच अरब वर्ष बाद हमारा सूर्य भी लाल दानव में बदल जाएगा और फूलते-फूलते वह बुध, शुक्र पृथ्वी और मंगल ग्रह को अपनी चपेट में ले लेगा । उसकी तेज़ गर्मी से महासागर सूख जाएंगे और जीवन का नामोनिशान मिट जाएगा ।

सूर्य जैसे तारे का जीवन चक्र जैसे-जैसे पूरा होने लगता है, उसमें अस्थिरता आने लगती है । फूल कर लाल दानव बनने के बाद ऐसा तारा एक समय अपनी गैसों के आवरण को फेंक देता है । इस आवरण को 'प्लेनेटरी नेबुला' कहा जाता है । इसके बाद यह अपने ही दबाव से लगातार सिकुड़ने लगता है और एक समय ऐसा आता है जब अत्यंत घना होकर यह पृथ्वी के आकार जितना रह जाता है । तब ऐसे तारों को श्वेत बटु या 'व्हाइट ड्वॉर्फ' कहा जाता है । श्वेत बटु के रूप में बदला यह तारा अपना प्रकाश बिखेरता है, लेकिन एक दिन उसका प्रकाश भी ख़त्म हो जाता है । इसके बाद जो बचता है, वह 'ब्लैक ड्वॉर्फ स्टार' कहलाता है ।

लेकिन कई तारे ऐसे भी हैं जिनका द्रव्यमान सूर्य से पांच गुना ज़्यादा होता है, उनकी मौत सूर्य जैसे तारों के कुछ अलग ही तरह से होती है । विशाल लाल दानव के रूप में पहुंचे इन तारों में सिकुड़ना और फैलना ज़्यादा होता है जिस कारण उनके केन्द्र का तापमान और घनत्व काफ़ी बढ़ जाता है । उनके भीतर की परमाणुअग्नि कार्बन, नाइट्रोजन और ऑक्सीज़न जैसे तत्वों को पैदा करती है । लोहे का फ्यूजन होने के बाद ऐसे तारे विस्फोटित हो जाते हैं । इन्हें 'सुपरनोवा' कहा जाता है । जब ये तारे फूटते हैं तब उनकी चमक अरबों सूर्यों से भी ज़्यादा होती है ।

तारे के इस तरह विस्फोटित होने की यह सुपरनोवा घटना भारी तत्वों–चांदी, सोना, यूरेसिनयम आदि को पैदा करती है । सुपरनोवा अंतरिक्ष में दूर-दूर तक पदार्थों को फेंक देता है जहां ये पदार्थ बाद में तारों और ग्रहों के निर्माण में योगदान देते हैं । सुपरनोवा के रूप में तारे की मौत अपने पीछे अत्यंत सघन अवशेष देती है जिसे 'न्यूट्रॉन स्टार' कहते हैं । सिर्फ़ 10 मील लंबा-चौड़ा एक न्यूट्रॉन इतना सघन होता है कि उसका द्रव्यमान सूर्य से भी ज़्यादा होता है ।

न्यूट्रॉन स्टार भी अपने भारी दबाव से सिकुड़ता-सिकुड़ता एक दिन मृत तारा बन जाता है जिसे 'ब्लैक होल' कहा जाता है । ब्लैक होल को देखा नहीं जा सकता, क्योंकि इसका गुरुत्वाकर्षण इतना ज़्यादा होता है कि प्रकाश भी उससे बाहर नहीं निकल सकता । वैज्ञानिक अप्रत्यक्ष रूप से ही इनका पता लगा पाते हैं ।

• दिनेश रावत

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली–6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْكَٰفِرُونَ لَآ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ
وَلَآ أَنتُمْ عَٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ وَلَآ أَنَا۠ عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ
وَلَآ أَنتُمْ عَٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِىَ دِينِ

कह दो :

"ऐ इन्कार करने वालो!
मैं वैसी बन्दगी नहीं करूंगा
जैसी बन्दगी तुम करते हो,
और न तुम वैसी बन्दगी करने वाले हो
जैसी बन्दगी मैं करता हूं।
और न मैं वैसी बन्दगी करने वाला हूं
जैसी बन्दगी तुमने की है।
और न तुम वैसी बन्दगी करने वाले हुए
जैसी बन्दगी मैं करता हूं।
तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है
और मेरे लिए मेरा धर्म!"

(क़ुरआन)

A WELL WISHER
GOA

Posted on 20-21 September 2013
October 2013
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.9.2013

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14



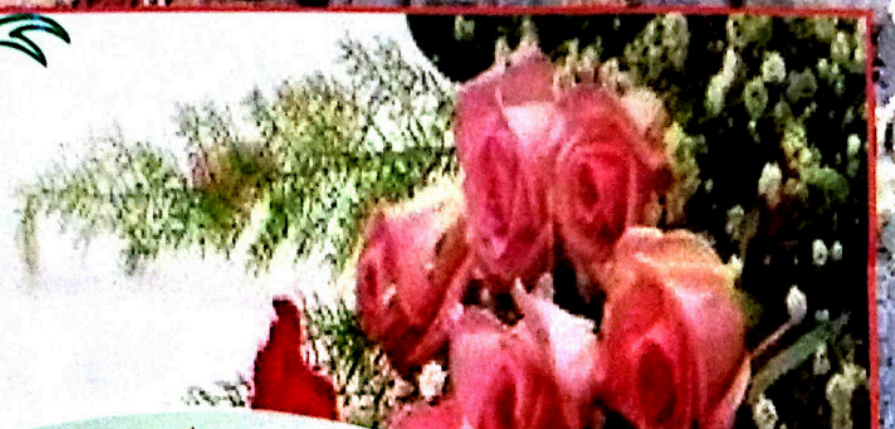

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ اللّٰهُ الصَّمَدُ
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

कहो : "वह अल्लाह यकता है, अल्लाह निरपेक्ष (और सर्वाधार) है, न वह जनिता है और न जन्य, और न कोई उसका समकक्ष है।"

(कुरआन)

A well Wisher
GOA